देश विदेश की लोक कथाऐं — शादी शर्तों पर ः

शादी शर्तों पर

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2020

Cover Title : Shadi Sharton Par (Marriage by Condition)
Cover Page picture: Louse
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmai,.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
शादी शर्तों पर 7
1 सीता की कहानी 9
2 द्रौपदी की कहानी 14
3 विद्युत्तमा 20
4 जॅू की खाल 28
5 जॅू की खाल का कोट 38
6 जमीन और पानी पर चलने वाली नाव 42
7 एक बेवकूफ और उड़ने वाला पानी का जहाज़ 54
8 स्पेन का राजा और अंग्रेज मीलौर्ड 73
9 राजकुमार और सेब 93
10 तीन अनारों से प्यार 101
11 राजकुमारी और सोने का पहाड़ 115
12 पहेलियों वाली राजकुमारी 140
13 होशियार राजकुमारी 156
14 जादुई मुर्गी 164
15 चूमने पर राजकुमारी की शादी 181
16 सीधा इवानुष्का 187

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और ऊलोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

शादी शर्तों पर

इससे पहले हम शादियों पर कई पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं जैसे हमने एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें या तो माता पिताओं ने अपनी बेटियों की शादियॉ अजीब लोगों से कर दी थीं या फिर लड़कियों ने खुद ने ही किसी अजीब लड़के से शादी कर ली थी।[1] एक और पुस्तक थी जिसमें कुछ ऐसी लोक कथाऐं थी जिनमें लड़की किसी से शादी ही करने को तैयार नहीं थी पर बाद में उसको फिर किसी अजीब आदमी से ही शादी करनी पड़ जाती है।[2]

बच्चों तुम सबने अपने भारत में भी कुछ ऐसी कहानियॉ तो पढ़ी सुनी होंगी जिनमें लड़की के माता पिता कोई शर्त रख देते हैं कि "जो कोई भी मेरी यह शर्त पूरी कर देगा मैं अपनी बेटी की शादी उसी से कर दूंगा।" या फिर लड़की खुद ही कोई शर्त रख देती है कि वह उसी आदमी से शादी करेगी जो उसकी वह शर्त पूरी कर देगा।

इस पुस्तक में हम भारत की ऐसी ही कुछ कहानियॉ और देश विदेश की लोक कथाऐं प्रकाशित कर रहे हैं जिनमें या तो लड़कियों के पिताओं ने अपनी बेटियों की शादी के लिये कोई शर्त रखी हैं कि जो कोई भी उस शर्त को पूरी कर देगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा। या फिर लड़की ने खुद ने ही कोई शर्त रखी है कि जो कोई उसकी वह शर्त पूरी कर देगा तो वह उससे शादी कर लेगी। वे सब शर्तें कैसी कैसी हैं कैसे कैसे पूरी हुईं यह देखने की बात हैं।

इस पुस्तक में पहले भारत की कुछ कहानियॉ दी गयीं हैं और बाद में देश विदेश की लोक कथाऐं दी गयी हैं।

---

[1] "Ajeeb Shadiyon Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta in Hindi language

[2] "Mein Shadi Naheen Karoongi" by Sushma Gupta in Hindi language

1 सीता की कहानी

भारत की कहानियों में से सबसे पहली कहानी हमने भारत के एक बहुत ही मशहूर महाकाव्य रामायण से ली है। रामायण सबसे पहला महाकाव्य यानी "आदि काव्य" कहलाता है और इसके लिखने वाले हैं आदि कवि वाल्मीकि जी। इस महाकाव्य में भगवान विष्णु के सातवें अवतार श्रीराम और राक्षसराज रावण की कहानी है।

त्रेता युग में उत्तर भारत में कोसल नाम का एक राज्य था जहॉ राजा दशरथ नाम के एक राजा राज्य करते थे। उनके चार बेटे थे – राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

जब वे कुछ बड़े हुए तो महर्षि विश्वामित्र जी श्रीराम और लक्ष्मण को राक्षसों से अपने यज्ञ की रक्षा करने के लिये अपने आश्रम ले गये। वहॉ श्रीराम और लक्ष्मण ने उनके यज्ञ की रक्षा करने के लिये कई राक्षस मारे।

उन्हीं दिनों मिथिला राज्य में राजा जनक राज्य करते थे। इनकी एक बेटी थी जिसका नाम था सीता। सीता घर में बहुत सारे काम करती थीं। राजा जनक सीता को बहुत प्यार करते थे।

राजा जनक के घर में शिव जी का एक बहुत पुराना धनुष रखा हुआ था। एक दिन घर की कुछ सफाई करते समय सीता ने वह धनुष खिसका कर दूसरी जगह रख दिया।

यह सुन कर राजा जनक को बहुत आश्चर्य हुआ कि जिस धनुष को हिलाने में भी सैंकड़ों लोगों की जरूरत पड़ती है उसको इस नन्हीं सी बच्ची ने कैसे खिसका दिया। बस तभी उन्होंने सोच लिया कि जो कोई उस धनुष पर डोरी चढ़ायेगा वह अपनी बेटी सीता की शादी उसी से करेंगे।

बाद में जब सीता कुछ बड़ी हो गयीं तो राजा जनक ने यह घोषणा करा दी कि उनके पास शिव जी का एक पुराना धनुष है। जो कोई उस धनुष पर डोरी चढ़ायेगा वह अपनी बेटी सीता की शादी उसी से करेंगे।

यह खबर महर्षि विश्वामित्र जी के आश्रम में भी पहुँची क्योंकि उस शादी में उनको भी आने का बुलावा भेजा गया था। इत्तफाक से श्रीराम और लक्ष्मण भी तब वहीं ठहरे हुए थे। सो महर्षि विश्वामित्र जी ने उन दोनों को साथ लिया और जनकपुरी की तरफ चल दिये।

जब राजा जनक महर्षि विश्वामित्र जी का स्वागत करने गये तो श्रीराम और लक्ष्मण को देख कर उनकी तरफ देखते ही रह गये। स्वयंवर वाले दिन सब राजा महाराज राजकुमार और सीता से शादी की इच्छा रखने वाले सभी लोग वहाँ इकट्ठा हुए।

अब जैसी कि राजा जनक की शर्त थी बहुत सारे लोगों ने शिव जी के धनुष को तोड़ने की कोशिश की पर वह तो किसी से हिला

भी नहीं। यह देख कर राजा जनक तो बेचारे बहुत परेशान हो गये कि अब तो उनकी बेटी कुँआरी ही रह जायेगी।

इस परेशानी में वह बोले — "क्या आज सारी धरती वीरों से खाली हो गयी? क्या आज इस दुनियॉ कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इस धनुष पर डोरी चढ़ा सके?"

यह सुन कर लक्ष्मण क्षत्रियों का यह अपमान नहीं सह सके और बोले — "हे राजन जिस सभा में श्रीराम जैसे वीर बैठे हों उस सभा में आपको ऐसा कहना अच्छा नहीं लगता। अगर श्रीराम की आज्ञा हो तो मैं इस धनुष को एक उँगली पर उठा कर सारी धरती का चक्कर लगा कर आ सकता हूँ।"

तब महर्षि विश्वामित्र जी ने श्रीराम को इशारा किया और श्रीराम महर्षि को सिर नवा कर उठे। धनुष के पास जा कर उन्होंने धनुष को उठाया और जैसे ही उस पर डोरी चढ़ाने के लिये उसकी डंडी मोड़ी वह डंडी टूट गयी।

उस डंडी के टूटने से बड़ा भारी शोर हुआ जिससे भगवान परशुराम जी को पता चल गया कि किसी ने उनके भगवान शिव का धनुष तोड़ दिया है। वह तुरन्त ही राजा जनक की सभा में आये और उनसे पूछा कि उनके भगवान शिव का धनुष किसने तोड़ा।

लक्ष्मण को थोड़ी हँसी सूझी तो उन्होंने कहा — "हे ब्राह्मण इसे आप धनुष कहते हैं? इससे बड़े बड़े धनुष तो हम बचपन में खेलने के लिये इस्तेमाल करते थे और तोड़ देते थे तब तो आप कभी नहीं

आये और इतना नाराज हुए जितना आप आज हो रहे हैं। फिर आज इस छोटे से धनुष के लिये इतना गुस्सा क्यों?

यह धनुष तो बहुत ही पुराना था हाथ लगते ही टूट गया इसमें इसको छूने वाले का क्या कुसूर?"

इस पर परशुराम जी बहुत नाराज हुए तो श्रीराम बोले कि इस धनुष को तोड़ने वाला तो आपका ही एक दास है। आप मुझे कहिये क्या कहना है। इस धनुष पर तो मैं बस डोरी चढ़ा रहा था कि यह टूट गया।"

तब परशुराम जी बोले — "अगर तुम इस धनुष पर डोरी चढ़ा रहे थे तो लो यह लो मेरा यह धनुष लो और मेरे इस धनुष पर डोरी चढ़ा कर दिखाओ।" और यह कह कर उन्होंने अपना धनुष श्रीराम की तरफ बढ़ा दिया।

परशुराम जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उनका धनुष उनके श्रीराम को देने से पहले ही उनके अपने हाथ से निकल कर श्रीराम के हाथ में चला गया।

अब श्रीराम की बारी थी। श्रीराम ने उसकी डोरी चढ़ा कर उस पर एक बाण रखा और उनसे पूछा — "बताइये ऋषि यह बाण मैं कहाँ छोड़ूँ?"

यह सुन कर तो परशुराम जी काँप गये। श्रीराम फिर बोले — "हे ऋषि आप यहाँ से जितनी जल्दी भाग सकते हों भाग जाइये। मैं इस तीर को आपके ऊपर ही छोड़ने वाला हूँ।"

यह सुनते ही परशुराम जी वहॉ से भाग लिये और सीधे महेन्द्र पर्वत पर जा कर ही दम लिया। वह अभी तक वहीं हैं।

क्योंकि श्रीराम ने उस धनुष पर डोरी चढ़ा दी थी तो राजा जनक ने अपनी बेटी सीता की शादी श्रीराम से कर दी।

2 द्रौपदी की कहानी

शर्तों पर शादी करने वाली यह दूसरी कहानी भारत के दूसरे महाकाव्य "महाभारत" से ली गयी है।

महाभारत दुनियॉ का सबसे बड़ा महाकाव्य है। यह पश्चिमी दुनियॉ के महाकवि होमर के इलियड और ओडिसी[3] दोनों को मिला कर उनसे दस गुने से भी ज़्यादा बड़ा है।

इसको महर्षि वेदव्यास जी ने लिखा है और इसमें एक परिवार की पॉच पीढ़ियों की कहानी है — शान्तनु — विचित्रवीर्य — धृतराष्ट्र और पांडु — दोनों के बच्चे कौरव और पांडव — पांडवों के बच्चे अभिमन्यु और दूसरे बच्चे।

अन्त में अभिमन्यु का बेटे परीक्षित को राजा बना कर पांडव स्वर्ग चले जाते हैं।

शान्तनु के सबसे बड़े पुत्र धृतराष्ट्र अन्धे थे इसलिये बड़े होने के बावजूद वह राजा नहीं बन पाये और पांडु को राजा बना दिया गया था इसका उनको बहुत दुख था।

पर उन्होंने सोचा कि अगर उनके बच्चे पांडु के बच्चों से बड़े हुए तो वह कम से कम अपने उस बेटे को राजा बना कर राज सुख भोग लेंगे। अब क्योंकि उनकी शादी पहले हुई थी सो उनको आशा

[3] Illiad and Odyssey writteb the Great Poet Homer

थी कि उनका बच्चा भी पांडु के बच्चे से बड़ा होगा। पर बदकिस्मती से ऐसा भी न हो सका।

धृतराष्ट्र के सौ बेटे हुए वे कौरव कहलाये पांडु के पॉच बेटे हुए वे पांडव कहलाये। दोनों के बच्चे साथ साथ बड़े होने लगे और साथ साथ पढ़ने लगे। इन दोनों के गुरू थे गुरू द्रोणाचार्य।

उस समय में शिष्य लोग आजकल की तरह से पढ़ाई की फीस नहीं दिया करते थे। उन दिनों शिष्य गुरू के साथ उनके आश्रमों में रहते थे और जब उनकी शिक्षा खत्म हो जाती थी तब गुरू उनसे गुरू दक्षिणा मॉगा करते थे जिसको देने के बाद ही उनकी पढ़ाई पूरी समझी जाती थी।

कौरवों और पांडवों का गुरू बनने से पहले गुरू द्रोण के साथ एक घटना घट चुकी थी।

काम्पिल्य नगरी के राजा द्रुपद गुरू द्रोण के गुरू भाई थे। उन दोनों में बहुत अच्छी दोस्ती थी और इतनी अच्छी दोस्ती थी कि राजा द्रुपद द्रोण से अक्सर यह कहा करते थे कि जो कुछ मेरा है उसमें से आधा तुम्हारा है।

अपनी अपनी पढ़ाई खत्म होने के बाद राजा द्रुपद अपने घर चले गये। राजा द्रुपद ने अपने पिता का राज्य सॅभाल लिया और द्रोण अपने पिता के आश्रम में ही रह गये। दोनों अपनी अपनी गृहस्थी में लग गये।

द्रोण की शादी कुरु परिवार के कुल गुरू कृपाचार्य की बहिन कृपी से हो गयी और फिर उनके एक बेटा भी हो गया अश्वत्थामा। पर गुरू द्रोण को कोई काम नहीं मिला जिससे वह अपना परिवार चला सकते।

एक दिन उन्होंने देखा कि उनका बेटा दूध पीने के लिये रो रहा था और उनकी पत्नी कृपी उनके बेटे को यह कह कर आटा घोल कर पिला रही थी कि "बेटा यह दूध है इसे पी लो।"

और अश्वत्थामा रो रहा था और कह रहा था कि "माँ यह दूध नहीं है। इसका स्वाद दूध जैसा नहीं है। मुझे दूध चाहिये। मैं यह नहीं पियूँगा।"

गुरू द्रोण यह सुन कर बहुत दुखी हुए कि तभी उनको अपने दोस्त द्रुपद की याद आयी। उन्होंने सोचा कि द्रुपद तो राजा है उसके पास तो हजारों गायें होंगी। और उसने तो कहा था कि जो कुछ भी उसका है उसमें से आधा मेरा है तो मैं उससे अपने हिस्से में से अपने बेटे के लिये एक गाय ले कर आता हूँ।

उन्होंने कृपी से कहा कि "मैं अपने बेटे के लिये एक गाय लेने जा रहा हूँ और गाय लिये बिना मैं घर नहीं लौटूँगा।" कह कर वह घर से बाहर निकल गये।

वह सीधे द्रुपद के दरबार में पहुँचे और उनको अपने आने की वजह बतायी और कहा कि क्योंकि द्रुपद ने उनसे यह कहा था कि

जो कुछ भी मेरा है उसमें से आधा तुम्हारा है इसलिये वह अपने हिस्से में से उनसे एक गाय लेने आये हैं।

द्रुपद हॅसे और बोले — "ऐसा भी कहीं होता है द्रोण। वह सब तो बचपन की बात थी। भूल जाओ उस बात को। हॉ क्योंकि तुम ब्राह्मण हो तो अगर तुम चाहो तो मैं तुमको एक क्या कई गायें दान में दे सकता हूॅ।"

द्रोण को यह सुन कर गुस्सा आ गया और वह बोले — "नहीं मैं यहॉ दान मॉगने नहीं आया। मैं तो अपने हिस्से में से केवल एक गाय लेने आया हूॅ। देते हो तो बोलो।"

द्रुपद बोले — "नहीं यह नामुमकिन है।"

द्रोण वहॉ से चले आये पर घर वापस नहीं गये क्योंकि उनके पास गाय नहीं थी। जब वह रास्ते में इधर उधर घूम रहे थे तो उनकी मुलाकात कौरवों और पांडवों से हो गयी।

खेलते समय उन बच्चों की गेंद एक कुॅए में गिर गयी जो उनसे निकल नहीं रही थी। गुरू द्रोण ने देखा तो अपने बाण से उनकी गेंद निकाल दी

अर्जुन उनके इस काम से बहुत प्रभावित हुआ और जा कर सारा किस्सा भीष्म को बताया तो वह समझ गये कि वह गुरू द्रोण थे जिन्होंने यह किया। बस तुरन्त ही उन्होंने गुरू द्रोण को बुलवा भेजा और उनसे प्रार्थना की कि वे उस राज घराने के गुरू बन जायें।

इस तरह वह कुरु परिवार के गुरू बन गये। पर न तो वह खुद द्रुपद वाली घटना को भूले और न द्रुपद ही उस घटना को भुला सके।

इसके बाद द्रुपद ने द्रोण को मारने वाले एक बेटा मॉगा और द्रोण ने द्रुपद से बदला लेने के लिये कौरवों और पॉडवों को तैयार किया।

जब कौरवों ओर पांडवों दोनों की पढ़ाई पूरी हो गयी तो द्रोण ने कौरवों और पांडवों से गुरू दक्षिणा मॉगी। उन्होंने कहा कि वे द्रुपद को अपने रथ के पीछे बॉध कर घसीटते हुए उनके पास लायें। कौरव तो यह गुरू दक्षिणा नहीं दे सके पर पांडव द्रुपद को बन्दी बना कर गुरू जी के पास ले आये।

जब पांडव द्रुपद को बन्दी बना कर लाने गये थे तो जिस तरह से अर्जुन द्रुपद से लड़ा उससे राजा द्रुपद बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उसी समय सोच लिया था कि वह अपनी बेटी द्रौपदी की शादी अर्जुन से ही करेंगे।

पर ऐसा कैसे हो। अर्जुन उस समय का सबसे अच्छा धनुष बाण चलाने वाला था। तो उन्होंने सोचा कि अगर मैं कोई ऐसा मुकाबला रखूँ जिसमें केवल अर्जुन ही जीत सके तब मेरी इच्छा पूरी हो सकती है।

सो बहुत सोच समझ कर उन्होंने एक मशीन बनवायी जिसमें नीचे एक बर्तन में तेल भरा था। उस तेल के बर्तन में एक खम्भा

खड़ा था जिसके ऊपर एक चक्र लगा हुआ था और उस चक्र में एक मछली घूम रही थी।

मुकाबला यह था कि जो कोई भी नीचे बर्तन के तेल में मछली की परछाईं देख कर उस मछली की बॉयी ऑख भेद देगा राजा द्रुपद अपनी बेटी द्रौपदी की शादी उसी के साथ कर देंगे।

अर्जुन ने नीचे तेल में मछली की परछाईं देख कर उस मछली की बॉयी ऑख भेद दी और इस तरह से द्रौपदी की शादी अर्जुन से हो गयी।

3 विद्योत्तमा[4]

विद्योत्तमा की शादी की शर्त पूरी होने की यह कहानी भी बहुत ही मजेदार कहानी है। तुम लोगों ने राजा विक्रमादित्य का नाम तो सुना ही होगा जिनकी "विक्रम बेताल की कहानियॉ" बहुत मशहूर हैं। हो सकता है शायद तुमने उनमें से एक दो कहानियॉ पढ़ी भी हों।

उन्हीं राजा विक्रमादित्य के राज्यकाल की बात है कि भारत की काशी नगरी में एक राजा राज करते थे जिनका नाम था भीमशुक्ल। उनकी एक बहुत ही विद्वान बेटी थी जिसका नाम था विद्योत्तमा [5]। वह इतनी विद्वान थी कि उस राजा के राज्य में उसके बराबर का कोई भी विद्वान नहीं था।

उसने कह रखा था कि वह केवल उसी से शादी करेगी जो उसको शास्त्रार्थ[6] में हरा देगा। पर राजा भीमशुक्ल चाहते थे कि उसकी शादी आचार्य वररुचि[7] से हो।

आचार्य वररुचि भी उस समय के बहुत बड़े विद्वान थे। पर उसने अपने पिता से उससे शादी करने से इसलिये मना कर दिया कि वह तो खुद ही उनसे कहीं ज़्यादा विद्वान थी।

---

[4] Vidyottama – daughter of King Bheemshukla and wife of the Great Poet Kalidas.

[5] Bheemshukla – name of the King of Kashi, UP, India. He had a very intelligent daughter Vidyottama.

[6] Means debate on spiritual matters

[7] Vararuchi was a lierary man in King Vikramaaditya's court. The great poet Kalidas was a great poet in his court.

अब यह तो वररुचि की सीधे सीधे बेइज़्ज़ती थी। सो वररुचि ने उसको एक ऐसी सीख देने की ठानी जिसको वह ज़िन्दगी भर याद रखे।[8]

बहुत सारे संत, विद्यार्थी, विद्वान, पंडित विद्योत्तमा से शादी करने की इच्छा से उसके पास आये पर कोई उसको शास्त्रार्थ में हरा नहीं सका।

कुछ समय बाद उन हारे हुए लोगों ने उससे इस बात का बदला लेने की सोची। पर अब उससे बदला कैसे लिया जाये।

क्योंकि वह खुद बहुत विद्वान थी सो वे सब मिल कर आचार्य वररुचि के पास गये और अपना दुखड़ा रोया। आचार्य वररुचि तो पहले से ही अपमानित बैठे थे तो इन सबने सोचा कि हम उसकी शादी किसी बहुत बड़े बेवकूफ से करा देते हैं तो उसका अपने विद्वान होने का घमंड टूट जायेगा।

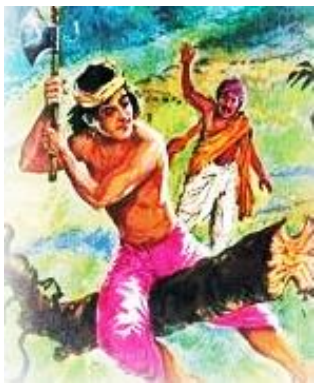

ढूँढते ढूँढते इनको एक ऐसा आदमी मिल गया जो एक पेड़ पर बैठा हुआ उसकी एक डाल काट रहा था।

अब लकड़ी काटना तो कोई बेवकूफी की बात नहीं थी पर मजे की बात यह थी कि वह आदमी जिस डाल पर बैठा था उसी डाल को काट रहा था। यानी जैसे ही

[8] Somewhere Vararuchi's name is mentioned as her suitor and revenger, but somewhere only as the planner of this event along with those suitors who got defeated from Vidyotamaa.

वह डाल कटती वह आदमी भी उस डाल के साथ साथ नीचे गिर जाता।

बस उनकी समझ में आ गया कि इससे बड़ा बेवकूफ हमको कोई और नहीं मिल सकता। जो आदमी अपने सहारे को नुकसान पहुँचा रहा हो उससे बड़ा बेवकूफ और कौन हो सकता है।

यह सोच कर उन्होंने उसको नीचे उतारा और कहा कि अगर वह उनका कहा मानेगा तो वे उसको इतना अमीर बना देंगे कि फिर उसको ज़िन्दगी भर कोई काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि हम तुमको एक राजा के महल ले कर चलते हैं जहाँ तुमको बहुत अच्छा खाना मिलेगा बहुत अच्छा रहने के लिये मिलेगा पर वहाँ तुमको एक शब्द भी बोलना नहीं है केवल हाथ के इशारों से ही बात करनी है।

सो वे उसको राजा के महल ले कर आये और राजा से बोले — "महाराज संयोग से हमको एक बहुत बड़े विद्वान मिल गये हैं जो आपकी बेटी को शास्त्रार्थ में चुनौती देते हैं। यह एक संत हैं और यह अभी तप में हैं इसलिये बोलेंगे नहीं हाँ केवल हाथ के इशारों से ही बात करेंगे शास्त्रार्थ करेंगे।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि कम से कम आज कोई तो मुझे ऐसा आदमी मिला जो मेरी बेटी को चुनौती दे कर उसे हराना चाहता है। मुझे तो लगता था कि मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह जायेगी।

सो उस लकड़हारे को राजकुमारी विद्योत्तमा के सामने लाया गया। उसको यह भी बता दिया गया कि यह आदमी केवल इशारों से ही बात करके आपसे शास्त्रार्थ करेगा।

को यह सुन कर कुछ अजीब सा तो लगा पर फिर वह मान गयी। विद्योत्तमा ने अपने दॉये हाथ की एक उॅगली उठा कर उसके सामने की तो उस बेवकूफ ने सोचा कि यह शायद मेरी एक ऑख फोड़ना चाहती है तो क्यों न मैं इसकी दोनों ऑखें फोड़ दूॅ यह सोच कर उसने तुरन्त ही उसकी तरफ दो उॅगलियॉ उठा दीं।

विद्योत्तमा ने कहा कि मैंने एक उॅगली यह कहने के लिये उठायी कि ईश्वर एक है और उसी एक ने यह दुनियॉ बनायी है। अब आप इनके दो उॅगलियॉ उठाने का मतलब समझाइये।

तो वहॉ बैठे लोगों ने उसके दो उॅगलियों के उठाने का मतलब समझाया यह कि वह आदमी यह कहना चाहता है कि मैं द्वैतवाद में विश्वास करता हूॅ यानी ईश्वर और आत्मा दो को मानता हूॅ जिसमें आत्मा ईश्वर का अंश है और ईश्वर ने यह दुनियॉ अकेले नहीं बल्कि अपनी माया के साथ मिल कर बनायी है।

हालॉकि विद्योत्तमा को उनकी यह दलील कुछ ज़्यादा जॅची तो नहीं पर फिर भी वह चुप हो गयी।

फिर उसने उसको अपनी खुली हुई हथेली दिखायी जिससे वह उसको यह बताना चाहती थी कि प्रकृति में पॉच चीज़ें है। उस

बेवकूफ ने सोचा कि अगर यह मुझे थप्पड़ मारना चाहती है तो क्यों न मैं इसे घूँसा मार दूँ सो उसने उसको अपनी बन्द मुट्ठी दिखा दी।

पूछने पर उस आदमी के दोस्तों ने जवाब दिया कि यह कहता है कि प्रकृति में पाँच चीज़ें जरूर हैं पर ये केवल पाँच चीज़ें ही नहीं हैं उनमें उनके पाँच विषय[9] भी शामिल हैं।

विद्योत्तमा इस बात से बहुत प्रभावित हो गयी सो उसने अपनी हार मान ली और उससे शादी कर ली।

शादी के बाद विद्योत्तमा को पता चला कि उसका पति तो बिल्कुल ही अनपढ़ गँवार और बेवकूफ है तो वह बहुत झल्लायी और नाराज हुई।

उसने उसकी बेइज़्ज़ती कर के उसको यह कह कर घर के बाहर निकाल दिया कि तुम्हारे दिमाग में तो कीचड़ और पत्थर भरे हैं। जाओ और जब तक तुम पढ़ लिख कर मुझसे बात करने के लायक न हो जाओ तब तक मेरे पास नहीं आना।

अब वह बेवकूफ बेचारा क्या करे। वह बहुत परेशान हुआ तो इधर उधर घूमने लगा। घूमते घूमते वह एक नदी के किनारे आ गया। वहाँ उसने आत्महत्या करने की सोची कि तभी उसने देखा कि कुछ स्त्रियाँ नदी पर कपड़े धो रही हैं।

[9] Five Indriyaan (senses) are eyes, ears, nose, mouth, tongue and their subjects are seeing, hearing, smelling, speaking and taste respectively.

उसके दिमाग में राजकुमारी विद्योत्तमा के दो शब्द घूम गये – कीचड़ और पत्थर। उसने देखा कि वह पत्थर जिस पर स्त्रियॉ अपने कपड़े पीट पीट कर धो रही थीं वे बहुत ही चिकने और गोल थे जबकि दूसरे पत्थर बहुत ही खुरदरे थे।

बस उसके दिमाग में यह बात घूम गयी कि जब कपड़े पीटने से एक पत्थर गोल और चिकना हो सकता है तो उसका यह कीचड़ और पत्थर भरा दिमाग शिक्षा से क्यों नहीं बदल सकता।

उसने प्रण किया कि वह भी देश का सबसे विद्वान आदमी बनेगा। और वह वहॉ से गुरू की तलाश में जंगल की तरफ चल पड़ा। बहुत कम खाना खाते हुए बहुत दिन चलने के बाद उसको एक योगी मिला जो एक बरगद के पेड़[10] के नीचे बैठा था।

वह उस योगी के पैरों में पड़ गया औ उससे उसका आशीर्वाद मॉगा। योगी बहुत दयालु था। उसने उसको फल खाने के लिये दिये। फिर उसने उसे काली देवी का एक मन्त्र दिया और उससे उस मन्त्र का दिन रात काली के मन्दिर में अकेले जाप करने के लिये कहा।

लकड़हारे ने ऐसा किया तो एक रात काली देवी ने उसको अपने सबसे भयानक रूप में उसको दर्शन दिये। लकड़हारा डर गया और डर के मारे उसने मन्दिर का दरवाजा बन्द कर दिया।

[10] Translated for the words “Banyan Tree”

काली देवी ने उससे मन्दिर का दरवाजा खोलने के लिये कहा तो उस आदमी ने कहा — "माँ मैं आपको यहाँ तभी घुसने दूँगा जब आप मुझे विद्वान होने का वरदान देंगीं।

काली देवी उसकी सादगी ओर भक्ति से बहुत प्रसन्न हुई और उसको बहुत बड़ा कवि होने का वरदान दिया। उसी समय से वह विद्वान हो गया और काली के नाम पर उसने अपना नाम कालीदास रख लिया।

इसका एक दूसरा वृत्तान्त यह भी कहा जाता है कि —
विद्योत्तमा के घर से निकाले जाने के बाद वह लकड़हारा उज्जैन के गढ़कलिका के मन्दिर की तरफ चला गया और देवी से विद्या और ज्ञान देने की प्रार्थना की। इसके लिये उसने देवी को अपनी जीभ की बलि भी दी।

जब वह अपनी जीभ की बलि देने वाला था तो देवी उसके सामने प्रगट हुई और उसको अपनी जीभ की बलि देने से रोका और उसको विद्या और ज्ञान का आशीर्वाद दिया। उस आशीर्वाद के फलस्वरूप उसके मुँह से अक्लमन्दी के शब्द निकलने लगे। उसने संस्कृत में लिखना और कविता करना शुरू कर दिया।

कुछ समय गुजर जाने के बाद वह अपनी पत्नी के पास गया। वहाँ जा कर उसने दरवाजा खटखटाया तो विद्योत्तमा ने संस्कृत में उससे पूछा "कौन है?"

तो कालीदास ने भी शुद्ध संस्कृत में ही उसको जवाब दिया — "मैं हूँ तुम्हारा पति। दरवाजा खोलो।"

पहले तो विद्युत्तमा को लगा कि इतनी शुद्ध संस्कृत में उससे कौन बात कर रहा है फिर वह अपने पति की आवाज पहचान गयी और बहुत खुश हो कर उसने उसके लिये दरवाजा खोल दिया और उसको अन्दर बुलाया। दोनों फिर बहुत खुश खुश रहे।

तो यह थी के शादी करने की शर्त और उस शर्त पूरी होने का परिणाम जिसने एक ऐसे बेवकूफ लकड़हारे से जो जिस डाली पर बैठा था उसी डाली को काट रहा था "सारे समय का महाकवि"[11] बना दिया।

[11] Great Poet of All Time.

4 जूँ की खाल[12]

शादी शर्तों पर की एक बहुत ही मजेदार लोक कथा। पढ़ोगे तो हँसोगे कि शादी की यह कैसी शर्त थी।

एक बार एक राजा अपने खाली समय में बाहर घूम रहा था कि उसको अपने ऊपर एक जूँ चलती दिखायी दे गयी। अब वह जूँ क्योंकि एक राजा के ऊपर चल रही थी इसलिये वह एक खास जूँ थी और उसकी इज़्ज़त होनी चाहिये थी।

सो बजाय इसके कि वह राजा उसे मार कर फेंक देता वह उसको अपने महल में ले गया और उसकी ठीक से देखभाल करने लगा।

राजा की देखभाल में वह जूँ बढ़ती रही और एक मोटी बिल्ली जैसी मोटी हो गयी। वह चौबीस घंटे एक कुर्सी पर बैठी रहती। कुछ दिनों बाद वह एक मोटे सूअर के बराबर मोटी हो गयी तो राजा को उसको एक आराम कुर्सी पर बिठाना पड़ गया।

और कुछ दिनों बाद वह एक बछड़े के बराबर मोटी हो गयी तो उसको जानवरों के घर में रखना पड़ा। पर वह जूँ तो बराबर बढ़ती

[12] Louse Hide (Story No 104) – a folktale from Italy from its Rome area.
Adapted from the book : "Italian Folktales:" by Italo Calvino". Translated in English by George Martin in 1980.

ही रही और जल्दी ही वह जानवरों का घर भी उसके लिये छोटा पड़ने लगा।

अब राजा ने उसको मरवा दिया। उसकी खाल निकलवा ली और उस खाल को महल के दरवाजे पर टॉग दिया।

फिर उसने अपने राज्य भर में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई यह बतायेगा कि वह खाल किस जानवर की है वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा। पर जिसने भी गलत बताया तो उसको वह मौत की सजा दे देगा।

जैसे ही वह मुनादी पिटी आदमियों की एक लम्बी लाइन राजा के महल के दरवाजे पर लग गयी। सभी उस जानवर का नाम बता कर राजकुमारी से शादी करना चाहते थे।

पर किसको यह अन्दाजा था कि वह जूँ की खाल होगी सो कोई भी उस खाल के जानवर का सही नाम नहीं बता सका और सब मारे गये। फॉसी देने वाले दिन रात लोगों को फॉसी चढ़ाने पर लगे हुए थे।

मजे की बात यह थी कि राजकुमारी को खुद को भी यह पता नहीं था कि वह खाल किसकी है।

राजा की बेटी का एक प्रेमी था। उसका वह प्रेमी राजा की बेटी से शादी करने के लिये बहुत बेचैन था। राजा को अपनी बेटी के उस प्रेमी के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

तभी राजा की बेटी को किसी नौकर से यह पता चला कि वह खाल जूँ की थी। सो रोज की तरह जब उसका प्रेमी शाम को उससे खिड़की के नीचे मिलने आया तो उसने उसको फुसफुसा कर यह बताया — "कल तुम मेरे पिता के पास जाना और उनको कहना कि यह खाल जूँ की है।"

पर राजकुमारी की आवाज बहुत धीमी होने की वजह से उसका वह प्रेमी उसके शब्द ठीक से नहीं सुन सका।

वह बोला — "तुमने क्या कहा चूहा? एक बड़ा सा चूहा?"[13]

राजकुमारी थोड़ी ज़ोर से बोली — "नहीं, जूँ।"

"क्या? तीतर?"[14]

अबकी बार वह चिल्लायी — "नहीं, जूँ, जूँ।"

"अच्छा, अच्छा, अब मैं समझ गया। ठीक है मैं कल देखूँगा।" कह कर वह वहाँ से चला गया।

अब राजा की बेटी की खिड़की के नीचे एक कुबड़ा जूता ठीक करने वाला बैठता था। वह ये सब बातें सुन रहा था। यह सुन कर उसने अपने मन में कहा — "अब देखता हूँ कि तुझसे कौन शादी करता है, मैं या वह तेरा प्रेमी।"

---

[13] Joon is called Louse in English language and Choohaa is called Mouse, so because of her low voice he confused the words Louse with Mouse.

[14] Translated for the word "Grouse" – thus all the three words, louse, mouse and grouse sound similar.

उसने अपना सामान तो वहीं छोड़ा और तुरन्त ही वहॉ से राजा के पास भागा गया और वहॉ जा कर बोला — "राजा साहब, राजा साहब, मैं यहॉ इसलिये आया हूँ कि आपकी उस खाल के जानवर के नाम का अन्दाजा लगा सकूँ।"

राजा बोला — "ख्याल रखना। बहुत सारे आदमी पहले ही मारे जा चुके हैं।"

कुबड़ा बोला — "यह तो हम अभी देखेंगे कि मैं भी मरता हूँ कि नहीं।"

राजा ने उस कुबड़े को वह खाल दिखायी तो उस कुबड़े ने पहले तो उसको अच्छी तरह से देखने का नाटक किया, फिर उसको सूँघा, फिर सिर खुजलाया और फिर कुछ सोच कर बोला — "राजा साहब, इसके जानवर को पहचानने में तो बहुत देर नहीं लगेगी। यह तो जूँ की खाल है।"

राजा तो उस कुबड़े की होशियारी देख कर दंग रह गया। हालॉकि उसकी समझ में इसका राज़ नहीं आया पर वायदा तो वायदा होता है इसलिये बिना एक शब्द कहे उसने अपनी बेटी को बुला भेजा और तुरन्त ही उसको उस कुबड़े की पत्नी घोषित कर दी।

बेचारी राजकुमारी जिसको इस बारे में पूरा विश्वास था कि वह अगले दिन अपने प्रेमी से ही शादी कर पायेगी अब बहुत ही दुखी थी।

वह छोटा कुबड़ा अब राजा बन गया और वह राजकुमारी उसकी रानी बन गयी। पर उसके साथ रहने से राजकुमारी की ज़िन्दगी की सारी खुशियॉ चली गयीं।

उसकी दासियों में से एक बूढ़ी दासी थी जो अपनी रानी को हॅसते हुए देखने के लिये कुछ भी कर सकती थी।

सो एक दिन सुबह उसने रानी से कहा — "रानी जी, मैंने कल तीन कुबड़े शहर में नाचते गाते खेलते घूमते हुए देखे और उनको देख कर सब हॅस रहे थे। आप क्या सोचती हैं कि मैं उनको यहॉ शाही महल में ले आऊॅ ताकि वे आपका थोड़ा दिल बहला दें?"

रानी बोली — "तुम पागल हुई हो क्या? अगर वह कुबड़ा राजा यहॉ आ गया और उसने उनको देख लिया तो वह क्या कहेगा। वह सोचेगा कि हमने उन कुबड़ों को यहॉ उसकी हॅसी उड़ाने के लिये बुलाया है।"

दासी ने जवाब दिया — "आप चिन्ता न करें अगर राजा साहब यहॉ आ गये तो हम उन कुबड़ों को एक बक्से में बन्द कर देंगे।"

सो वे तीन कुबड़े गवैये महल में रानी के पास आये और रानी को शाही तरीके से हॅसाने की कोशिश करने लगे। रानी भी उनकी बातों पर बहुत हॅसी, बहुत हॅसी।

पर जब वे राजकुमारी को हॅसा रहे थे तभी बीच में राजा आ गये और दरवाजे पर आहट हुई। दासी ने तीनों कुबड़ों को गर्दन से पकड़ा और एक बड़ी सी आलमारी में बन्द कर के उसका दरवाजा बन्द कर दिया।

और रानी राजा के लिये यह कहती हुई दरवाजा खोलने के लिये चली गयी "ठीक है, ठीक है मैं आ रही हूॅ।" राजा अन्दर आ गये। उन्होंने दोनों ने मिल कर रात का खाना खाया और फिर घूमने के लिये चले गये।

अगला दिन वह दिन था जब राजा और रानी आने वालों से मिला करते थे। उस दिन रानी और उसकी दासी दोनों ही उन कुबड़ों को भूल गये।

तीसरे दिन रानी ने अपनी दासी से कहा — "अरे उन कुबड़ों का क्या हुआ?"

दासी चिल्लायी — "अरे उनके बारे में तो मैं बिल्कुल भूल ही गयी थी। पर वे तो अभी भी आलमारी में ही होंगे कहॉ जायेंगे।"

वह तुरन्त ही भागी भागी अन्दर गयी और जा कर वह आलमारी खोली तो देखा कि वे तीनों कुबड़े तो मरे पड़े थे। वे खाना न खाने और हवा न मिलने की वजह से मर गये थे।

रानी तो यह देख कर बहुत डर गयी वह बोली — "अब क्या करें?"

दासी बोली — "आप चिन्ता न करें, मैं इसका भी कुछ तरीका निकालती हूँ।"

उसने एक कुबड़े को उठाया और एक थैले में रख दिया फिर उसने एक सामान उठाने वाले को बुलाया और उससे कहा — "देखो इस थैले में एक चोर है। यह शाही जवाहरात चुरा कर भाग रहा था सो मैंने इसको एक झापड़ मार कर ही मार दिया।"

फिर उसने उसको वह थैला खोल कर दिखाया जिसमें से उसका कूबड़ दिखायी दे रहा था।

वह आगे बोली — "अब तुम इसको अपनी पीठ पर लाद कर ले जाओ और छिपा कर इसको नदी में फेंक देना। देखो किसी को पता न चले क्योंकि हम कोई हल्ला गुल्ला नहीं चाहते। जब तुम वापस आओगे तब मैं तुमको बहुत सारे पैसे दूँगी।"

उस बेचारे ने वह थैला अपनी पीठ पर लटकाया और नदी की तरफ चल दिया। इस बीच उस दासी ने दूसरे कुबड़े को भी एक थैले में बन्द कर दिया और दरवाजे के पास ही रख दिया।

वह सामान ले जाने वाला अपने पैसे लेने के लिये आया तो दासी ने कहा — "अभी मैं तुमको पैसे कैसे दे दूँ जबकि वह कुबड़ा तो अभी भी यहीं है क्योंकि तुम यह थैला तो ले कर ही नहीं गये।"

नौकर तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया कि अभी अभी तो वह थैला फेंक कर आ रहा है और यह दासी कह रही है कि मैं थैला तो ले कर ही नहीं गया। यह क्या मामला है।

वह बोला — "हम लोग यह कौन सा खेल खेल रहे हैं। मैं अभी तो उस थैले को नदी में फेंक कर आया हूँ।"

"देखो यह सबूत है कि तुमने अपना काम ठीक से नहीं किया नहीं तो यह थैला यहाँ नहीं होता।" कह कर उसने नौकर को वह दूसरा थैला खोल कर दिखा दिया।

अपना सिर हिलाते हुए और बुड़बुड़ाते हुए उसने वह थैला उठाया और फिर एक बार नदी की तरफ चल दिया। जब वह दोबारा शाही महल वापस लौटा तो एक और थैला उसका इन्तजार कर रहा था और वह दासी फिर से उसके ऊपर नाराज थी।

"क्या मैं गलत बोल रही हूँ? तुमको पता नहीं है कि लाश को नदी में कैसे फेंकते हैं? क्या तुम देख नहीं रहे कि यह थैला फिर से वापस आ गया है?"

"पर इस बार तो नदी में फेंकने से पहले मैंने उस थैले में एक पत्थर भी बाँधा था।"

"अबकी बार दो पत्थर बाँधना तब देखते कि यह कैसे वापस आता है। और अबकी बार मैं तुमको न केवल पैसे दूँगी बल्कि तुमको और भी बहुत कुछ दूँगी।"

सो एक बार फिर वह नौकर उस थैले को ले कर नदी की तरफ गया और उसने उसमें दो पत्थर बाँधे और तीसरे कुबड़े को भी नदी में फेंक दिया।

वह वहाँ खड़े हो कर देखता रहा कि वह थैला ऊपर आता है या नहीं। जब उसने यह पक्का कर लिया कि वह थैला डूब गया तब वह वहाँ से चला आया।

जब वह महल में घुस रहा था तो रास्ते में उसको कुबड़ा राजा मिल गया। उसने उसको देखा तो सोचा "अरे यह कुबड़ा तो लगता है कि फिर वापस आ गया। और अब वह चुड़ैल दासी तो मुझे जरूर ही पीटेगी।

यह सोचते हुए उसने गुस्से में अन्धे होते हुए कुबड़े राजा को गर्दन से पकड़ा और चिल्लाया — "ओ कुबड़े मुझे तुझे और कितनी बार नदी में फेंकना पड़ेगा? मैंने तुझे एक पत्थर बाँधा और तू वापस आ गया। फिर मैंने तुझे दो पत्थर बाँधे और तू फिर भी वापस आ गया।

तू मुझे इतना परेशान करने वाला कैसे हो सकता है? अबकी बार मैं तेरा ठीक से काम तमाम करता हूँ।"

इतना कह कर उसने अपने हाथ उस कुबड़े राजा की गर्दन पर रखे और उसको दबा दिया। फिर उसने उसको गर्दन से पकड़ा और उसे नदी की तरफ घसीटता हुआ ले चला। वहाँ जा कर उसने उसके पैरों में चार पत्थर बाँधे और ज़ोर से घुमा कर पानी में फेंक दिया।

जब रानी ने सुना कि उसका कुबड़ा पति वहीं चला गया है जहॉ वे तीन कुबड़े गये थे तो उसने उस नौकर को बहुत सारा पैसा, सोना, जवाहरात, सूअर, चीज़[15] और शराब दी।

अब तो अपने प्रेमी से शादी करने में उसको कोई परेशानी ही नहीं थी सो उसने उससे शादी कर ली और आराम से राज किया।

[15] Cheese – processed Indian Paneer made of milk . It comes in a variety of ways in western world.

5 जूँ की खाल का कोट[16]

जूँ की खाल की एक और लोक कथा जिसमें जूँ की खाल ने एक राजा को यह कहने में रुचि पैदा कर दी कि जो कोई उसके कोट की खाल पहचानेगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा। तो लो पढ़ते हैं शादी की इस अजीबो गरीब शर्त की एक कहानी और।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक बेटी थी। एक दिन उस राजकुमारी की माँ उसके बालों में कंघी कर रही थी कि उनमें एक जूँ निकल आयी।

राजकुमारी चिल्लायी — "देखिये पिता जी, मेरी माँ को मेरे सिर में से जूँ मिली।"

राजा भी चिल्लाया — "उसे मारना नहीं। हम उसको एक शीशे के बर्तन में रख देंगे। मैं यह देखना चाहता हूँ कि कोई जूँ शाही खून पी पी कर कितनी बड़ी हो सकती है।"

---

[16] The Louse-skin Coat (El Saco de Piojo) – a folktale from Mexico, North America.
Translated from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Don Nicholas Martinez
[Author's Note : The story, "El Saco de Piojo," is a very simplified version of similar tales found in Europe and elsewhere. It seems that it is an original and complete tale since there is no evidence of its contamination with other stories.

That the basic story type is Oriental there is no doubt, proof being given in the fact that the reward is won through the answering of a riddle. In Europe, however, the tales similar to this have intermixed with others – from "The Pursued Maiden" types, as well as from "The Marvelous Companions" or "Grateful Animals" themes.]

सो राजा ने उस जूँ को एक शीशे के बर्तन में रख दिया और रोज वह उस जूँ को अपनी बेटी का शाही खून पिलाता था। इस काम के लिये वह उसको अपनी बेटी की खाल पर घंटों चिपकाये रखता।

खून पी पी कर वह जूँ काफी बड़ी हो गयी तो उसको किसी दूसरे बड़े शीशे के बर्तन में रखना पड़ा। जब इसी तरीके से वह बढ़ती रही और एक दिन राजा को उसको एक बैरल[17] में रखना पड़ा।

राजकुमारी भी उसको अपना खून पिलाती रही और अब वह जूँ इतनी बड़ी हो गयी कि उसको राजा को टन[18] में रखना पड़ा। जब वह जूँ इतनी बड़ी हो गयी कि वह टन भी उसके लिये छोटा पड़ गया तो राजा ने उसे मरवा दिया।

राजा ने उसकी खाल को ठीक करा के उसका कोट बनाने के लिये अपने शाही दर्जी को दे दिया। दर्जी ने राजा के लिये उसका कोट बना दिया।

---

[17] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

[18] Tun – is a large cask especially for wine which has large capacity; especially one tun equals to 252 gallons.

जब वह कोट बन गया तो राजा ने उसे पहना और फिर हर एक से एक ही सवाल पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि मेरा यह कोट किस जानवर की खाल का बना है?"

किसी ने कहा यह घोड़े की खाल का है, किसी ने कहा यह हिरन की खाल का है पर कोई भी उस सवाल का ठीक जवाब नहीं दे सका।

आखीर में राजा ने यह घोषणा करा दी कि जो कोई भी इस सवाल का ठीक ठीक जवाब देगा वह अपनी बेटी की शादी उसी के साथ कर देगा।

सब जगह से लोग इस पहेली को बूझने के लिये वहाँ आये पर कोई भी ठीक ठीक नहीं बता सका कि वह कोट किस जानवर की खाल का बना हुआ है।

एक दिन एक पादरी अपनी भेड़ों के झुंड के साथ उस शहर में आया। वह अपनी भेड़ों को बाजार में बेचने के लिये ले जा रहा था पर उसको लगा कि इस काम को करते हुए वह बीच बीच में नयी जगह भी देख सकता था।

काफी देर चलने के बाद वह पादरी राजा के महल के पास आ पहुँचा। वह थका हुआ था सो उसने एक सिगरेट निकाली और राजा के बागीचे की दीवार के सहारे बैठ कर सिगरेट पीने लगा कि तभी उसने कुछ आवाजें सुनी।

राजा अपनी रानी से बात कर रहा था — "मुझे नहीं लगता कि दुनियॉ में कोई भी अन्दाजा लगा सकता है कि मेरा यह कोट जूँ की खाल का बना है। पर फिर हमारी बेटी की शादी कैसे होगी?"

जैसे ही उस पादरी ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ और बोला — "अब मैं राजकुमारी से शादी कर सकता हूँ।"

अगले दिन वह राजा के महल में गया और राजा से मिलने की इजाज़त चाही। जब वह राजा के सामने गया तो बोला — "मैं आपके कोट की पहेली बूझने आया हूँ।"

राजा ने कहा — "ठीक है बताओ।"

पादरी बोला — "आपका यह कोट जूँ की खाल का बना हुआ है।"

यह सुनते ही राजा खुशी से चिल्ला पड़ा — "अरे तुमने ठीक पहचाना।"

कह कर राजा ने तुरन्त ही अपनी बेटी की शादी का इन्तजाम करवाया और वह पादरी राजकुमारी से शादी करके उसको तुरन्त ही वहॉ से ले गया।

इस तरह पादरी ने राजा की बेटी से शादी की।

6 जमीन और पानी पर चलने वाली नाव[19]

शादी शर्तों पर करने की एक और मजेदार लोक कथा – यूरोप महाद्वीप के इटली देश से।

एक बार एक राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवायी कि "जो कोई आदमी ऐसी नाव बनायेगा जो जमीन पर भी चलेगी और पानी में भी, तो मैं उस आदमी से अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

उस देश में एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके पास एक घोड़ा, एक गधा और एक सूअर का बच्चा भी था।

जब उसके सबसे बड़े बेटे ने यह मुनादी सुनी तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी आप अपना घोड़ा बेच दीजिये और उससे जो पैसे मिलेंगे मैं उनसे नाव बनाने का सामान खरीदूँगा।

फिर मैं उस सामान से एक ऐसी नाव बनाऊँगा जो जमीन और पानी दोनों पर चल सके। फिर मैं राजकुमारी से शादी कर लूँगा।"

पिता अपना घोड़ा नहीं बेचना चाहता था पर अपने बेटे की जिद के आगे उसको झुकना पड़ा। घर में शान्ति बनाये रखने के लिये उसने अपना घोड़ा बेच दिया और उस पैसे से उसके लिये नाव बनाने के लिये औजार खरीद दिये।

---

[19] A Boat For Land and Water – a folktale from Italy from its Rome area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

अगले दिन वह लड़का सुबह सवेरे उठा और नाव बनाने के लिये लकड़ी काटने के लिये जंगल चल दिया।

जब उसकी नाव आधी बन गयी तो एक छोटा सा बूढ़ा वहॉ आया और उससे बोला — "बेटा, तुम यह क्या बना रहे हो?"

"बस ऐसे ही जो मुझे अच्छा लग रहा है।"

"और तुमको क्या अच्छा लग रहा है?"

"बैरल[20] की पट्टियॉ।"

"तो कल तुमको बैरल की पट्टियॉ अपने आप कटी मिल जायेंगी अभी तुम अपने घर जाओ।" कह कर वह बूढ़ा वहॉ से चला गया।

अगली सुबह जब वह वापस जंगल गया तो जहॉ उसने अपनी वह आधी बनी नाव और लकड़ी और औजार छोड़े थे वहॉ बैरल की पट्टियों का ढेर लगा पड़ा था।

उस ढेर को देख कर तो उस लड़के ने अपना सिर पीट लिया और रोता चिल्लाता घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपने पिता को सब कुछ बताया तो पिता को भी बहुत बुरा लगा। उसने तो अपने बेटे की खुशी के लिये अपना

[20] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter – see its picture above.

घोड़ा बेचा था पर अब उसका मन अपने बेटे की गर्दन मरोड़ने का कर रहा था।

दो तीन हफ्ते बाद उसके बीच वाले लड़के को अपनी किस्मत आजमाने की खुजली उठी। वह भी नाव बनाना चाहता था। उसने अपने पिता से उसका गधा बेचने के लिये कहा ताकि वह उसको बेचने से आये पैसों से वैसी नाव बना सके।

हालॉकि वह आदमी अपना गधा बेचना नहीं चाहता था पर अपने दूसरे बेटे की जिद के आगे उसको झुकना पड़ा और उसने अपना गधा बेच दिया।

उस पैसे से उसने भी कुछ सामान खरीदा और वह भी नाव बनाने जंगल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने भी लकड़ी काटी और उसकी नाव बनानी शुरू कर दी।

जब उसकी नाव भी आधी बन गयी तो एक बूढ़ा उसके पास आया और उससे बोला — "बेटा, तुम यह क्या बना रहे हो?"

"बस ऐसे ही जो मुझे अच्छा लग रहा है।"

"और क्या तुम बताओगे कि तुमको क्या अच्छा लग रहा है?"

"मैं झाड़ू के हैन्डिल बना रहा हूँ।"

"तो कल तुमको झाड़ू के हैन्डिल अपने आप बने मिल जायेंगे अभी तुम अपने घर जाओ।" कह कर वह बूढ़ा वहॉ से चला गया।

शाम को वह लड़का भी अपनी नाव के लिये लकड़ी काट कर घर चला गया। घर जा कर उसने खाना खाया और सो गया। सुबह सवेरे उठ कर जब वह जंगल गया तो उसने देखा कि उसकी काटी सारी लकड़ी के तो झाड़ू के हैन्डिल बने रखे हैं।

यह देख कर उसने भी अपना सिर पीट लिया और रोता चिल्लाता घर वापस आ गया। घर आ कर उसने अपने पिता को सब कुछ बताया तो पिता को भी बहुत बुरा लगा।

उसने तो अपने बेटे की खुशी के लिये अपना गधा बेचा था पर अब उसका मन उसकी गर्दन मरोड़ने का कर रहा था।

वह चिल्ला कर बोला — "तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। बल्कि तुम दोनों के साथ जो हुआ वह ठीक हुआ क्योंकि तुम लोगों के विचार ही बेवकूफी के थे। और यह मेरे साथ भी ठीक हुआ क्योंकि मैंने तुम बेचकूफों की बात सुनी।"

उसका सबसे छोटा बेटा यह सब सुन रहा था। वह बोला — "अब जब हम यहॉ तक आ ही गये हैं पिता जी तो हमको बाकी बचा रास्ता भी पार कर लेना चाहिये।

पिता जी, मैं भी अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूॅ। हम यह सूअर का बच्चा बेच देते हैं, नये औजार खरीदते हैं और कौन जाने शायद मैं ही वैसी नाव बनाने में कामयाब हो जाऊॅ।"

यह सुन कर तो पिता के गुस्से का पारा आसमान पर चढ़ गया पर काफी कहा सुनी के बाद वह सूअर का बच्चा भी बेच दिया

गया, नये औजार खरीदे गये और वह लड़का अगले दिन नाव बनाने के लिये लकड़ी काटने के लिये जंगल पहुँच गया।

उसकी भी नाव जब आधी बन गयी तो वही पहले वाला बूढ़ा फिर वहाँ आया और उससे पूछा — "बेटे, तुम क्या कर रहे हो?"

लड़के ने जवाब दिया — "बाबा, मैं एक ऐसी नाव बना रहा हूँ जो जमीन पर भी चल सके और पानी पर भी तैर सके।"

बूढ़ा बोला — "तो तुमको ऐसी नाव जो जमीन पर भी चल सके और पानी पर भी तैर सके अपने आप मिल जायेगी अभी तुम अपने घर जाओ।" और यह कह कर वह बूढ़ा वहाँ से चला गया।

अपने दूसरे भाइयों की तरह वह भी शाम होने पर घर चला गया। जा कर उसने खाना खाया और सो गया। अगले दिन जब वह सुबह सवेरे जंगल पहुँचा तो उसको वैसी ही एक नाव तैयार खड़ी मिली। वह लड़का तो उस नाव को देख कर बहुत खुश हो गया।

उसके पतवार भी थे और उसमें पाल भी लगे हुए थे। वह तुरन्त ही उस नाव पर चढ़ गया और बोला — "चल नाव चल, जमीन पर चल।"

और नाव जंगल में हो कर इतनी आसानी से जाने लगी जैसे कि कोई नाव पानी पर तैरती है। चलते चलते वह उसके घर आ गयी। उसके पिता और भाई उस नाव को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये।

लड़का फिर बोला — "चल नाव चल, जमीन पर चल।" अब वह राजा के महल की तरफ चल दी – पहाड़ों पर चढ़ती हुई, मैदानों में से गुजरती हुई और जब भी कोई नदी आती तो उसमें तैरती हुई।

अब उसके पास नाव तो थी पर उसको चलाने के लिये कोई टीम[21] नहीं थी। वह अब एक ऐसी नदी में आ पहुँचा था जिसका पानी समुद्र की एक धारा से आना था पर उसका पानी नदी तक नहीं पहुँच रहा था।

क्योंकि नदी के मुँह पर उसके किनारे पर खड़ा एक बहुत ही बड़ा आदमी झुक कर उस समुद्र की धारा में से पानी पी रहा था और उसका पानी नदी में आ ही नहीं पा रहा था जिससे वह धारा सूखी सी हो रही थी।

लड़का बोला — "हे भगवान, कितना सारा पानी पीने वाला आदमी है यह। क्या ही अच्छा हो अगर यह मेरे साथ राजा के महल तक चले।"

वह चिल्ला कर बोला — "क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

उस बड़े आदमी ने एक घूँट पानी और पिया और बोला — "खुशी से। अब जब कि मेरी प्यास थोड़ी सी बुझ गयी है तो मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ।" कह कर वह उस नाव पर चढ़ गया।

[21] Translated for the word "Crew".

अब वह नाव पानी पर तैरने लगी क्योंकि समुद्र का पानी अब नदी में आने लगा था। नदी में तैरने के बाद अब वह नाव फिर से जमीन पर चलने लगी थी।

चलते चलते वे दोनों एक ऐसी जगह आये जहॉ एक आदमी एक बड़ी मोटी सी भैंस को लोहे के डंडे मे लगा कर आग के ऊपर भून रहा था।

उस आदमी को देख कर उस लड़के ने उस आदमी से पूछा — "क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

वह बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे बस ज़रा सा समय दो ताकि मैं यह कौर खा लूँ फिर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

"हॉ हॉ जरूर।"

इस पर उस आदमी ने उस भैंस को उस लोहे के डंडे में से निकाला और अपने मुँह में ऐसे रखा जैसे वह कोई चिड़िया हो और उसे खा कर उस लड़के साथ उसकी नाव पर सवार हो गया। सो अब तीनों राजा के महल चल दिये।

नाव झीलें पार करती हुई और खेतों में से होती हुई चली जा रही थी कि उनको एक बड़े साइज़ का आदमी[22] मिल गया जो एक पहाड़ के सहारे खड़ा था।

उसको इस तरह खड़े देख कर वह लड़का उससे बोला — "हलो, क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

[22] Translated for the word "Giant".

वह बोला — "मैं तो यहाँ से हिल भी नहीं सकता।"

"पर क्यों?"

"क्योंकि अगर मैं यहाँ से हटा तो यह पहाड़ गिर जायेगा।"

"तो गिर जाने दो।"

वह आदमी उस पहाड़ को एक हाथ से सँभाले हुए उस लड़के की नाव में कूद कर बैठ गया।

पर जैसे ही वह नाव वहाँ से चली उस आदमी का हाथ उस पहाड़ के नीचे से हट गया और वह पहाड़ एक जोर की आवाज के साथ नीचे गिर कर चकनाचूर हो गया।

वह नाव फिर से सड़क और पहाड़ियों पर से होती हुई राजा के महल की तरफ चल दी और आखीर में राजा के महल के सामने आ कर रुक गयी।

वहाँ आ कर वह लड़का नाव में से उतरा — "राजा साहब, यह लीजिये। यह नाव मैंने अपने हाथों से बनायी है। यह जमीन और पानी दोनों पर चल सकती है। अब आप अपने वायदे के मुताबिक अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

राजा उस लड़के को देख कर बहुत ही दुखी हो गया। वह तो ऐसे गरीब लड़के की आशा ही नहीं कर रहा था कि कोई ऐसा गरीब लड़का इतनी अच्छी नाव बना कर लायेगा जो पानी और धरती दोनों पर चल सकेगी और उसको अपनी बेटी की शादी एक ऐसे आदमी से करनी पड़ जायेगी।।

वह यह सब देख कर अपनी मुनादी पर पछताने लगा कि मैंने ऐसी मुनादी पिटवायी ही क्यों। अब उसको अपनी बेटी किसी गरीब को देनी पड़ेगी।

कुछ सोच कर राजा बोला — "ठीक है। मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे करूँगा पर तुमको मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी। मेरी दावत में जो भी मैं तुमको दूँगा वह सारी चीज़ें तुमको और तुम्हारी टीम के लोगों को खत्म करनी पड़ेंगी। तुम उनमें से एक पंख या एक किशमिश भी नहीं छोड़ सकते।"

"ठीक है। यह बताइये कि यह दावत है कब?"

"कल।" और अगले दिन उसने यह सोचते हुए एक हजार चीज़ों की दावत का इन्तजाम किया कि न तो उस लड़के ने इतनी सारी चीज़ें कभी देखीं होंगी और न ही वह अपनी टीम के साथ ये सब चीज़ें खा पायेगा।

सो अगले दिन वह लड़का केवल एक आदमी को साथ ले कर उस दावत में आया। यह वही आदमी था जो भुनी हुई भैंस भुनी हुई चिड़िया की तरह खा रहा था।

लेकिन जब उन सबको खाने का समय आया तो वह तो बस खाता गया, खाता गया, खाता गया। कुछ को चबाते हुए, कुछ को साबुत की साबुत निगलते हुए जब तक कि उसने वहाँ रखी सारी की सारी चीज़ें खत्म नहीं कर लीं।

राजा तो उस आदमी को देखता ही रह गया। फिर उसने ताली बजा कर अपने नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि रसोई में अभी कुछ बचा है क्या?

वे बोले — "थोड़ा सा ही बचा है।"

राजा ने उसको भी वहाँ मँगवा लिया तो नौकर खाने के आखिरी टुकड़े तक को वहाँ ले आये। उस आदमी ने वह सब भी खा लिया।

राजा की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे पर फिर कुछ सोच कर वह बोला — "हाँ अब मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर सकता हूँ पर अभी तो इस खाने के बाद शराब भी पीनी बाकी रह गयी है।

अब मैं तुम्हारे लिये अपने तहखाने में रखी सारी शराब मँगवाता हूँ जिसको तुमको और तुम्हारी टीम को पूरा का पूरा खत्म करना होगा।"

अबकी बार उस लड़के के साथ वह नदी का पानी पीने वाला आदमी आया और उसने देखते देखते राजा की सारी शराब खत्म कर दी। फिर उसने वह शराब भी पी डाली जो राजा ने अपने लिये बचा कर रखी थी।

राजा बोला — "बहुत अच्छे। मैं इस बात के खिलाफ बिल्कुल भी नहीं हूँ कि मैं अपनी बेटी तुमको नहीं दूँगा पर अब दहेज का सवाल है जो उसके साथ जायेगा।

उसके श्रंगार करने की मेज, आलमारियॉ, पलंग, चादरें, कपड़े और घर की बहुत सारी चीज़ें हैं जो मैं उसको दूँगा। वे सब तुमको मेरी बेटी को उन सबके ऊपर बिठा कर एक ही बार में उसी समय ले जानी होंगी।"

लड़का उस आदमी की तरफ देखता हुआ बोला जिसने पहाड़ सॅभाल रखा था — "क्या यह काम तुमको कोई काम लग रहा है?"

वह आदमी बोला — "क्या मुझे यह काम लग रहा है? नहीं, नहीं, यह तो मेरा शौक है।"

सब लोग महल चले गये। लड़के ने सामान लाने वालों से पूछा — "क्या तुम लोग तैयार हो? अगर तैयार हो तो सामान लादना शुरू करो।"

वे लोग कपड़ों की आलमारियॉ लाये, मेजें लाये, जवाहरात के बक्से लाये, और और भी बहुत सारा सामान लाये। सारा सामान ला कर उन्होंने उस आदमी की कमर पर लाद दिया।

उस सामान के ऊपर बैठने के लिये उस राजकुमारी को पहले अपने महल की मीनार पर चढ़ना पड़ा फिर वह उस ढेर पर आ कर बैठी।

जब वह बैठ गयी तो वह बड़ा आदमी चिल्ला कर बोला — "राजकुमारी जी, ज़रा कस कर पकड़ लीजियेगा। मैं अब चलना

शुरू करता हूँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरे चलने के धक्के से आप गिर जायें।"

इतना कह कर वह सब कुछ ले कर नाव की तरफ भाग लिया और कूद कर नाव पर चढ़ गया।

लड़का बोला — "ओ नाव, अब तुम उड़ चलो।" और नाव सड़कों, चौराहों और खेतों के ऊपर से होती हुई उड़ चली।

राजा अपनी बालकनी में खड़ा यह सब देख रहा था। वह चिल्लाया — "उनके पीछे जाओ और उन सबको पकड़ कर जंजीर में बाँध कर ले आओ।"

राजा की फौज उनके पीछे भागी परन्तु नाव के उड़ने से जो धूल का बादल उठा उससे वह उनको देख भी न सकी।

लड़के का पिता अपने छोटे बेटे को उसकी दुलहिन के साथ और पूरी नाव भरे सामान के साथ देख कर बहुत खुश हुआ।

फिर उस लड़के ने दुनियाँ का सबसे सुन्दर महल बनवाया जिसमें एक एक तल्ला उसने अपने पिता, भाइयों और अपने साथियों को रहने के लिये दे दिया और बाकी का महल उसने अपने और अपनी पत्नी के लिये रख लिया।

7 एक बेवकूफ और उड़ने वाला पानी का जहाज़[23]

शादी की ऐसी ही शर्त की एक ऐसी ही लोक कथा और। यह लोक कथा रूस की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पुरानी बात है कि रूस के किसी गॉव में एक किसान अपनी पत्नी और तीन बेटों के साथ रहता था। किसान के दो बड़े बेटे तो बहुत अक्लमन्द थे परन्तु उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे को सभी लोग संसार का सबसे बड़ा बेवकूफ कहते थे।

वह बच्चों की तरह भोला भाला और सीधा था। उसने अपने जीवन में न तो कभी किसी को कष्ट पहुॅचाया था और न ही कभी उसने कोई उतार चढ़ाव देखा था।

किसान पति पत्नी को अपने दोनों बड़े बेटों से तो बड़ी बड़ी आशाऐं थीं परन्तु उस बेवकूफ को तो अगर रोटी भी मिल जाये तो उसकी खुशकिस्मती। पर कभी कभी आदमी सोचता कुछ और है और होता कुछ और है। कैसे? यह एक ऐसी ही कहानी है।

एक दिन रूस के राजा ज़ार[24] ने अपने राज्य में दूर दूर तक यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि वह अपनी बेटी किसी ऐसे आदमी को देगा जो उसे उड़ने वाला जहाज़ ला कर देगा। उस जहाज़ को समुद्र में

[23] A Fool and a Flying Ship – a folktale from Russia, Asia
[This folktale has been given in the Book "Russian Folk-Tales" also with the title "The Flying Ship". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.]
[24] Tzar or Tsar – pronounced as "Zaar". Tzar was the title of the emperors of Russia before 1917.

भी चलना चाहिये और आसमान में उड़ने के लिये उसके पंख भी होने चाहिये।

यह सन्देश किसान के बेटों ने भी सुना तो उसके दोनों अक्लमन्द बेटों ने सोचा "ज़ार की बेटी से शादी करने का यह हमारे लिये सुनहरा मौका है।" और वे दोनों उसी दिन उड़ने वाले जहाज़ की खोज में चल दिये।

उनके पिता ने उनको आशीर्वाद दिया। अपने कपड़ों में से निकाल कर उन्हें अच्छे अच्छे कपड़े पहनने के लिये दिये।

उनकी माँ ने उनके रास्ते के लिये बढ़िया बढ़िया खाना बना कर रखा। कई तरह के पके गोश्त रखे और मक्का की बढ़िया शराब रखी। जब वे जाने लगे तो वह दूर तक उन्हें छोड़ने भी गयी और तब तक हाथ हिलाती रही जब तक कि वे आँखों से ओझल नहीं हो गये।

इस तरह वे खुशी खुशी अपना भाग्य आजमाने चले। उनके साथ क्या हुआ यह तो पता नहीं क्योंकि अभी तक उनकी कोई खबर नहीं आयी है।

पर जब उस बेवकूफ बेटे ने अपने भाइयों को जाते हुए देखा तो उसका मन भी अच्छे अच्छे कपड़े पहनने, अच्छा खाना खाने तथा अच्छी शराब पीने को करने लगा।

उसने अपनी माँ से कहा — "माँ, मैं भी उड़ने वाले जहाज़ की खोज में जाऊँगा। मुझे भी अच्छा खाना और मक्का की शराब दो। मैं भी ज़ार की बेटी से शादी करूँगा।"

माँ ने उसे झिड़का — "बेवकूफ कहीं का, तुझको क्या आता है। तू तो अगर घर से बाहर भी जायेगा न, तो भालू के चंगुल में फँस जायेगा। और अगर भालू से किसी तरह से बच भी गया तो भेड़िया तुझे खा जायेगा।"

मगर उस बेवकूफ को तो रट लगी हुई थी — "मैं तो जा रहा हूँ माँ मैं तो जा रहा हूँ।"

उसकी माँ उसकी इस रट से परेशान हो गयी तो उसने यही ठीक समझा कि उसको भी उस उड़ने वाले जहाज़ की खोज में भेज दिया जाये ताकि घर में शान्ति रहे।

सो उसने उसके रास्ते में खाने के लिये सूखी काली रोटी के कुछ टुकड़े और पीने के लिये एक थर्मस में पानी रख दिया। वह उसको बाहर तक छोड़ने भी नहीं आयी, उसने उसको घर के दरवाजे से ही विदा कर दिया।

और जैसे ही वह घर से बाहर निकला वह घर का दरवाजा बन्द कर के अपने घर के जरूरी कामों में लग गयी। उस बेवकूफ ने वह थैला अपने कन्धे पर लटकाया और गाता हुआ चल दिया।

उसे इस बात का बहुत दुख था कि उसे उसके भाइयों की तरह उसकी माँ ने अच्छा खाना, मक्का की शराब आदि खाने पीने को नहीं दिया। वह उसको बाहर तक छोड़ने भी नहीं आयी पर फिर भी वह अपनी धुन में गाता हुआ मस्त हो कर चलता चला जा रहा था।

उसको काली रोटी के मुकाबले में सफेद रोल ज़्यादा अच्छे लगते थे मगर यात्रा में सबसे जरूरी बात यह थी कि पास में कुछ खाना होना चाहिये बस, न कि इस बात की कि वह खाना क्या था सो वह उसके पास था ही।

हरी हरी घास, नीले नीले आसमान को देख कर वह खुशी से गाना गाता हुआ आगे बढता जा रहा था कि कुछ दूर जाने पर उसे एक बहुत बूढ़ा दिखायी दिया। उसकी कमर झुकी हुई थी, लम्बी सफेद दाढ़ी थी और आँखें अन्दर को धँसी हुई थीं।

उस बूढे आदमी ने कहा — "नमस्ते बेटा।"

उस बेवकूफ ने भी जवाब दिया — "नमस्ते दादा जी।"

बूढ़े ने पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो बेटा?"

बेवकूफ ने जवाब दिया — "अरे, क्या आपने सुना नहीं कि ज़ार ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवाया है कि जो कोई उसको उड़ने वाला पानी का जहाज़ ला कर देगा उसी से वह अपनी बेटी की शादी करेगा?"

"तो क्या तुम वैसा जहाज़ बनाना जानते हो?"

"नहीं, मैं तो नहीं जानता।"

"तब फिर तुम क्या करोगे?"

"भगवान ही मालिक है।"

"अगर ऐसी बात है तो आओ यहाँ बैठते हैं। साथ साथ कुछ खायेंगे और फिर थोड़ा आराम करेंगे। मैं बहुत थक गया हूँ। लाओ दिखाओ क्या है तुम्हारे थैले में? वही खाते हैं।"

"दादा जी, मेरे पास जो कुछ है वह सब तो मुझे आपको दिखाते हुए भी शर्म आ रही है। हालाँकि वह मेरे लिये तो ठीक है परन्तु किसी मेहमान के लिये ठीक नहीं है।"

"कोई बात नहीं बेटा, हमको भगवान पर भरोसा रखना चाहिये और जो कुछ वह दे उसे ही प्रेम सहित ले लेना चाहिये।"

बेवकूफ ने सकुचाते हुए अपना थैला खोला तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। सूखी काली रोटी के टुकड़ों की जगह उस थैले में ताजा पकाया गया माँस और मुलायम सफेद रोल महक रहे थे।

वही उसने उस बूढ़े आदमी को खाने के लिये दिये तो वह बूढ़ा बोला — "देखा, भगवान अपने सीधे सादे आदमियों को कितना प्यार करता है हालाँकि तुम्हारी माँ तुमको इतना प्यार नहीं करती। उसने तुम्हारा हिस्सा तुमको नहीं दिया पर भगवान तो सबको प्यार करता है। लाओ, अब मक्का की शराब का स्वाद चखा जाये।"

जब उस बेवकूफ ने अपना थर्मस खोला तो उसमें तो पानी की जगह मक्का की बढ़िया शराब निकली। सो उस बेवकूफ और बूढ़े ने उस जंगल में खूब मंगल किया। एक दो गाने भी साथ साथ गाये।

फिर बूढ़ा बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। इसी जंगल में दूर तक चले जाओ और जो तुम्हें सबसे बड़ा पेड़ खड़ा दिखायी दे वहाँ उसके सामने तीन बार क्रास का निशान बनाना।

फिर अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उसे छूना और फिर पीछे की तरफ गिर जाना। और तब तक पैर पसार कर वहीं लेटे रहना जब तक कोई आ कर तुम्हें जगाये नहीं।

तब तुम देखोगे कि तुम्हारे लिये उड़ने वाला पानी का जहाज़ तैयार है। उसमें बैठ जाना और फिर जहाँ चाहो वहाँ उड़ना। लेकिन एक बात का और खयाल रखना, रास्ते में जो भी तुम्हें मिले तुम उन सबको अपने जहाज़ में जरूर बिठा लेना।"

उस बेवकूफ ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उससे विदा ले कर जंगल की तरफ चल दिया।

आगे जा कर जो उसे सबसे बड़ा पेड़ सबसे पहले दिखायी दिया उसके सामने उसने तीन बार क्रास का निशान बनाया, अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उसे छुआ और फिर पीछे की तरफ पैर पसार कर लेट गया। आँखें बन्द कर लीं और सो गया।

कुछ ही देर में उसको लगा कि कोई उसको उसकी बॉह हिला कर जगा रहा है। वह जाग गया। उसकी कुल्हाड़ी उसके पास ही पड़ी थी।

अब वह बड़ा पेड़ तो वहॉ से गायब हो गया था और उसकी जगह एक छोटा सा जहाज़ उड़ने के लिये तैयार खड़ा था।

उस बेवकूफ ने कुछ भी नहीं सोचा विचारा और तुरन्त ही जहाज़ में कूद कर बैठ गया। उसके बैठते ही जहाज़ उठा और पेड़ों के ऊपर से हो कर उड़ चला।

यह जहाज़ उसी तरह आसमान में भी उड़ रहा था जैसे पानी में चलता है। उड़ते उड़ते उसने देखा कि एक आदमी ने पानी से भीगी जमीन पर कान लगा रखा है। वह बेवकूफ ऊपर से ही चिल्लाया — "नमस्ते चाचा जी, आप यहॉ क्या कर रहे हैं?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "नमस्ते बेटा, दुनियॉ में क्या हो रहा है मैं वही सब सुनने की कोशिश कर रहा हूँ।"

"आप मेरे जहाज़ में आ जाइये।"

वह आदमी भी उड़ने वाले पानी के जहाज़ में बैठना चाहता था सो वह भी उस जहाज़ में बैठ गया और वे दोनों गाना गाते गाते उड़ चले।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक टॉग से चल रहा है और दूसरी टॉग उसने अपने गले से बॉधी हुई है।

बेवकूफ ने उससे पूछा — "नमस्ते बड़े चाचा जी, आप इस तरह एक टॉग पर कूद कूद कर क्यों चल रहे हैं?"

उस आदमी ने कहा — "बेटा, अगर मैं अपनी दूसरी टॉग भी खोल दूँ तो मैं सारी दुनियॉ को एक छलॉग में नाप सकता हूँ।"

बेवकूफ ने कहा — "आइये, तो मेरे साथ मेरे जहाज़ में आ जाइये।" वह आदमी उस जहाज़ में बैठ गया और वे सब फिर गाना गाते हुए चले।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी बन्दूक लिये खड़ा है और निशाना साध रहा है। लेकिन वह निशाना किस पर लगा रहा है यह उनको पता नहीं चल सका।

वह बेवकूफ ऊपर से ही चिल्लाया — "नमस्ते मामा जी, आप किस पर निशाना लगा रहे हैं? मुझे तो आस पास कोई चिड़िया भी नजर नहीं आ रही।"

वह आदमी बोला — "अगर कोई ऐसी चिड़िया ऐसी हुई जो तुम्हें नजर आ गयी तो मैं उसे अपनी बन्दूक का निशाना नहीं बनाऊँगा। जो चिड़िया या जानवर यहॉ से हजारों मील दूर है वही मेरा निशाना है।"

बेवकूफ ने कहा — "आइये, तो आप हमारे साथ आ जाइये।" वह आदमी भी सबके साथ उस जहाज़ में बैठ गया और वे सब लोग फिर ज़ोर ज़ोर से गाना गाते हुए उड़ चले।

आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक बोरा भरी डबल रोटी लिये उदास बैठा है। जहाज़ को नीचे उतारते हुए उस बेवकूफ ने कहा — "नमस्ते बड़े मामा जी, आप इतने उदास क्यों हैं?"

"मुझे खाने के लिये डबल रोटी चाहिये बहुत भूख लगी है।"

"मगर आपकी पीठ पर तो पूरे का पूरा बोरा बँधा है डबल रोटी का।"

"इतना थोड़ा सा? यह तो मेरा एक कौर भी नहीं है।"

"अच्छा तो आइये मेरे साथ मेरे जहाज़ में बैठ जाइये।" वह आदमी भी उस जहाज़ में बैठ गया और उन सबके गाने की आवाज और तेज़ हो गयी।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक झील के चारों ओर चक्कर काट रहा है। बेवकूफ बोला — "नमस्ते ताऊ जी, आप क्या खोज रहे हैं?"

"बेटा, मुझे पीने के लिये कुछ चाहिये पर मुझे पानी नहीं दिखायी दे रहा है।"

"मगर आपके सामने तो पानी की झील भरी पड़ी है, आप उसमें से पानी पी लीजिये।"

"क्या? यह पानी? यह पानी तो मेरा गला तर करने के लिये भी काफी नहीं है।"

"अच्छा तो फिर आप मेरे साथ बैठ कर मेरे इस जहाज़ की सैर करें।" और वह आदमी भी उस जहाज़ में बैठ गया और फिर वे सब कोरस गाते हुए आगे बढ़े।

उड़ते उड़ते उन्होंने देखा कि एक आदमी जंगल की तरफ लकड़ी का गट्ठर लिये जा रहा है। उस बेवकूफ ने उससे पूछा — "बड़े ताऊ जी नमस्ते, आप यह लकड़ी जंगल की तरफ क्यों लिये जा रहे हैं?"

वह आदमी बोला — "बेटा, यह कोई साधारण लकड़ी नहीं है। अगर इस लकड़ी को चारों तरफ बिखेर दिया जाये तो लकड़ी के हर टुकड़े से एक भारी सेना निकल आयेगी।"

बेवकूफ बोला — "तो फिर आइये और हमारे जहाज़ में सैर कीजिये।" और वह आदमी भी जहाज़ में चढ़ गया और जहाज फिर से गाते हुए लोगों को ले कर उड़ चला।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक बोरे में भूसा भर कर लिये जा रहा है। बेवकूफ ने जहाज पास लाते हुए उस आदमी से पूछा — "नमस्ते छोटे चाचा जी, आप यह भूसा कहाँ ले जा रहे हैं?"

"गॉव को।"

"क्यों क्या गॉव में भूसे की कमी हो गयी है?"

"नहीं नहीं, यह कोई मामूली भूसा नहीं है। यह करामाती भूसा है। अगर इस भूसे को किसी गर्म जगह पर फैला दिया जाये तो उसी समय वहॉ ठंडा होना शुरू हो जायेगा और बर्फ जमनी शुरू हो जायेगी।"

"आहा, तो आइये, मेरे जहाज़ में आपके लिये बहुत जगह है।"

"बड़ी कृपा होगी।" कह कर वह भी जहाज़ में बैठ गया और वह जहाज़ गाती हुई टोली को ले कर फिर आगे बढ़ चला।

उसके बाद उन्हें और कोई नहीं मिला और वे धीरे धीरे ज़ार के महल के ऊपर पहुँच गये। वहॉ पहुँच कर वे नीचे उतरे और अपने जहाज़ का लंगर डाल दिया।

ज़ार उस समय शाम का खाना खा रहा था। उसने उनके गानों की तेज़ आवाजें सुनी तो खिड़की से झॉका तो देखता क्या है कि एक उड़ने वाला पानी का जहाज़ उसके महल के कम्पाउंड में खड़ा है।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और यह जानने के लिये बाहर भेजा कि यह उड़ने वाला जहाज़ कौन ले कर आया है और कौन ये खुशी के गाने गा रहा है।

नौकर कम्पाउंड में आ कर जहाज़ को आश्चर्य से देखने लगा। उसने यह भी देखा कि जहाज़ में बैठे सभी आदमी बहुत ज़ोर ज़ोर से हॅसी मजाक कर रहे थे।

पर वे सभी साधारण किसान और मजदूर जैसे लग रहे थे सो वह बिना कोई सवाल पूछे ही वापस लौट गया और ज़ार को बताया कि उस जहाज़ में कोई भी भला आदमी नहीं था बल्कि सभी किसान और मजदूर जैसे लोग थे।

ज़ार को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था कि वह अपनी एकलौती बेटी को किसी गॅवार किसान के पल्ले बॉध दे सो वह सोच में पड़ गया कि किस तरह इन लोगों से छुटकारा पाया जाये।

उसने सोचा कि "मैं इनको कोई ऐसा काम दे देता हूँ जो ये कर ही न सकें और अपनी जान की भीख मॉगते नजर आयें। इस तरह मैं अपनी बेटी की शादी इन गॅवारों से करने से भी बच जाऊॅगा और मुझे यह जहाज़ भी मुफ्त में मिल जायेगा।"

ऐसा सोच कर ज़ार ने अपने एक नौकर को बुलाया और उस बेवकूफ के पास जा कर उससे यह कहने को कहा कि "ज़ार इस समय खाना खा रहे हैं। ज़ार के खाना खत्म होने से पहले तुम्हें अमृत जल लाना होगा।"

अब जिस समय ज़ार यह सब अपने नौकर से कह रहा था वह तेज़ सुनने वाला यह सब सुन रहा था।

जब उसने यह बात उस बेवकूफ को बतायी तो बेवकूफ तो यह सुन कर परेशान हो गया "अब मैं क्या करूॅ? ज़ार के खाना खत्म होने से पहले तो क्या मैं तो सौ साल में भी वह जल नहीं खोज

सकता और ज़ार को वह जल अपना खाना खत्म होने से पहले ही चाहिये।"

पर तेज़ चलने वाला बोला — "तुम चिन्ता न करो मेरे दोस्त। मैं करूँगा तुम्हारा यह काम।"

इतने में ज़ार का नौकर आया और उसने उस बेवकूफ को ज़ार का हुक्म सुनाया। बेवकूफ लापरवाही से बोला — "ज़ार को बोलो उसका यह काम हो जायेगा।"

ज़ार के नौकर को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस लड़के पर तो इस बात का कोई असर ही नहीं हुआ पर फिर वह वहाँ से चला गया।

तेज़ चलने वाले ने अपना दूसरा पैर अपनी गर्दन से खोला और एक अँगड़ाई ले कर भाग लिया। वह तो तुरन्त ही आँखों से ओझल हो गया।

हमारे कहने में देर हो सकती है, पर उसके अमृत जल को लाने में देर नहीं हो सकती।

पलक झपकते ही उसने शीशी में अमृत जल भरा और सोचने लगा "मैं तो तुरन्त ही पहुँच जाऊँगा इसलिये मैं ज़रा यहाँ आराम कर लेता हूँ।" सो वह पास में लगी एक हवाई चक्की के पास बैठ गया और सो गया।

शाही खाना खत्म होने वाला था और उस तेज़ चलने वाले का कोई पता नहीं था। उस समय जहाज़ में न कोई गाना गा रहा था

और न कोई हॅस रहा था। सभी अमृत जल का इन्तजार कर रहे थे।

इतने में तेज़ सुनने वाला जहाज़ से कूदा और गीली जमीन पर कान रख कर सुनता हुआ बोला — "यह भी क्या आदमी है। जनाब हवाई चक्की के नीचे सो रहे हैं। मुझे उसके खर्राटों की आवाज साफ सुनायी पड़ रही है। उसके सिर के पास एक मक्खी भी भिनभिनाती भी सुनायी पड़ रही है।"

निशानेबाज बोला — "मैं आया।" और वह तुरन्त ही जहाज़ के ऊपर खड़ा हो कर अपनी बन्दूक सॅभालने लगा। उसने मक्खी का निशाना साधा और बन्दूक चला दी।

बन्दूक की गोली की आवाज से वह तेज़ चलने वाला जाग गया और पल भर में जहाज़ पर हाजिर हो गया।

बेवकूफ ने उससे अमृत जल ले कर ज़ार के नौकर को दे दिया और नौकर उसे ज़ार के पास ले गया। ज़ार अभी खाना खा ही रहा था इसलिये उसकी यह इच्छा पूरी हुई।

ज़ार ने सोचा "ये किस तरह के किसान हैं कि इन्होंने यह इतना मुश्किल काम कर लिया? अब इनको कोई दूसरा मुश्किल काम दिया जाये।"

उसने अपने नौकर को फिर बुलाया और जहाज़ के कप्तान को यह कहने को कहा — "अगर तुम इतने ही चतुर हो तो तुम्हारी भूख भी ज़्यादा होनी चाहिये। तुमको और तुम्हारे दोस्तों को एक

बार में बानवे भुने बैल तथा चालीस भट्टियों में जितनी डबल रोटी बनायी जा सकती हैं वह सब खानी होंगी।"

तेज़ सुनने वाले ने यह सन्देश सुना और बेवकूफ को बताया तो वह बेवकूफ अपना सिर पकड़ कर बैठ गया और बोला — "मैं तो एक बार में पूरी एक डबल रोटी भी नहीं खा सकता तो चालीस भट्टियों में बनी डबल रोटी कैसे खा पाऊँगा?"

ज़्यादा खाने वाले ने कहा — "तुम केवल अपनी ही भूख की ही चिन्ता क्यों कर रहे हो? मेरी भूख की चिन्ता क्यों नहीं कर रहे? तुम केवल अपनी ही चिन्ता न करो भाई मेरा भी तो कुछ खयाल करो।

वह सब तो मेरे लिये एक कौर के समान है। आज खाने की जगह पर कुछ नाश्ता ही सही। यह भी मेरे लिये खुशी की बात होगी।"

इतने मे ज़ार का नौकर आया और उसने ज़ार का सन्देश सुनाया तो बेवकूफ ने कहा — "ठीक है ठीक है, तुरन्त खाना ले आओ फिर सोचेंगे कि हमें क्या करना है।"

कुछ ही देर में बानवे भुने साबुत बैल और चालीस भट्टियों में पकी डबल रोटी वहाँ हाजिर थी। सभी साथियों के बैठते बैठते ही उस ज़्यादा खाना खाने वाले ने काफी खाना खत्म कर दिया।

ज़्यादा खाना खाने वाले ने उस नौकर से कहा — "यह क्या भाई? अगर तुमने खाना खिलाने के बारे में सोचा ही था तो ठीक से

खाना खिलाना चाहिये था। यह तो मेरा नाश्ता भी नहीं हुआ। चलो हम भी याद रखेंगे कि ज़ार के महल में हमें खाना नहीं मिला।"

ज़ार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना सारा खाना उन सभी ने कैसे खा लिया पर वह भी अभी हार मानने वाला नहीं था। फिर उसने उस बेवकूफ को चालीस बैरल[25] जिनमें हर एक बैरल में चालीस बालटी शराब थी, पीने के लिये कहा।

तेज़ सुनने वाले ने फिर यह सन्देश बेवकूफ को बताया तो वह बोला — "मैंने तो आज तक अपने जीवन में एक बार में एक बालटी से ज़्यादा शराब कभी नहीं पी फिर ये चालीस बैरल... ।"

ज़्यादा पीने वाले ने कहा — "दुखी न हो मेरे दोस्त, यह काम तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। आज मुझे थोड़ी सी शराब पीने का मौका मिला है तो उसे क्यों गॅवाया जाये।"

ज़ार के नौकरों ने चालीस बैरल ला कर रखे और हर बैरल में चालीस बालटी शराब थी। वह प्यासा आदमी चालीस घूँटों में ही वह सारी शराब पी गया और बोला — "बस, इतनी सी शराब? मैं तो अभी भी प्यासा हूँ।"

---

[25] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter – see its picture above.

यह सब देख कर ज़ार ने अपने नौकरों से कहा कि वे उसको जा कर कहें — "अब उस बेवकूफ से कहो कि वह शादी के लिये तैयार हो जाये। उसको स्नान घर दिखा दो ताकि वह ताजा हो सके। मगर उस कमरे में जो लोहे का टब है उसे खूब गर्म लाल कर दो ताकि जैसे ही वह उसमें वह पैर रखे वह मर जाये।"

तेज सुनने वाले ने ज़ार का यह सन्देश ज्यों का त्यों उस बेवकूफ को सुना दिया। बेवकूफ के पैरों तले तो जमीन ही खिसक गयी और सारा हॅसी मजाक रुक गया।

भूसे वाला आदमी बोला — "क्या हुआ दोस्त, चिन्ता क्यों करते हो, मैं किस दिन काम आऊॅगा?"

राजा के नौकरों ने नहाने के टब को खूब गर्म किया और सोचा कि अब तो यह बेवकूफ मर ही जायेगा मगर उस भूसे वाले आदमी ने बेवकूफ के अन्दर जाते ही अपना कुछ भूसा उस टब के अन्दर फैला दिया और कुछ पलों में ही उस टब का उबलता पानी बर्फ जैसा ठंडा हो गया।

वे लोग भट्टी के ऊपर ही आराम से कॉपते हुए लेटे रहे। सुबह को नौकरों ने दरवाजा खोला तो उन्होंने देखा कि बेवकूफ और उस का साथी भट्टी पर लेटे गाना गा रहे हैं।

उन्होंने जा कर जब यह ज़ार को बताया तो ज़ार बहुत गुस्सा हुआ और मुट्ठियॉ भींच कर बोला — "ओह, मैं तो इस आदमी से तंग आ गया। लगता है मैं इससे नहीं जीत सकता।

आखिरकार मुझे अपनी बेटी इसको देनी ही होगी पर उससे जा कर बोलो कि अगर वह मेरी बेटी से शादी करना ही चाहता है तो उसे कम से कम मेरी बेटी की रक्षा का साधन, यानी सेना, तो रखनी ही चाहिये न।"

तेज़ सुनने वाले ने ज़ार की यह बात उस बेवकूफ को बतायी तो बेवकूफ बोला — "दोस्तो, कई बार आप सबकी सहायता से मैंने अपनी मुश्किलों को दूर किया है पर अबकी बार लगता है कि मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा।"

लकड़ी के गट्ठर वाला आदमी बोला — "तुम कैसे आदमी हो? मुझे तो तुम भूल ही गये। इस छोटे से काम के लिये मैं हाजिर हूँ।"

ज़ार के नौकरों ने जब बेवकूफ को ज़ार का हुक्म सुनाया तो वह बेवकूफ बोला — "अच्छा, अच्छा, सुन लिया। मगर अपने राजा से कहना कि अगर अबकी बार उसने अपनी बेटी की शादी मुझसे नहीं की तो मैं उसकी बेटी को जबरदस्ती उठा कर ले जाऊँगा।"

नौकर ने उस बेवकूफ का यह सन्देश भी जा कर ज़ार को दे दिया और इधर जहाज पर सभी हँसने और गाने लगे। रात को जब सब सो गये तो वह आदमी अपनी लकड़ियाँ ले कर इधर उधर गया और उनको फैला दिया।

जैसे ही वह कोई लकड़ी रखता वैसे ही वहाँ एक बड़ी सेना प्रगट हो जाती। कोई भी उन सेनाओं के सिपाहियों को नहीं गिन

सकता था। उन सेनाओं में पैदल तथा कई प्रकार के बन्दूक वाले सिपाही सुन्दर नयी चमकीली पोशाक पहने खड़े थे।

सुबह को जब ज़ार उठा और उसने खिड़की से झॉका तो अपने आपको एक बहुत बड़ी सेना से घिरा हुआ पाया। वह बेवकूफ उस सेना का सेनापति था जो अपने जहाज में बैठा हॅसी मजाक कर रहा था।

अबकी बार डरने की बारी ज़ार की थी। तुरन्त ही उसने अपने नौकरों के हाथ बेवकूफ को हीरे जवाहरात तथा वेशकीमती पोशाकों की भेंट भेजी और अपनी बेटी की शादी के लिये उसको निमन्त्रित किया।

उस बेवकूफ ने भी अपने सबसे सुन्दर कपड़े पहने और राजकुमारी के सामने राजकुमार बन कर आ खड़ा हुआ।

राजकुमारी तो उसको देखते ही मोहित हो गयी। ज़ार और उसकी पत्नी दोनों ही उस बेवकूफ को अपना दामाद[26] बना कर खुश थे। उसी दिन उन दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी से रहने लगे।

[26] Translated for the word “Son-in-Law” – means the husband of one’s daughter.

8 स्पेन का राजा और अंग्रेज मीलौर्ड[27]

एक राजा ने अपने बेटे को उसकी अठारहवीं सालगिरह पर अपने पास बुलाया और कहा — "बेटा समय निकलता जा रहा है। मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। अगर हम मर गये तो हमारा राज्य कौन सँभालेगा इसलिये तुम अब शादी कर लो।"

बेटे को पिता के ये शब्द कुछ बहुत ज़्यादा अच्छे नहीं लगे सो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, इस बात को सोचने के लिये अभी हमारे पास बहुत समय है।"

पर राजा उसको इस बात का इशारा करता ही रहा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये जब तक कि उसके बेटे ने ही उसको यह कहते हुए चुप नहीं कर दिया — "पिता जी, समझने की कोशिश करिये। मैं तभी शादी करूँगा जब मुझे कोई ऐसी लड़की मिलेगी जो रिकोटा चीज़[28] की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।"

यह सुन कर राजा ने अपने सलाहकारों को बुलाया और कहा — "मुझे तुम लोगों को यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि राजकुमार शादी के लिये राजी हो गया है।

[27] The King of Spain and the English Milord – a folktale from Italy from its Palermo area. Translated from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated in English by George Martin in 1980.
[28] Ricotta cheese is kind of processed Paneer of India. It is used in western countries in various ways.

वह उस लड़की से शादी करेगा जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो। आप लोगों की क्या राय है?"

अक्लमन्द सलाहकार बोले — "मैजेस्टी, आप अपने कुछ दरबारियों को चुनिये और उनको एक चित्रकार, कुछ घोड़ा गाड़ी हॉकने वाले, नौकर और और भी जो कुछ उन्हें चाहिये दे दीजिये और उनको दुनियॉ भर में ऐसी लड़की ढूँढने के लिये भेज दीजिये जो रिकोटा चीज़ की तरह से सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।

एक साल बाद राजकुमार से कहिये कि वह उनमें से जो भी उसको सबसे अच्छी लड़की लगे वह उससे शादी कर ले।"

सो राजा ने अपने दरबार से कुछ अच्छे दरबारी चुने और उनको एक चित्रकार, कुछ घोड़ा गाड़ी हॉकने वाले और कई नौकर दे कर ऐसी लड़की ढूँढने के लिये बाहर भेज दिया जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो।

एक आदमी एक राज्य गया दूसरा दूसरे राज्य गया। इस तरह वे सब पूरी दुनियॉ के कई राज्यों में गये।

उनमें से एक आदमी स्पेन गया जहॉ जा कर उसने सबसे पहला काम यह किया कि वह एक कैमिस्ट के पास रुका और उससे बात

करने लगा। बातों बातों में वे दोनों दोस्त बन गये। कैमिस्ट ने पूछा — "जनाब आप कहॉ से आते हैं?"

उस आदमी ने कहा — "हम एक ऐसी लड़की की तलाश में हैं जो रिकोटा चीज़ की तरह सफेद हो और गुलाब की तरह से गुलाबी हो। क्या इधर ऐसी कोई लड़की है?"

कैमिस्ट बोला —"ओह अगर तुम ऐसी ही किसी लड़की की तलाश में हो तो यहॉ एक बहुत ही सुन्दर लड़की है। वह बिल्कुल रिकोटा चीज़ की तरह सफेद है और गुलाब की तरह से गुलाबी है। पर उसको देखना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि वह कभी बाहर नहीं निकलती।

मैंने उसको खुद ही कभी नहीं देखा और जो भी मैं कुछ तुम्हें बता रहा हूॅ वह भी बस सुनी सुनायी ही बता रहा हूॅ। वह ऐसे लोगों की बेटी है जो केवल अन्दर ही अन्दर रहते हैं इसलिये तुम उसको कभी बाहर नहीं देखोगे।"

"तो फिर हम उसे देखें कैसे?"

"मैं कोई तरीका निकालता हूॅ जिससे तुम उसे देख सकोगे।"

कह कर कैमिस्ट उस लड़की की मॉ के पास गया और उससे कहा — "मैम, मेरी दूकान पर एक चित्रकार खड़ा है जो दुनियॉ की बहुत सुन्दर लड़कियों की तस्वीरें बनाने के लिये निकला हुआ है। वह आपकी बेटी की तस्वीर बनाना चाहता है, अगर आप उसको

इजाज़त दें तो। वह आपको इसके लिये चालीस सोने के क्राउन[29] देगा।"

मॉ को पैसे की बहुत जरूरत थी सो वह अपनी बेटी के पास गयी और उसको यह सौदा मंजूर करने के लिये कहा। लड़की मान गयी। चित्रकार राजा के दरबारी के साथ आया। तीनों उसे देख कर बोल पड़े "ओह यह तो कितनी सुन्दर है।"

चित्रकार ने उसकी तस्वीर बनायी। उसने उस तस्वीर को कैमिस्ट की दूकान पर पूरा किया और राजा के दरबारी ने उसको सोने के फ्रेम में जड़वा दिया। उसने उस तस्वीर को अपने गले में लटकाया और राजा के सामने पहुॅचा।

यही वह समय था जब सबको वैसी लड़कियों की तस्वीरें ले कर राजा के पास पहुॅचना था सो राजा के और दरबारी भी वैसी ही तस्वीरें ले कर वहॉ आ गये। सब एक बड़े कमरे में अपनी अपनी गर्दनों में अपनी अपनी लायी तस्वीरें लटका कर खड़े हुए थे।

राजकुमार ने सब तस्वीरें देखीं तो वह स्पेन वाली लड़की की तस्वीर के सामने रुक गया और बोला — "अगर इस लड़की का चेहरा ऐसा ही है जैसा इस चित्रकार ने बनाया है तो यह लड़की वैसी ही है जैसी कि मैं चाहता हूॅ।"

[29] Crown was the then currency in Europe.

राजा का दरबारी बोला — "अगर यह चेहरा आपको खुश नहीं करता तो फिर आपको कोई और चेहरा कभी खुश नहीं कर सकता।"

राजा का वह आदमी उस लड़की को लाने के लिये दरबार से स्पेन वापस भेज दिया गया। लड़की आयी तो उसको पहले चार महीने महल में रानियों जैसा व्यवहार सीखने के लिये रखा गया।

वह लड़की काफी होशियार थी तो उसने वह सब बहुत जल्दी ही सीख लिया। उसके बाद उसकी शादी एक नकली राजकुमार से कर दी गयी और फिर उसके बाद वह असली राजकुमार के घर आयी।

उसको इतने धार्मिक ढंग से पालने पोसने के लिये उसकी मॉ की बहुत तारीफ की गयी और उस कैमिस्ट को भी इस लड़की के चुनाव में हिस्सा लेने के लिये काफी इनाम दिया गया।

राजकुमार अपने घोड़े पर चढ़ कर उस लड़की से मिलने के लिये पहुॅचा। जब वे मिले तो राजकुमार अपने घोड़े से उतरा और उसकी गाड़ी में बैठ गया। ज़रा सोचो तो कि वे लोग कितने खुश थे।

रानी मॉ ने भी उसको बहुत पसन्द किया। उसने अपने बेटे के कान में फुसफुसाया — "तुमने अपने लिये ठीक पत्नी चुनी है। मुझे उसकी ऑखों की पवित्रता बहुत अच्छी लगी।"

और इसमें कोई शक भी नहीं था कि राजकुमारी बहुत ही पवित्र ज़िन्दगी गुजार रही थी। वह अपने कमरे में ही रहती थी और कभी बाहर नहीं निकलती थी।

उसकी रानी मॉ से भी बहुत अच्छी तरह बनती थी और वे दोनों कबूतर के एक जोड़े की तरह से रहती थीं। यह एक अजीब सी बात थी क्योंकि सास बहू तो हमेशा से सभी जगह झगड़ती ही रही हैं।

पर बीलज़ेबूब[30] तो हमेशा ही कुछ न कुछ इधर उधर की सोचता रहता है। सो एक दिन सास ने बहू से कहा — "बेटी तुम सारे समय इस तरह से घर में ही बन्द क्यों रहती हो। कभी ताजा हवा खाने बाहर छज्जे पर भी जाया करो।"

सो सास के हुक्म से राजकुमारी छज्जे पर गयी। इत्तफाक से उसी समय वहॉ से एक अंग्रेज मीलौर्ड[31] गुजर रहा था। उसने जैसे ही ऊपर की तरफ देखा तो फिर उसकी ऑखें तो नीची होना ही भूल गयीं।

राजकुमारी ने भी उसको देखा तो वह तुरन्त ही अन्दर चली गयी और उसने अपनी खिड़की बन्द कर ली। पर उस नौजवान को अब लड़की की शक्ल देखने से रोकने से महल के चारों तरफ

[30] Beelzebub or Beel-Zebub is a contemporary name for the devil. In Christian demonology, he is one of the seven princes of Hell according to Catholic views on Hell.

[31] A European title for a gentleman.

चक्कर काटने से कोई नहीं रोक सका। वह वहाँ अब रोज ही उस घर के चक्कर काटने लगा।

एक दिन एक बुढ़िया उससे भीख माँगने आयी तो उसने उसे डाँट कर भगा दिया — "चली जा यहाँ से ओ बुढ़िया।"

"सरकार क्या बात है?"

"जा न यहाँ से। तुझे क्या मतलब।"

"आप मुझे बताइये तो सरकार। क्या पता मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।"

"बात यह है कि मैं इस राजकुमारी को देखना चाहता हूँ पर देख नहीं पा रहा हूँ।"

"अरे बस यही बात है? आप मुझे एक हीरा जड़ी अंगूठी दीजिये फिर मैं देखती हूँ।"

मीलौर्ड ने तुरन्त ही हीरा जड़ी एक अँगूठी खरीदी और उस बुढ़िया को दे दी। वह उस अँगूठी को ले कर महल में चली गयी। महल के दरवाजे पर महल के चौकीदार ने उसको रोका — "कहाँ जा रही है ओ बुढ़िया?"

बुढ़िया बोली — "मैं राजकुमारी के पास जा रही हूँ। मेरे पास बेचने के लिये एक अँगूठी है जिसे केवल राजकुमारी ही खरीद सकती है।"

राजकुमारी को यह सन्देश भेज दिया गया कि एक बुढ़िया आपको अँगूठी बेचना चाहती है। यह सुन कर राजकुमारी ने उस

बुढ़िया को अन्दर बुला लिया। अँगूठी देख कर उसने बुढ़िया से पूछा — "तुम्हारी इस अँगूठी की क्या कीमत है?"

"तीन सौ काउन मैजेस्टी।"

राजकुमारी बोली — "इस बुढ़िया को तीन सौ काउन दो दो और दस काउन इसको यहाँ इसे लाने के लिये दो दो।"

वह बुढ़िया राजकुमारी से पैसे ले कर अपने हाथ मलती हुई उस मीलौर्ड के पास आयी।

मीलौर्ड ने पूछा — "राजकुमारी ने तुमसे क्या कहा?"

बुढ़िया बोली — "राजकुमारी ने मुझे दस दिन में जवाब देने के लिये कहा है।" कह कर उसने किसी को बिना बताये वे तीन सौ काउन अपने कपड़ों में खोंस लिये और चली गयी।

दस दिन बाद वह मीलौर्ड के पास लौटी और बोली — "मुझे दस दिन हो गये हैं अब मुझे राजकुमारी के पास जाना है। क्या आप चाहते हैं कि मैं उनके पास खाली हाथ जाऊँ? क्या आपको मालूम है कि इस बार आपको क्या करना चाहिये। अबकी बार आपको उनके लिये एक मँहगा हार भेजना चाहिये।"

लौर्ड तो जैसा कि तुम जानते हो बेताज के बादशाह होते हैं सो उस बुढ़िया ने उससे एक बहुत मँहगा हार खरीदवाया और उसे ले कर राजकुमारी के पास चल दी।

राजकुमारी ने उस हार को देख कर कहा "अरे यह तो वाकई बहुत सुन्दर हार है। इसकी क्या कीमत है?"

"एक हजार काउन।"

राजकुमारी बोली — "इस बुढ़िया को एक हजार काउन दे दो और चालीस काउन इसको और दे दो इसे यहाँ तक लाने के लिये।"

बुढ़िया ने वे पैसे लिये और फिर मीलौर्ड के पास आयी।

उसने मीलौर्ड से कहा — "क्या आप विश्वास करेंगे कि अबकी बार उसकी सास भी वहाँ थी इसलिये वह मुझसे बात भी नहीं कर सकी। पर उसने आपकी दी हुई भेंट ले ली है और उसने अगले हफ्ते आपको जवाब देने के लिये कहा है।"

"और अगले हफ्ते तुम उसके लिये क्या भेंट ले जाओगी?"

"सुनिये। आपने उसको एक अँगूठी दे दी है, एक हार दे दिया है। अगली बार हम उसको एक बढ़िया सी पोशाक देंगे।"

सो अगले हफ्ते मीलौर्ड ने राजकुमारी के लिये एक बहुत बढ़िया पोशाक खरीदी और उसको उस बुढ़िया को ले जाने के लिये दी।

अबकी बार बुढ़िया राजकुमारी से बोली — "यह पोशाक मैं बेचने के लिये लायी हूँ। क्या आप इसे खरीदेंगी?"

"यह तो बहुत ही सुन्दर पोशाक है। तुम्हें इसकी क्या कीमत चाहिये?"

"पाँच सौ काउन।"

राजकुमारी ने कहा — "इस बुढ़िया को पॉच सौ काउन दे दो और बीस काउन और दे दो इसको यहॉ तक लाने के लिये।"

बुढ़िया ने वह पैसे लिये और फिर मीलौर्ड के वापस आयी तो मीलौर्ड ने उससे पूछा — "अबकी बार क्या कहा उसने?"

बुढ़िया बोली — "इस बार उसने कहा है कि आप अपने महल में एक नाच का इन्तजाम करें और राजकुमार और राजकुमारी को भी उस नाच में बुलायें और फिर सब कुछ वहीं तय हो जायेगा।"

मीलौर्ड तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने एक बहुत शानदार नाच का इन्तजाम किया और राजकुमार को उसमें आने का बुलावा भेजा।

राजकुमारी ने कहा — "ओह यह तो कितना अच्छा है। एक शानदार नाच। मैं तो वही पोशाक पहनूँगी जो मैंने अभी उस बुढ़िया से खरीदी थी।" पर जब वह नाच में गयी तो उसने वही अँगूठी भी पहनी और वही हार भी पहना जो उसने उस बुढ़िया से खरीदा था।

पहले नाच के लिये मीलौर्ड ने राजकुमारी को नाच के लिये बुलाया और ऑखों ही ऑखों में उसको विश्वास दिलाया कि सब कुछ तैयार था। इसके बाद उसने उसकी तरफ ऑख मारी। पर इस पर राजकुमारी घूमी और जा कर राजकुमार के बराबर अपनी सीट पर आ कर बैठ गयी।

यह सोचते हुए कि शायद राजकुमारी को कुछ और तारीफ की जरूरत थी मीलौर्ड फिर से उसके पास नाच के लिये बुलाने के लिये

गया और एक बार फिर से उसने उसको ऑख मारी। राजकुमारी फिर से अपनी सीट पर वापस गयी और जा कर राजकुमार के पास बैठ गयी।

मीलौर्ड ने उसको तीसरी बार नाच के लिये बुलाया और एक बार फिर ऑख मारी। इस बार राजकुमारी ने उससे पीठ फेर ली।

जब नाच खत्म हो गया तो राजकुमार और राजकुमारी दोनों ने मीलौर्ड से विदा ली और अपने घर चल दिये। मीलौर्ड वहॉ सोचता ही खड़ा रह गया कि यह सब क्या हो गया।

"हालॉकि उसने वही पोशाक, ऍगूठी और हार पहना हुआ था पर फिर भी उसने मेरे साथ नाचने से मना कर दिया। इसका क्या मतलब है?"

उन दिनों कुछ ऐसा रिवाज था कि राजा लोग वेश बदल कर यह जानने के लिये कैफ़े आदि में जाया करते थे कि लोग उनके बारे में क्या बात करते थे और उससे यह पता लगाते थे कि वे उनके बारे में क्या सोचते थे ताकि वे अपना काम ठीक से कर सकें।

ऐसे ही एक कैफ़े में राजकुमार का मीलौर्ड से आमना सामना हुआ। वहॉ मीलौर्ड राजकुमार को उस वेश में पहचान नहीं सका सो वे आपस में बात करने लगे।

एक के बाद एक बात निकलती गयी और मीलौर्ड बोला — "उस बेवकूफ राजकुमारी को देखो। मैंने उसको इतनी कीमती ऍगूठी भेजी और उसने उसको स्वीकार कर लिया।

मैंने उसको इतना कीमती हार भेजा वह भी उसने स्वीकार कर लिया। मैंने उसको इतनी कीमती पोशाक भेजी उसने उसको भी स्वीकार कर लिया।

काश तुम जान सकते कि उन चीज़ों पर मैंने कितना पैसा खर्च किया। फिर उसने मुझसे नाच का इन्तजाम करने के लिये कहा तो मैंने वह भी किया पर वह मुझसे पूरी शाम नहीं बोली।"

यह सुन कर राजकुमार का चेहरा लाल पड़ गया। वह अपने महल वापस लौटा। उसने अपनी तलवार निकाली और अपनी पत्नी को ढूँढने चला।

उसकी माँ वहीं बीच में खड़ी थी वह उन दोनों के बीच में बहू की ढाल बन कर खड़ी हो गयी। अब राजकुमार उसको मार तो नहीं सका पर वह राजकुमारी से गुस्सा बहुत था।

उसने अपने एक जहाज़ के कप्तान को बुलाया और उससे कहा — "इस बेवकूफ को अपने जहाज़ पर बिठाओ और इसको समुद्र में ले जा कर मार दो। इसकी जीभ काट कर उसका अचार डाल कर मुझे ला कर दो और उसके शरीर के बाकी सब हिस्से समुद्र में फेंक दो।"

तब तक उस राजकुमारी का कोई और नाम नहीं था। कप्तान बेचारा उस बदकिस्मत राजकुमारी को जहाज़ में ले चला। उसकी सास बहुत दुखी थी वह बेचारी कुछ बोल ही नहीं पा रही थी सो वे

दोनों एक दूसरे से कुछ कहे बिना ही एक दूसरे से अलग हो गयीं। लोग भी सिवाय रोने के और कुछ नहीं कर पाये।

जहाज़ का कप्तान राजकुमारी को जहाज़ में बिठा कर समुद्र में ले तो गया पर वह उसको मार नहीं सका। उसके पास एक कुत्ता था सो उसने उस कुत्ते को मारा और राजकुमार के लिये उसकी जीभ का अचार बना दिया।

जब कई दिनों बाद उसका जहाज़ जमीन के किनारे लगा तो कप्तान ने राजकुमारी को जमीन पर उतारा और उसके लिये बहुत सारी रसद और कपड़ों का इन्तजाम करके वापस चला गया। राजकुमारी वहॉ अकेली खड़ी रह गयी।

वह वहॉ एक गुफा में रहने लगी। धीरे धीरे उसकी रसद खत्म होने लगी। और एक दिन उसका खाना बिल्कुल ही खत्म हो गया। तभी उसको वहॉ एक लड़ाई का जहाज़ दिखायी दिया। राजकुमारी ने उसको इशारा करके बुलाया।

जब उस जहाज के कप्तान ने किसी को इशारा करते देखा तो उसको लगा कि वहॉ जमीन थी सो वे वहॉ उतर गये। उसने राजकुमारी से पूछा — "मैम, आप यहॉ क्या कर रही हैं?"

राजकुमारी बोली — "मैं एक जहाज़ पर थी कि वह जहाज़ तूफान में फॅस कर नष्ट हो गया और मैं अकेली ही बच गयी।"

"मैं आपको कहॉ छोड़ दूॅ?"

राजकुमारी को याद आया कि राजकुमार का बड़ा भाई ब्राज़ील का राजा था और उसकी सास उसके बारे में बहुत अच्छा बोलती थी सो उसने तुरन्त ही जवाब दिया — "ब्राज़ील। आप मुझे ब्राज़ील छोड़ दें वहॉ मेरे एक रिश्तेदार रहते हैं।"

उस जहाज़ के कप्तान ने उसको जहाज़ पर चढ़ाया और ब्राज़ील की तरफ चल दिया।

ब्राज़ील पहुँचने से पहले राजकुमारी ने कप्तान से कहा — "आप मेरी एक सहायता और कर दें। मैं चाहती हूँ कि मेरे रिश्तेदार मुझे न पहचान पायें इसलिये मैं वहॉ एक आदमी के रूप में जाना चाहती हूँ।"

कप्तान ने उसको आदमी के रूप में बदल दिया। उसके बाल काट दिये ओर उसको आदमियों के कपड़े दिलवा दिये। अपनी सुन्दरता की वजह से अब वह राजकुमारी एक सुन्दर नौकर लगने लगी।

ब्राज़ील में उतर कर राजकुमारी सड़कों पर इधर उधर घूमने लगी। तभी उसको एक वकील का दफ्तर दिखायी दिया। वह उस दफ्तर में गयी और वहॉ जा कर पूछा — "क्या मैं आपके यहॉ एक क्लर्क का काम कर सकती हूँ?"

"ओह हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं तुमको कम से कम क्लर्क तो रख ही सकता हूँ।" और उसने उसको अपने दफ्तर में क्लर्क रख लिया। उसने उसको कुछ काम दिया जो उसने पलक झपकते कर

दिया। वकील तो विश्वास ही नहीं कर सका कि कोई क्लर्क वह काम इतनी जल्दी कर सकता था।

फिर उसने उसको और ज़्यादा कठिन काम दिया। उसको भी उसने जल्दी ही खत्म कर दिया। वह वकील उसकी तारीफ किये बिना न रह सका। उसने उसकी तनख्वाह बारह काउन रोज की निश्चित कर दी।

यह क्लर्क उस वकील को बहुत अच्छा लगा। उस वकील की एक बेटी थी सो उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी की शादी इस नौजवान क्लर्क से कर देता हूँ। उसने यह बात उस क्लर्क से कही भी।

क्लर्क बोला — "जनाब इस मामले को हम लोग अभी कुछ समय के लिये यहीं रोक लें तो अच्छा रहे। पहले मैं अपने काम में थोड़ी सी जानकारी हासिल कर लूँ तब मैं खुद ही आपसे इस बारे में बात करूँगा।"

धीरे धीरे वकील का नौजवान क्लर्क मशहूर होने लगा। एक बार उसको महल में किसी शाही काम के लिये बुलाया गया। वहाँ उसको एक कागज नकल करने के लिये दिया गया तो वह उसने तुरन्त ही कर दिया और बहुत साफ और सही किया।

इस नौजवान के इस काम की बात बादशाह तक पहुँची तो उसने उस क्लर्क को बुलाया। अब यह बादशाह तो इस क्लर्क के पति का बड़ा भाई था।

बादशाह को तो यह क्लर्क पहली नजर में ही बहुत पसन्द आ गया सो उसने उसको अपने महल में ही रख लिया और अपना स्क्वायर[32] बना लिया।

X X X X X X X

अब हम राजकुमारी को यहीं छोड़ते हैं और राजकुमार के पास चलते है। कुछ दिनों बाद जब राजकुमार का गुस्सा ठंडा हो गया तो वह राजकुमारी के साथ किये गये अपने बर्ताव के लिये बहुत पछताया।

"हो सकता है कि वह बेकुसूर हो। ओह प्रिये मैं भी कितना बेवकूफ था जो मैंने तुमको ऐसी सजा दी। अब तुम्हारा यहॉ क्या बचा है। मैंने तो तुमको मरवा ही दिया।"

उसके दिमाग में बार बार इसी तरह के ख्याल आने लगे और वह पागल सा हो गया। यह देख कर रानी मॉ ने अपने बड़े बेटे ब्राज़ील के बादशाह को लिखा "तुम्हारा भाई पागल सा हो गया है और देश की जनता में विद्रोह होने वाला है। सो तुम कुछ समय के लिये यहॉ आ जाओ।"

बादशाह यह पढ़ कर बहुत दुखी हुआ और रो पड़ा। उसने अपने स्क्वायर से कहा — "क्या तुम मेरे भाई के पास जाओगे? मैं

[32] Squire – a Squire is a man of high social standing who owns and lives on an estate in a rural area, especially as the chief landowner in such an area.

तुमको उस राज्य का वायसराय[33] बनाता हूँ और वहाँ राज करने की सारी ताकतें देता हूँ।"

स्क्वायर राजी हो गया। उसने बहुत सारे लोग लिये, दो जहाज लिये और स्पेन चल दिया। जगह दूर थी। जब वह वहाँ पहुँचा तो सभी लोगों के मुँह से निकला — "ओह वायसराय आ गया, वायसराय आ गया।"

उसके स्वागत में तोपें छोड़ी गयीं। रानी खुद उसको लेने आयी जैसे वह उसका बेटा हो। "आइये वायसराय। ओ योर मैजेस्टी के नौकर, और किसी भी काम को करने से पहले आप अपनी जनता से मिल लें।"

सो वायसराय ने सबसे पहले अपनी जनता के ढेर सारे अधूरे काम देखे। जब वे काम पूरे हो रहे थे तो जनता बहुत खुश थी कि उस जैसा वायसराय उनका राजा बन कर आया है।

जब जनता का काफी काम खत्म हो गया तो एक दिन वायसराय ने रानी माँ से कहा — "मैजेस्टी, क्या आप मुझे आप अपनी बहू के बारे में कुछ बतायेंगी कि उसके साथ क्या हुआ था?"

रानी ने शुरू से ले कर आखीर तक उसको सारी कहानी बता दी – राजकुमार के बारे में, राजकुमार की कैफ़े में हुई बातों के बारे

[33] Viceroy – a viceroy is a regal official who runs a country, a colony, or a city province (or state) in the name of and as the representative of the monarch. The term means "in the place of" and in the French it means the king.

में, अपनी बहू के जाने के बारे में, सब कुछ। और यह सब कहते कहते उसकी ऑखें भर आयीं।

वायसराय बोला — "ठीक है। देखते हैं। आप राजकुमार को बुलाइये जिसने आपको यह सब तकलीफें दी हैं।" राजकुमार को बुलाया गया।

वायसराय ने कहा — "मीलौर्ड, यह किसी की ज़िन्दगी और मौत का मामला है इसलिये आप मुझे बतायें कि आपको राजकुमारी के मामले में क्या कहना है।"

राजकुमार ने जितना सच सच वह बता सकता था बिना कुछ जोड़े और बिना कुछ छिपाये उसको सब बता दिया। वायसराय ने पूछा — "पर राजकुमार क्या आपने कभी उससे खुद भी बात की?"

"नहीं।"

"क्या आपने उसको वे भेंटें खुद दीं?"

"नहीं। वे भेंटें उसको एक बुढ़िया ने दी थीं।"

यह सुन कर रानी मॉ तो आश्चर्यचकित रह गयी क्योंकि उसको तो इस बात का पता ही नहीं था। और साथ में राजकुमार भी जो अभी तक आधा पागल सा था।

"क्या वह बुढ़िया जिसने वे भेंटें राजकुमारी को दी थीं अभी ज़िन्दा है या मर गयी?"

"शायद वह अभी भी ज़िन्दा होगी।"

वायसराय ने हुक्म दिया कि राजकुमार को एक कमरे में बिठा दिया जाये और उस बुढ़िया को बुलाया जाये। सो राजकुमार को एक कमरे में बिठा दिया गया और बुढ़िया को बुलाया गया।

वायसराय ने बुढ़िया से पूछा — "ये जो चीज़ें तुमने राजकुमारी को बेची थी इसके बारे में कुछ बताओ।" बुढ़िया ने उसे सब कुछ बता दिया।

तो वायसराय ने पूछा — "अब यह बताओ कि क्या तुमने राजकुमारी को कोई सन्देश भी दिया था?"

"नहीं, कभी नहीं।"

यह सुन कर राजकुमार अपने होश में आया। वह बुदबुदाया — "ओह प्रिये, तो तुम तो बिल्कुल बेकुसूर थीं। मैंने तुम्हें बेकार ही मार दिया।" कह कर वह फिर रोने लगा।

वायसराय ने उसको तसल्ली दी। "आप शान्त हों राजकुमार। हम इसका कोई इलाज निकालते हैं।"

"इस मामले का इलाज कैसे निकल सकता है क्योंकि वह तो मर चुकी है। ओह प्रिये, मैंने तो तुमको हमेशा के लिये खो दिया है।"

इस पर वायसराय एक परदे के पीछे गया, राजकुमारी की तरह से तैयार हुआ जो कि वह असल में था, अपने कटे हुए बाल फिर से

लगाये, और सास, राजकुमार और दरबार के सामने निकल कर आया।

रानी मॉ उसको देखते ही बोली — "अरे तुम कौन हो?"

"आपकी बहू मॉ जी, आपने मुझे पहचाना नहीं?" पर तब तक तो राजकुमार ने उसको गले ही लगा लिया था।

जब राजकुमारी वायसराय थी बुढ़िया को सजा तो उसने तभी सुना दी थी। उसको फॉसी के तख्ते पर जला कर मार डालना था और मीलौर्ड को उसका गला कटवा कर मरवा दिया गया।

रानी मॉ ने अपने बड़े बेटे को यहॉ का सारा हाल लिखा तो उसने अपने बच्चों से कहा — "अरे बच्चों ज़रा देखो तो। मेरी छोटे भाई की बहू मेरी सेक्रेटरी थी और मुझे पता भी नहीं चला।"

वे दोनों कप्तान जिसने राजकुमारी की जगह अपना कुत्ता मारा था और जिसने उसको ब्राज़ील पहुॅचाया दोनों को दरबारियों में शामिल कर के तरक्की दे दी गयी। सारे नाविकों को उनकी टोपियों मे लाल फुॅदने लगवा दिये गये।

9 राजकुमार और सेब[34]

यह एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है जो पश्चिमी यूरोप की लोक कथाओं से ली गयी है।

पुरानी बात है कि यूरोप का एक राजकुमार किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके सेब जैसे लाल लाल गाल हों, सेब के बीज जैसी कत्थई ऑखें हों और सेब के रस जैसा मीठा स्वभाव हो।

लेकिन ऐसी लड़की उसके राज्य में कोई थी नहीं इसलिये वह ऐसी लड़की की खोज में दूसरे देशों को चल दिया।

वह घोड़े पर सवार था। तीन दिन और तीन रात की लगातार सवारी के बाद वह एक ऐसी जगह जा पहुँचा जहॉ छोटी छोटी झाड़ियों की एक कतार लगी थी। उस कतार में एक झाड़ी के नीचे एक बालों वाली टॉग बाहर निकली हुई थी। वह वहॉ रुक गया। तभी उसने एक आवाज सुनी — "मेरी बदकिस्मती, मैं यहॉ चिपक गया हूँ।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो?"

वही आवाज फिर बोली — "मेरी टॉग खींचो तभी तुमको पता चलेगा कि मैं "मैं" हूँ।"

[34] A Prince and the Apple – a folktale from Western Europe

"अच्छा" कह कर राजकुमार ने ज़ोर लगा कर वह टॉग खींची तो एक छोटा आदमी जिसका शरीर गोल था और वह लाल और हरे रंग के कपड़े पहने था, बाहर निकल आया। उसने राजकुमार को धन्यवाद दिया।

राजकुमार ने पूछा — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई पर तुम इन झाड़ियों में क्यों पड़े थे यह तो बताओ।"

वह आदमी बोला — "एक राक्षस ने मेरी बेटी को चुरा लिया है। जैसे ही उसने मेरी बेटी को यहॉ आ कर पकड़ा तो मैं डर कर यहॉ छिप गया।"

राजकुमार ने पूछा — "तो क्या वह तुम्हारी बेटी को ले गया है?"

"हॉ, उसने उसको अपनी एक उॅगली और अॅगूठे के बीच में दबाया और ले उड़ा। मैं तो बिल्कुल गूॅगा सा हो गया। मैं तो खॉस भी न सका।"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह उसे किस तरफ ले गया है।"

"वह उसे भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार ले गया है।" ऐसा उस छोटे आदमी ने राजकुमार को बताया।

राजकुमार ने दोहराया — "भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार। मैं तुरन्त ही जाऊँगा और तुम्हारी बेटी को ले कर आऊँगा। मगर वह है कैसी?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "गाल उसके सेब जैसे लाल हैं, ऑखें उसकी सेब के बीज जैसी कत्थई हैं और स्वभाव उसका सेब के रस जैसा मीठा है। अगर तुम.... ।"

यह सुनते ही राजकुमार को इन्तजार कहॉ? वह तो यह जा और वह जा। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो गया और दौड़ चला।

वह हवा की गति से भागा जा रहा था कि एक कुत्ते का घर आया। कुत्ता अपने घर से निकल कर भौंकने लगा — "राजकुमार राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

कुत्ता बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। पहले मुझे हड्डी दो तभी मैं तुमको जाने दूँगा।"

राजकुमार बोला — "तुम भूखे हो तो मेरे पास हड्डी तो नहीं है पर मेरा खाना तुम ले सकते हो। यह लो कुछ रोटियॉ।" कह कर राजकुमार ने उसे अपनी रोटियॉ दे दीं।

कुत्ते ने खुशी से वह रोटियॉ खाईं और राजकुमार से बोला — "जाओ राजकुमार, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो मगर याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा वह सेब उठा लेना।"

राजकुमार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और कुत्ते के ऊपर से छलॉग लगा दी। हवा की गति से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ वह जादूगरनी के घर के पास आया।

जादूगरनी ने पूछा — "राजकुमार राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

जादूगरनी ने कहा — "मुझे सोने के लिये एक कम्बल चाहिये तभी मैं तुम्हें जाने दूँगी।"

राजकुमार बोला — "तुम थकी हुई हो। मेरे पास कम्बल तो नहीं है पर मेरे पास यह मखमली कोट है यह तुम ले सकती हो, यह लो।" यह कह कर राजकुमार ने उसे अपना लम्बा मखमली कोट दे दिया।

उसने वह लम्बा कोट अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया और बोली — "अब तुम जा सकते हो राजकुमार। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो। पर हॉ याद रखना, अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार जादूगरनी के मकान के ऊपर से छलॉग लगाता हवा की सी तेजी के साथ फिर उस लड़की की खोज में चल दिया। और अब आया वह खाई के पार एक बड़े दरवाजे के पास।

"चीं चीं चीं चीं, राजकुमार तुम कहॉ जा रहे हो?" दरवाजे ने पूछा।

"मैं? मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।" राजकुमार ने कहा।

"चीं चीं चीं चीं, पहले मेरे कब्जों[35] में तेल लगाओ तभी मैं तुम्हें यहॉ से जाने दूॅगा।" दरवाजे ने कहा।

राजकुमार बोला — "ओह, तुम्हारे कब्जों में तो जंग लगी है। मेरे पास कोई तेल तो नहीं है, हॉ थोड़ा साबुन है, वही ले लो।" यह कह कर उसने दरवाजे के कब्जों में थोड़ा सा साबुन लगा दिया।

[35] Translated for the word "Hinges" – see its picture above.

दरवाजा खुश हो कर बोला — "जाओ राजकुमार जाओ, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो पर एक बात याद रखना, अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार ने दरवाजे के ऊपर से छलॉग लगायी और फिर घोड़ा नचाता चला गया। आखिर वह राक्षस के किले पर पहुॅचा। वह सीधा घोड़े को सीढ़ियॉ चढ़ाता सामने वाले दरवाजे पर पहुॅचा।

वह किले के पीछे पहुॅचा पर उसे न तो राक्षस दिखायी दिया और न ही वह लड़की। वह आगे वाले कमरे में गया पर वहॉ भी उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

वह रसोईघर में गया वहॉ भी उसे न राक्षस दिखायी दिया न वह लड़की। अब वह उसके सोने के कमरे में पहुॅचा।

वहॉ उसने खर्राटों की आवाज सुनी। उसने अन्दर झॉक कर देखा तो राक्षस तो गहरी नींद सो रहा था और पास ही एक तश्तरी में एक सेब रखा था।

तभी राजकुमार ने सोचा सभी ने मुझसे क्या कहा था। "हॉ हॉ अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहॉ एक सेब रखा होगा वह सेब तुम जरूर उठा लेना।"

सो उसने हाथ बढ़ा कर वह सेब उठा लेना चाहा पर जैसे ही उसने उसे उठाने के लिये हाथ बढ़ाया उसके छूने से पहले ही वह

एक लड़की में बदल गया जिसके गाल सेब की तरह सुर्ख थे और ऑखें सेब के बीजों की तरह कत्थई रंग की थी।

लड़की ने रो कर कहा — "राजकुमार, मुझे बचा लो।"

राजकुमार बोला — "आओ चलें, मेरा घोड़ा नीचे खड़ा है।" और वे दोनों वहॉ से भाग लिये। राजकुमार ने लड़की को घोड़े पर बिठाया और दौड़ चला।

तभी राक्षस की ऑख खुल गयी। वह वहीं से चिल्लाया — "दरवाजे दरवाजे, रोको उसे।"

दरवाजा बोला — "मैं नहीं रोकूँगा, उसने मेरे कब्जों में साबुन लगाया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार उस लड़की को ले कर दरवाजे के ऊपर से निकल गया।

अब राक्षस उनके पीछे भागा और चिल्लाया — "जादूगरनी, उसे रोको, देखो वह जाने न पाये।"

जादूगरनी बोली — "मैं उसे नहीं रोकूँगी उसने मुझे सोने के लिये मखमली कोट दिया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहॉ से चला गया।

राक्षस अपनी पूरी गति से भाग रहा था, वह फिर चिल्ला कर बोला — "ओ कुत्ते, रोक ले उसको जाने नहीं देना।"

कुत्ता बोला — "मैं नहीं रोकूँगा उसको। उसने मुझे खाना दिया है। जाओ राजकुमार तुम जाओ।" और राजकुमार आगे बढ़

गया। जब राक्षस पीछे से आया तो उसने उसके पैर में काट लिया और फिर पकड़ लिया।

राजकुमार भागता ही गया और भागता ही गया जब तक कि वह झाड़ियों की कतार न आ गयी जहॉ उस लड़की का पिता छिपा हुआ था।

वह आदमी वहॉ फिर से छिप गया था। राजकुमार ने फिर उस की टॉग पकड़ कर उसको बाहर निकाला।

असल में वह आदमी घोड़ों की टाप की आवाज सुन कर डर गया था और झाड़ियों में छिप गया था। उसे अपनी बेटी पा कर बड़ी खुशी हुई और राजकुमार के कहने पर उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी।

राजकुमार को अपनी मन पसन्द पत्नी मिल गयी थी। वह उसको ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया और अब वह उससे शादी कर के आराम से रहने लगा।

10 तीन अनारों से प्यार[36]

एक बार एक राजा का बेटा शाम को मेज पर बैठा खाना खा रहा था कि रिकोटा चीज़[37] काटते समय वह अपनी उंगली काट बैठा।

उस कटी हुई जगह से एक बूँद खून टपक कर चीज़ के ऊपर गिर गया। यह देख कर उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मुझे दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल पत्नी चाहिये।"

माँ बोली — "क्यों मेरे बेटे। जो कोई लड़की इतनी गोरी होगी वह इतनी लाल नहीं होगी और जो इतनी लाल होगी तो वह इतनी गोरी नहीं होगी। पर फिर भी तुम दुनियाँ में घूमो और ऐसी लड़की की तलाश करो शायद तुमको ऐसी कोई लड़की मिल जाये।"

सो राजा का बेटा ऐसी दुलहिन ढूँढने चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद उसको एक स्त्री मिली। उसने राजकुमार से पूछा — "ओ नौजवान, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं अपना भेद एक स्त्री पर प्रगट नहीं करता।" और यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

आगे जा कर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने भी राजकुमार से यही पूछा — "बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

---

[36] The Love of the Three Pomegranates – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe. Translated from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated in English by George Martin in 1980.

[37] Ricotta cheese is a kind of processed Indian Paneer used in western world.

राजकुमार बोला — "हॉ, मैं आपको तो यह बता सकता हूॅ कि मैं कहॉ जा रहा हूॅ। जनाब आप सुनें, मैं एक ऐसी लड़की की तलाश में हूॅ जो दूध जैसी सफेद भी हो और खून जैसी लाल भी हो।"

बूढ़ा बोला — "बेटे, जो खून जैसी लाल होगी वह दूध जैसी सफेद नहीं होगी और जो दूध जैसी सफेद होगी तो वह खून जैसी लाल नहीं होगी।

खैर, तुम ऐसा करो कि तुम ये तीन अनार ले लो। इनको तोड़ना और देखना कि इनमें से क्या निकलता है। पर ध्यान रहे कि इनको किसी फव्वारे के या पानी के पास ही तोड़ना।"

राजकुमार ने उस बूढ़े से वे तीनों अनार ले लिये और आगे चल दिया। आगे चल कर एक फव्वारे के पास उसने उनमें से एक अनार तोड़ा तो उसमें एक लड़की निकली जो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थी।

वह लड़की निकलते ही चिल्लायी — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊॅगी।"

राजकुमार ने अपने दोनों हाथों को पानी में डुबो कर उनमें पानी भरा और उसको दिया पर वह सुन्दर लड़की यह कहते हुए कि उसको पानी देने में देर हो गयी वहीं मर गयी।

फिर उसने दूसरा अनार तोड़ा तो उसमें से एक और सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। उसने भी निकलते ही कहा — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।"

वह उसके लिये भी पानी ले कर आया पर फिर भी पानी लाने में उसको देर हो गयी और वह लड़की भी वहीं मर गयी। राजकुमार को बड़ा दुख हुआ सो अबकी बार उसने तीसरा अनार तोड़ने से पहले ही फव्वारे से पानी ला कर रख लिया।

अब उसने तीसरा अनार तोड़ा तो उसमें से भी एक सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। यह पिछली दोनों लड़कियों से ज़्यादा सुन्दर थी।

इस बार राजकुमार ने तुरन्त ही उसके मुँह पर पानी फेंका और वह ज़िन्दा रही। उसने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था सो राजकुमार ने उसको अपना शाल[38] ओढ़ा दिया।

फिर राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ तब तक मैं तुम्हारे पहनने के लिये कुछ कपड़े और तुमको ले जाने के लिये एक गाड़ी ले कर आता हूँ।"

यह कह कर वह राजकुमार तो चला गया और वह लड़की उस फव्वारे के पास लगे हुए एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

[38] Translated for the word "Cloak" – see its picture above.

एक मुस्लिम खानाबदोश[39] लड़की उस फव्वारे पर रोज पानी भरने आया करती थी। वह उस दिन भी वहाँ पानी भरने आयी। जैसे ही उसने अपना मिट्टी का घड़ा फव्वारे के पानी में पानी भरने के लिये डुबोया तो उस पानी में उसको उस लड़की के चेहरे की परछाईं दिखायी दी।

उसको लगा कि वह परछाईं उसके अपने चेहरे की है सो वह एक लम्बी सी साँस भर कर बोली —

वह मैं जो खुद बहुत सुन्दर हूँ पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

और यह कह कर उसने वह बर्तन तुरन्त ही पानी में से निकाल लिया और जमीन पर पटक दिया। बर्तन मिट्टी का था सो जमीन पर गिरते ही टूट गया। वह बिना पानी और बिना बर्तन लिये ही घर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको खाली हाथ आते देख कर गुस्से से डाँटा — "ओ बदसूरत खानाबदोश, तेरी हिम्मत कैसे हुई बिना पानी लिये घर वापस आने की? और तू तो बर्तन भी नहीं लायी? कहाँ है बर्तन?"

सो उस खानाबदोश लड़की ने एक और मिट्टी का बर्तन उठाया और फिर फव्वारे पर लौट गयी। जब वह अपने बर्तन में फिर पानी

[39] Translated for the word "Saracen" – this word was used in Europe for Muslim nomads in those times.

भरने लगी तो फिर उसको वही परछाईं दिखायी दी। उसको फिर लगा कि वह अपने चेहरे की परछाईं पानी में देख रही है सो वह फिर बोली —

मैं इतनी सुन्दर और पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

उसने फिर अपना मिट्टी का बर्तन जमीन पर पटक दिया। वह बर्तन भी मिट्टी का था सो वह भी जमीन पर गिरते ही टूट गया और वह फिर बिना पानी और बिना बर्तन के घर चली गयी।

उसकी मालकिन ने फिर उसको इस तरह खाली हाथ आने और दो बर्तन खोने के लिये बहुत डॉटा तो उसने फिर एक और बर्तन उठाया और फिर पानी भरने के लिये फव्वारे पर चली गयी।

फिर उसने पानी लेने के लिये बर्तन फव्वारे के पानी में डुबोया तो फिर उस लड़की की परछाईं पानी में देख कर फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया।

अब तक वह लड़की पेड़ पर चुपचाप बैठी थी पर अबकी बार जब उसने वह बर्तन तोड़ा तो वह हॅस पड़ी। उसकी हॅसी की आवाज सुन कर उस खानाबदोश लड़की ने ऊपर की तरफ देखा तो वहॉ तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

वह चिल्लायी — "ओह तो वह तुम हो। तुमने ही मेरे तीन बर्तन तुड़वाये और यह चौथा भी तुड़वाने वाली थी। पर तुम वाकई

बहुत सुन्दर हो। मुझे तुम्हारे बाल बहुत अच्छे लग रहे हैं। आओ तुम नीचे आओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ।"

वह लड़की पेड़ से नीचे उतरना नहीं चाहती थी परन्तु बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उससे पेड़ से नीचे उतरने की बहुत जिद की — "तुम मेरे पास आओ न, मैं तुम्हारे बाल बना दूँ। इससे तुम और भी ज़्यादा सुन्दर लगोगी।"

कहते हुए उस बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उसको उसका हाथ पकड़ कर पेड़ से नीचे उतार लिया। उसने उसके बाल खोले तो उसको उसके बालों में लगी एक पिन दिखायी दे गयी। उसने वह पिन उस बेचारी लड़की के कान में ठूँस दी।

इससे उस लड़की के कान में से एक बूँद खून निकल कर नीचे गिर पड़ा और वह मर गयी। पर जब वह खून की बूँद जमीन पर पड़ी तो वह एक कबूतरी[40] बन गयी और उड़ गयी।

इस तरह उस लड़की को मार कर और उसके कपड़े पहन कर वह बदसूरत खानाबदोश लड़की खुद पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

थोड़ी देर में राजकुमार गाड़ी और कपड़े ले कर वापस आ गया और बदसूरत खानाबदोश की तरफ आश्चर्य से देख कर बोला — "अरे तुम तो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थीं। तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?"

[40] Translated for the word "Wood Pigeon" – see its picture above.

बदसूरत खानाबदोश लड़की बोली — "जब सूरज बाहर निकला तो धूप की वजह से मैं सॉवली पड़ गयी।"

"पर तुम्हारी तो आवाज भी बदली हुई है, वह कैसे बदल गयी?

इसके जवाब में वह खानाबदोश लड़की बोली — "हवा ज़ोर से चली और उसी ने मेरी आवाज ऐसी कर दी।"

"पर तुम तो बहुत सुन्दर थीं और अब तो तुम बहुत ही बदसूरत लग रही हो।"

इसके जवाब में वह बोली — "तभी ठंडी हवा चली जिसने मेरे चेहरे को जमा दिया।"

इन जवाबों से राजकुमार को विश्वास हो गया कि वह वही लड़की थी जिसको वह छोड़ कर गया था और वह उसको गाड़ी में बिठा कर अपने घर ले गया। महल में आ कर राजकुमार ने उससे शादी कर ली। अब वह राजकुमार की पत्नी बन गयी।

उधर वह कबूतरी रोज सुबह राजकुमार के शाही रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ जाती और रसोइये से कहती — "ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?"

शाही रसोइया जवाब देता — "वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।"

कबूतरी फिर कहती — "तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे[41] दूँगी।"

रसोइया उसको एक कटोरा भर के सूप देता और वह कबूतरी सूप पी कर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

पर अगली सुबह वह फिर आ जाती और फिर रसोइये से पूछती — "ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?"

शाही रसोइया फिर वही जवाब देता — "वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।"

कबूतरी फिर कहती — "तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे दूँगी।"

रसोइया फिर उसको एक कटोरा भर के सूप देता, वह उस सूप को पीती और फिर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

कुछ समय बाद रसोइये ने सोचा कि वह राजा के पास जा कर यह सब राजा को बताये। सो वह राजा के पास गया और उसने जा कर उसको सारी कहानी सुनायी।

[41] Translated for the word "Plums".

राजा ने उसकी कहानी ध्यान से सुनी और बोला — "कल जब वह कबूतरी तुम्हारे पास आये तो उसको पकड़ लेना और मेरे पास ले आना। मैं उसको अपने पास रखूँगा।"

बदसूरत खानाबदोश लड़की उन दोनों की बात सुन रही थी। वह यह जान गयी कि उसने उस कबूतरी को वहाँ से उड़ जाने देने की गलती कर ली थी। पर अब वह क्या करे?

सो अगले दिन सुबह जब वह कबूतरी खिड़की पर आ कर बैठी तो उस खानाबदोश लड़की ने रसोइये को खूब पीटा और उस कबूतरी के शरीर में लोहे की एक सलाई घुसा कर उसे मार डाला।

इससे कबूतरी तो मर गयी पर उसके खून की एक बूँद खिड़की के बाहर जमीन पर गिर पड़ी। उस बूँद से तुरन्त ही वहाँ अनार का एक पेड़ उग आया।

अनार के इस पेड़ में एक जादू था कि जो भी मर रहा हो अगर वह इस पेड़ का एक अनार खा ले तो वह ज़िन्दा हो जाता था। इस लिये उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के पास उस पेड़ का एक अनार लेने के लिये एक लम्बी लाइन लगी रहती।

आखीर में उस पेड़ के सब अनार खत्म हो गये और उस पेड़ पर केवल एक अनार रह गया। वह अनार उन सब अनारों में सबसे बड़ा था जो उस पेड़ पर पहले लगे थे। सो उस खानाबदोश लड़की

ने सबको यह कह दिया कि अब इस पेड़ के सारे अनार खत्म हो गये हैं और अब यह आखिरी अनार मैं अपने लिये रखूँगी।

एक दिन एक बुढ़िया वहाँ आयी और उस खानाबदोश लड़की से बोली — "रानी जी, मेहरबानी कर के यह अनार मुझे दे दीजिये। मेरे पति की हालत बहुत खराब है। अगर यह अनार आप मुझे दे देंगी तो मेरे पति बच जायेंगे।"

वह खानाबदोश लड़की बोली — "अब इस पेड़ पर बस यह एक ही अनार बचा है और इसको अब मैंने सजावट के लिये यहाँ रखा हुआ है।"

पर राजकुमार ने उसको ऐसा करने से मना किया। वह बोला — "उस बेचारी बुढ़िया के पति की हालत बहुत खराब है। तुमको उसको अनार देने से मना नहीं करना चाहिये।"

इस तरह राजकुमार ने उस खानाबदोश लड़की से उस आखिरी अनार को उस बुढ़िया को दिलवा दिया। बुढ़िया खुशी खुशी वह अनार ले कर घर चली गयी।

पर घर जा कर उसने देखा कि उसका पति तो तब तक मर गया था। उसने सोचा "तो अब मैं इस अनार को सजावट के लिये ही रख लेती हूँ" और वह उसने एक खुली आलमारी में रख दिया। उस अनार में वह लड़की रहती थी।

वह बुढ़िया रोज "मास"[42] पढ़ने चर्च जाती थी। जब वह मास पढ़ने के लिये चली जाती तो वह लड़की उस अनार में से निकलती।

वह उस बुढ़िया के लिये आग जलाती, उसका घर साफ करती और उसके लिये खाना बनाती। खाना बना कर उसको उसकी खाने की मेज पर लगाती और यह सब कर के वह फिर अपने अनार में चली जाती।

वह बुढ़िया जब घर वापस आती तो अपना घर ठीक ठाक पा कर और अपने लिये खाना बना देख कर बहुत चकित होती। एक दिन वह चर्च के कनफैशन के कमरे[43] में गयी और अपने कनफैशन सुनने वाले से जा कर उसे सब कुछ बताया।

वह बोला — "तुम ऐसा करो कि कल तुम मास जाने का केवल बहाना बनाओ पर अपने घर में या फिर अपने घर के आस पास ही कहीं छिप जाओ और फिर देखो कि तुम्हारे घर में क्या क्या होता है। इस तरीके से तुम जान पाओगी कि तुम्हारे घर में यह सब काम कौन करता है।"

अगले दिन उस कनफैशन सुनने वाले की सलाह मान कर उस बुढ़िया ने मास जाने का केवल बहाना ही किया। वह घर के बाहर

[42] Mass is a kind of Christian worship

[43] Confession Box – it is a place in the Church where normally a sinner accepts his or her mistakes and sins and promises not to do it again in front of a priest, but there is curtain between them so they cannot see each other that who is confessing and who is hearing.

तक गयी और दरवाजे के बाहर तक जा कर रुक गयी और एक ऐसी जगह जा कर खड़ी हो गयी जहाँ से वह अपना घर अच्छी तरह से देख सकती थी।

उसके जाने के बाद वह लड़की रोज की तरह अपने अनार में से निकली और उस बुढ़िया के घर का काम करना शुरू कर दिया।

तभी वह बुढ़िया घर के अन्दर आ गयी। बुढ़िया को देख कर वह लड़की अपने अनार के अन्दर घुसने की कोशिश करने लगी पर उस बुढ़िया ने उसे अनार के अन्दर जाने से पहले ही पकड़ लिया।

बुढ़िया ने पूछा — "तुम कहाँ से आयी हो?"

वह लड़की बोली — "भगवान आपको सुखी रखे, मुझे मारना नहीं, मुझे मारना नहीं।"

बुढ़िया प्यार से बोली — "मैं तुमको मारूँगी नहीं पर मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम आयी कहाँ से हो?"

लड़की बोली — "मैं इस अनार के अन्दर रहती हूँ।"
और उसने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर उस बुढ़िया ने उसको अपनी जैसी किसान लड़की की पोशाक पहनायी क्योंकि इस लड़की ने अभी भी कपड़े नहीं पहन रखे थे।

अगले रविवार को वह उसको मास के लिये चर्च ले गयी। वहाँ पर राजकुमार भी आता था। उसने उस लड़की को देखा तो उसके

मुँह से निकला — "हे भगवान, मुझे तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह वही लड़की है जिससे मैं फव्वारे पर मिला था।"

सो मास खत्म हो जाने के बाद उसने चर्च के बाहर उस बुढ़िया का इन्तजार करने का निश्चय किया। जब वह बुढ़िया चर्च के बाहर निकली तो राजकुमार ने उससे पूछा — "मुझे सच सच बताइये मॉ जी कि यह लड़की आपके पास कहॉ से आयी?"

"सरकार मुझे मारियेगा नहीं।"

राजकुमार बहुत बेचैनी से बोला — "नहीं नहीं, मैं आपको बिल्कुल नहीं मारूँगा। बस आप मुझे यह बता दें कि यह लड़की आपके पास आयी कहॉ से?"

बुढ़िया फिर भी डरते डरते बोली — "यह लड़की उस अनार में से निकली है जो आपने मुझे दिया था।"

राजकुमार फिर बोला — "तो यह भी अनार में थी?"

फिर वह उस लड़की से बोला — "पर तुम इस अनार में घुसी कैसे?"

इस पर उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी सुना दी। राजकुमार उस लड़की को ले कर महल वापस लौटा और सीधा उस खानाबदोश लड़की के पास गया। उसने उस अनार वाली लड़की से

उस खानाबदोश लड़की के सामने एक बार फिर अपनी कहानी सुनाने को कहा।

जब अनार वाली लड़की ने अपनी कहानी खत्म कर दी तो राजकुमार ने खानाबदोश लड़की से कहा — "सुना तुमने? मैं अपने हाथों से तुमको मारना नहीं चाहता इसलिये अच्छा है कि तुम खुद ही मर जाओ।"

खानाबदोश लड़की ने देखा कि अब कोई और रास्ता नहीं रह गया है तो वह बोली "मेरे अन्दर लोहे की एक सलाई घुसा दो और मुझे शहर के चौराहे पर जला दो तो मैं मर जाऊँगी।" ऐसा ही किया गया।

इसके बाद राजकुमार ने उस अनार वाली लड़की से शादी कर ली और दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

11 राजकुमारी और सोने का पहाड़[44]

एक समय की बात है कि एक राजा था जिसको अपने शिकार को मारने की बजाय उसका पीछा करने में बहुत आनन्द आता था। वह कभी भी जंगल में जा कर अपने बाज़ और कुत्तों के साथ अपना कैम्प लगा लेता और फिर शिकार में उसको हमेशा ही कामयाबी मिलती।

मगर एक बार कुछ ऐसा हुआ कि उसको कोई शिकार नहीं मिला हालॉकि सुबह से वह हर दिशा में कोशिश कर चुका था। जब शाम होने लगी तो वह घर लौटने लगा तो उसको एक बौना या एक जंगली आदमी दिखायी दे गया। वह उसके आगे आगे दौड़ा जा रहा था।

राजा ने तुरन्त ही अपने घोड़े को एड़ लगायी और उस बौने का पीछा किया और उसको पकड़ लिया। इस अचानक पकड़े जाने से उसको बहुत आश्चर्य हुआ। वह एक ट्रौल जैसा छोटा और बदसूरत था और उसके बाल तिनकों की तरह खड़े हुए थे।

पर राजा ने उससे हर तरीके से कुछ भी बात करनी चाही पर वह कुछ नहीं बोला, एक शब्द भी नहीं।

---

[44] The Princess and the Glass Mountain – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. Frederick A Stokes Company. 1921. 28 Swedish folktales. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_16.html

एक तो राजा को सारा दिन कोई शिकार नहीं मिला था तो वह वैसे ही बहुत दुखी था और जब इस बौने ने इसको कोई जवाब नहीं दिया तो राजा को बहुत गुस्सा आ गया।

उसने अपने आदमियों को उस जंगली आदमी को पकड़ने का हुक्म दिया और उसकी ठीक से देखभाल करने के लिये कहा ताकि वह कहीं बच कर न भाग जाये। उसके बाद राजा घर आ गया।

राजा के उन आदमियों ने जो उसको पकड़ कर लाये थे राजा से कहा — "राजा साहब। आप इस आदमी को अपने दरबार में ही रख लें ताकि लोग इसको देख कर आपकी तारीफ कर सकें कि आप कितने ताकतवर आदमी हैं।

इसके अलावा आप ही उसके ऊपर पहरा रखें ताकि वह कहीं भाग न सके क्योंकि यह हमें बहुत ही चालाक और निर्दयी किस्म का आदमी लगता है।"

राजा ने जब यह सुना तो काफी देर तक तो वह बोला ही नहीं फिर बोला — "मैं ऐसा ही करूँगा जैसा तुमने कहा है। क्योंकि तब अगर यह भाग जायेगा तो कम से कम उसमें मेरी कोई गलती नहीं होगी। पर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जो कोई भी उसको भाग जाने देगा उसको मैं बिना किसी रहम के मार दूँगा फिर चाहे फिर वह मेरा बेटा ही क्यों न हो।"

अगली सुबह जैसे ही राजा उठा तो उसको अपनी प्रतिज्ञा याद आयी। उसने तुरन्त ही लकड़ी और शहतीरें[45] मँगवायीं।

उस लकड़ी और शहतीरों से उसने किले के पास ही एक छोटा सा घर बनवाया। उसको कई तरह के ताले और चटखनियों से सुरक्षित किया ताकि उसको कोई तोड़ न सके। दीवार के बीच में एक छेद बनवा दिया ताकि उसमें से उसे खाना दिया जा सके।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो राजा उस बौने को उस मकान में ले गया वहाँ उसको रख कर घर आ गया। उस घर की चाभी उसके अपने पास थी। इस तरह वह बौना उस घर में दिन रात एक कैदी की तरह से रहने लगा।

बहुत सारे लोग उसको देखने के लिये पैदल या घोड़े पर चढ़ कर भी आते थे पर किसी ने उसे कभी कोई शिकायत करते नहीं सुना। शिकायत तो शिकायत किसी ने उसे एक शब्द बोलते हुए भी नहीं सुना।

कुछ समय तक इस तरह चलता रहा कि फिर देश में एक लड़ाई छिड़ गयी तो राजा को लड़ाई के मैदान में जाना पड़ा। जाते समय उसने अपनी रानी से कहा — "मेरी गैरहाजिरी में तुम मेरी जगह राजकाज सँभालना। मैं अपना देश और अपनी जनता तुम्हारी देखरेख में छोड़ कर जा रहा हूँ। फिर भी तुम मुझसे एक बात का

[45] Translated for the word "Beam" – wooden logs used to support the roof – see its picture above.

वायदा करो कि तुम वह करोगी। तुम उस जंगली आदमी की ठीक से देखभाल करोगी ताकि जब मैं यहाँ नहीं हूँ तो वह मेरे पीछे कहीं भाग न जाये।"

रानी ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी। राजा ने उसे उस घर की चाभी दे दी और अपनी बड़ी सी सेना ले कर समुद्र के रास्ते हो कर अपने जहाज़ दूसरे देश की तरफ खे दिये।

राजा और रानी के केवल एक ही बच्चा था – एक राजकुमार जो अभी उम्र में तो बहुत छोटा था पर होशियार बहुत था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि वह बाहर खेल रहा था कि खेलते खेलते वह उस जंगली आदमी के घर की तरफ निकल आया। वह सोने के एक सेब के साथ खेल रहा था। और फिर कुछ ऐसा हुआ कि उसका सोने का सेब उस मकान की खिड़की से हो कर उस मकान के अन्दर जा पड़ा।

जंगली आदमी तुरन्त ही वहाँ आया और उसने उसका सेब वापस उसको फेंक दिया। छोटे बच्चे को यह एक खेल जैसा लगा तो उसने वह सेब फिर से मकान के अन्दर फेंक दिया। जंगली आदमी ने भी वह सेब फिर से उसको वापस फेंक दिया।

यह खेल कुछ देर तक चलता रहा। सारा खेल खुशी खुशी चलता रहा कि उसका अन्त बुरा हो गया। एक बार जब राजकुमार ने वह सेब उस मकान के अन्दर फेंका तो उस आदमी ने उसको वह

वापस नहीं फेंका। वह सेब उसने रख लिया और वह उसको किसी तरह भी वापस न दे।

उससे कई बार विनती की गयी कई बार धमकी दी गयी कोई चीज़ काम नहीं कर रही थी तो राजकुमार ने रोना शुरू कर दिया। उस समय उसने राजकुमार से कहा — "तुम्हारे पिता ने मुझे बन्दी बना कर मेरे साथ बुरा किया। अब तुम अपना यह सोने का सेब मुझसे कभी वापस नहीं ले पाओगे जब तक कि तुम मुझे इस घर में से बाहर नहीं निकालोगे।"

राजकुमार बोला — "मैं तुम्हें बाहर कैसे निकाल सकता हूँ। तुम मेरा सोने का सेब मुझे वापस कर दो। मेरा सोने का सेब मुझे दे दो।"

जंगली आदमी बोला — "अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ उसे तुम सुनो और तुम वही करना जो में तुमसे कहूँ। तुम अपनी माँ के पास जाओ और उससे कहना कि वह तुम्हारे बालों में कंघी करे। उस समय तुम उसकी कमर से इस घर की चाभी निकाल लेना। उस चाभी को ले कर यहाँ आ जाना और यहाँ आ कर इस घर का दरवाजा खोल देना।

इसके बाद तुम उसे फिर से वैसे ही वापस रख देना जैसे तुमने उसे ली थी। इस तरह इस बारे में कोई जान भी नहीं पायेगा।"

जब जंगली आदमी ने उसे यह बता दिया तो उसने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। वह अपनी माँ के पास गया और उससे

अपने सिर में कंघी करने के लिये कहा। जब वह कंघी कर रही थी तो उसने उसकी कमर से चाभी निकाल ली।

चाभी निकाल कर वह उस घर की तरफ भागा जिसमें वह जंगली आदमी बन्द था। वहॉ पहुँच कर उसने मकान का दरवाजा खोल दिया।

जब वे दोनों अलग हुए तो बौना बोला — "लो यह लो तुम अपना सोने का सेब लो जिसका मैंने तुम्हें वापस दे देने का वायदा किया था। मुझे आजाद करने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। फिर कभी जब तुम्हें जरूरत पड़ेगी तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

और यह कह कर वह वहॉ से अपने रास्ते चला गया। राजकुमार अपना सोने का सेब ले कर अपने घर आ गया। चाभी उसने अपनी मॉ की कमर में वापस रख दी।

जब राजा के दरबारियों को यह पता चला कि जंगली आदमी जेल तोड़ कर भाग गया है। सारे दरबार में हलचल मच गयी। रानी ने उनको पहाड़ियों और खाइयों सबमें उसको ढूँढने के लिये अपने आदमी भेजे। पर वह तो चला गया था और फिर दिखायी ही नहीं दिया।

यह खोज कुछ दिन तक चलती रही। रानी रोज रोज दुखी होती रही क्योंकि उसको लग रहा था कि अब किसी भी दिन राजा घर वापस आते होंगे।

और जब राजा किनारे पर उतरे तो सबसे पहले उसने यही पूछा कि क्या उस जंगली आदमी की रक्षा ठीक से की गयी।

रानी को सारा मामला स्वीकर करना पड़ा कि वहॉ क्या हुआ था और सब कुछ बताना पड़ा। राजा यह सब सुन कर बहुत गुस्सा हो गया। उसने कहा कि चाहे जो कोई भी क्यों न हो वह उसको सजा अवश्य ही देगा।

उसने अपने दरबार के सब लोगों से उसके बारे में पूछा पर किसी को उसके बारे कुछ पता नहीं था। अन्त में राजकुमार को भी बुलाया गया। राजकुमार ने राजा के सामने आ कर कहा — "मुझे मालूम है कि मेरे पिता राजा मुझसे इस बात पर बहुत गुस्सा होंगे फिर भी मैं सच को नहीं छिपाऊॅगा। मैंने ही उस जंगली आदमी को भगाया है।"

यह सुन कर रानी का चेहरा तो सफ़ेद पड़ गया। दूसरे लोग भी यह सुन कर परेशान हो गये क्योंकि ऐसा कोई नहीं था जो राजकुमार को प्यार न करता हो।

आखिर राजा बोला — "यह बात मेरे बारे में कोई भी कभी नहीं कहेगा कि मैंने जो प्रतिज्ञा की उसे पूरा नहीं किया चाहे वह मेरा अपना खून या मॉस ही क्यों न हो। तुमको वही मौत मरना पड़ेगा जो ऐसे आदमी के लिये तय की गयी थी।"

इसके साथ ही उसने लोगों को हुक्म दिया कि वे राजकुमार को जंगल ले जायें और वहॉ ले जा कर उसे मार दें। उनको यह भी

कहा गया कि वह राजकुमार का दिल ला कर उसे दें जिससे उसे यह पता चल जाये कि उसके हुक्म का पालन कर दिया गया है।

लोग बेचारे खुले रूप से तो कुछ कह नहीं सकते थे पर दिल ही दिल में सब बहुत दुखी थे। सबने राजकुमार को माफ कर देने की विनती की। पर राजा ने जो कह दिया था सो कह दिया था अब उसे वापस नहीं लिया जा सकता था।

उसके नौकर चाकर उसके हुक्म को टालने की हिम्मत ही नहीं कर सकते थे। सो उन्होंने राजकुमार को अपने बीच में लिया और जंगल की तरफ चल दिये। जब वे जंगल में काफी दूर तक चल लिये तो उन्होंने एक सूअर चराने वाला सूअर चराता हुआ दिखायी दिया।

तो उनमें से एक आदमी ने दूसरे से कहा — "मुझे यह ठीक नहीं लगता कि हम राजा के बेटे के ऊपर हाथ उठायें। क्यों न हम एक सूअर खरीद लें और उसका दिल ले जा कर राजा को दे दें। वे लोग यह विश्वास कर लेंगे कि वह राजकुमार का दिल है।"

राजा के दूसरे नौकरों ने सोचा कि यह आदमी तो अक्लमन्दी की बात कर रहा है सो उन्होंने उस सूअर चराने वाले से एक सूअर खरीदा उसे जंगल में ले जा कर मारा और उसका दिल ले कर किले चले गये।

राजकुमार से उन्होंने कहा कि वह वहाँ से कहीं चला जाये और फिर उधर कभी न लौटे। अब यह सोचना तो बहुत आसान है कि

जब उन्होंने घर लौट कर यह कहा होगा कि "हमने राजकुमार को मार दिया है।" तो घर में कितना कोहराम मचा होगा।

राजा के बेटे ने वही किया जो राजा के नौकरों ने उससे करने के लिये कहा था। वह बहुत दूर दूर तक घूमता रहा। उसके पास कोई खाना नहीं था सिवाय गिरियों के और बैरीज़ के जो अक्सर जंगलों में उगती हैं। बहुत देर तक घूमने के बाद वह एक पहाड़ के पास आया जिसकी चोटी पर फ़र का एक पेड़ खड़ा था।

उसने सोचा कि अगर मैं यहाँ चढ़ जाऊँ तो शायद मैं देख सकूँ कि कौन सा रास्ता किधर जाता है। वह तुरन्त ही पेड़ की तरफ चल दिया। जैसे ही वह फ़र के पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर पहुँचा और नीचे चारों तरफ देखा तो उसको दूर एक बहुत ही शानदार किला दिखायी दिया। धूप में वह चमक रहा था।

उसे देख कर वह बहुत खुश हुआ और उधर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में उसे एक किसान मिला जिससे उसने विनती की कि वह उससे अपने कपड़े बदलना चाहता है। किसान ने उसे अपने कपड़े दे दिये और वह उनको पहन कर किले चल दिया।

वहाँ जा कर उसने राजा से उससे काम माँगा तो उसने उसको एक गड़रिये[46] का काम दे दिया। अब वह राजा के जानवर चराने लगा। वह जंगल कभी जल्दी चला जाता कभी देर से जाता। समय के साथ वह अपने दुख भूल गया।

[46] Animal tender

समय के साथ साथ वह बड़ा भी होने लगा और इतना लम्बा और बहादुर हो गया कि उस जैसा वहॉ कोई नहीं था।

अब हमारी कहानी उस राजा की तरफ मुड़ती है जो इस शानदार किले में रह कर राज करता था। उसकी शादी हो गयी थी और उसके एक बेटी थी। वह दूसरी बहुत सारी लड़कियों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।

वह इतनी खुशमिजाज और दयालु थी कि हर आदमी यही सोचता कि जो कोई भी उसको अपने घर ले जायेगा वह दुनियॉ का एक बड़ा खुशकिस्मत आदमी होगा।

जब राजकुमारी पन्द्रह साल की हो गयी तो उसके लिये बहुत सारे उम्मीदवारों की एक भीड़ सी लग गयी। जैसा कि सोचा जा सकता है उस लड़की ने सबको शादी करने से मना कर दिया था। पर आने वालों की गिनती तो बढ़ती ही रही।

आखिर राजकुमारी ने कहा — "मुझसे केवल वही शादी करेगा जो पूरा जिरहबख्तर[47] पहन कर शीशे के पहाड़ पर चढ़ जायेगा।"

राजा ने सोचा कि यह तो अच्छा विचार है। उसने अपनी बेटी की इच्छा को बढ़ावा दिया और अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी पूरा जिरहबख्तर पहन कर शीशे के पहाड़ पर चढ़ेगा मेरी बेटी उसी से शादी करेगी।

[47] Translated for the word "Armor" – normally made of iron, from head to toe, to wear in war to save oneself from injury.

जब राजा का नियत किया हुआ दिन आया तो राजकुमारी को शीशे के पहाड़ पर ले जाया गया। वहॉ उसको उसकी सबसे ऊॅची चोटी पर बिठा दिया गया। उसके सिर पर सोने का ताज था और हाथ में एक सोने का सेब था।

वह इतनी ज़्यादा सुन्दर दिखायी दे रही थी कि वहॉ पर कोई ऐसा नहीं था जो उसके लिये अपनी ज़िन्दगी को दॉव पर न लगाना चाहता हो।

पहाड़ी के नीचे उससे शादी करने वाले उम्मीदवार अपने चमकदार जिरहबख्तर पहिने अपने अपने घोड़ों पर सजे खड़े हुए थे। उनके जिरहबख्तर धूप में सोने जैसे चमक रहे थे। इनके अलावा और बहुत सारे लोग इस मुकाबले को देखने के लिये वहॉ आ कर खड़े हो गये थे।

बिगुल बजा कर उनको पहाड़ पर चढ़ने का सिगनल दिया गया और उन सबने अपनी पूरी ताकत के साथ उस पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। पर पहाड़ ऊॅचा था और बर्फ की तरह फिसलना था। साथ में उसकी चढ़ाई बहुत खड़ी थी।

कोई भी उम्मीदवार उस पहाड़ पर थोड़ी दूर से ज़्यादा नहीं चढ़ पाता था कि नीचे गिर जाता था। कइयों की तो इस चढ़ाई में हाथ पैरों की हड्डियॉ भी टूट गयीं।

घोड़े भी हिनहिनाने लगे लोग चिल्लाने लगे इस सबने इतना शोर मचाया कि उसे दूर तक सुना जा सकता था।

जब यह सब चल रहा था तब राजा का बेटा अपने बैल चरा रहा था। जब उसने यह शोर सुना तो वह एक पत्थर पर बैठ गया। अपना गाल अपने हाथ पर रख लिया और विचारों में खो गया। उसको लग रहा था कि वह दूसरों के साथ इस मुकाबले में हिस्सा नहीं ले पायेगा।

कि अचानक उसने किसी के पैरों की आहट सुनी। आहट पर उसने अपना सिर उठा कर ऊपर देखा तो वह जंगली आदमी वहॉ खड़ा था जिसको एक बार उसने अपने पिता के घर से आजाद किया था और जिसकी वजह से वह आज यहॉ इस हाल में था।

वह बोला — "उस दिन के लिये तुम्हारा धन्यवाद। और तुम यहॉ अकेले दुखी से क्यों बैठे हो?"

राजकुमार बोला — "मेरे पास कोई और चारा नहीं है सिवाय इसके कि मैं दुखी और नाखुश बैठा रहूँ। तुम्हारी वजह से मैं अपने देश से बाहर भागा भागा फिर रहा हूँ। और अब मेरे पास न तो कोई जिरहबख्तर है और ना ही कोई घोड़ा है जो मैं शीशे के पहाड़ पर चढ़ सकूँ और राजकुमारी को जीत सकूँ।"

जंगली आदमी बोला — "ओह बस इतनी सी बात। अगर तुम्हें बस यही चाहिये तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुमने एक बार मेरी सहायता की थी उसके बदले में आज मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

कह कर उसने राजकुमार को हाथ पकड़ कर उठाया और उसको धरती के नीचे अपनी गुफा में ले गया तो लो देखो वहॉ तो

एक बहुत सुन्दर जिरहबख्तर था जो सबसे मजबूत लोहे का बना हुआ था।

उसके पास ही एक बहुत सुन्दर शानदार घोड़ा खड़ा था जिस पर बढ़िया किस्म की जीन कसी हुई थी। उसके खुरों में स्टील के बढ़िया जूते लगे थे और वह कभी कभी जब अपना मुँह चलाता था जिससे उसके मुँह से सफेद झाग नीचे गिरता था।

जंगली आदमी बोला — "लो तुम यह जिरहबख्तर जल्दी से पहन लो और इस घोड़े पर सवार हो कर अपनी किस्मत आजमाओ। तुम्हारे बैलों को खाना मैं खिला दूँगा।"

राजकुमार ने उसके दूसरी बार कहने का इन्तजार नहीं किया। तुरन्त ही उसने जिरहबख्तर और हैल्मैट पहना तलवार अपने एक तरफ लटका ली और घोड़े पर बैठ कर पहाड़ की तरफ हवा की तरह उड़ गया।

राजकुमारी के उम्मीदवार अब इस मुकाबले को छोड़ने ही वाले थे क्योंकि अभी तक कोई भी शीशे के पहाड़ पर नहीं चढ़ पाया था। हालॉकि सबने अपनी अपनी तरह से अपनी सबसे अच्छी कोशिश की थी पर फिर भी।

जब वहॉ वे लोग यही सब सोचते हुए खड़े हुए थे कि शायद उनकी किस्मत किसी दूसरे समय पर काम आये कि अचानक उनको एक नौजवान घोड़े पर सवार जंगल की तरफ से सीधा पहाड़ की तरफ ही आता दिखायी दिया।

वह सिर से पैर तक लोहा पहने था। उसके सिर पर हैल्मैट था। बॉह पर ढाल थी और वह अपने घोड़े पर इतनी शान से बैठा हुआ था कि उसको देख कर ही दिल खुश होता था। सबकी निगाहें उसकी तरफ घूम गयीं।

लोगों ने आपस में पूछा कि वह कौन था क्योंकि उसको पहले किसी ने नहीं देखा था। फिर भी उनके पास बात करने के लिये और सवाल करने के लिये वक्त बहुत कम था। जैसे ही उसने जंगल पार किया उसने अपने घोड़े को एक चाबुक मारा और सीधा शीशे के पहाड़ पर चढ़ गया।

वह एक साथ ही उस पर नहीं चढ़ गया बल्कि जब वह बीच चढ़ाई पर पहुँचा तो वह वहॉ से नीचे उतर आया इससे उसके घोड़े के खुरों से चिनगरियॉ निकलने लगीं। नीचे उतर कर वह फिर जंगल की तरफ चला गया और वहॉ जा कर ऐसे गायब हो गया जैसे चिड़िया फुर्र हो जाती है।

लोगों को कितनी खुशी हुई होगी यह आसानी से सोचा जा सकता है। वहॉ कोई भी ऐसा नहीं था जो उस नाइट[48] की तारीफ न कर रहा हो। सब यही कह रहे थे कि उन्होंने इतना बहादुर नाइट पहले कभी कहीं नहीं देखा।

समय गुजरता गया। राजकुमारी के उम्मीदवारों ने सोचा कि वे फिर से उस पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करें। सो राजा की बेटी

[48] Knight – a higher rank officer in British government. See his picture above.

एक बार फिर से अपने शानदार कीमती कपड़ों में पहाड़ की चोटी पर आ कर बैठी।

उसके सिर पर सोने का ताज था और हाथ में सोने का सेब था और पहाड़ी के नीचे सब उम्मीदवार अपने चमकदार जिरहबख्तरों में सुन्दर घोड़ों पर सवार जमा थे।

जब सब तैयार हो गये तब दौड़ शुरू करने के लिये बिगुल बजाया गया और सब सवार एक के बाद एक उस पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पर सब पहले की ही तरह से हुआ। पहाड़ी ऊँची थी बर्फ जैसी फिसलनी थी और बहुत ढालू थी। कोई भी आदमी अपने घोड़े को उस पर थोड़ी दूर से ज़्यादा ऊपर तक नहीं चढ़ा पाया कि लुढ़क गया।

इस बीच पहले की तरह से फिर से वहाँ शोर मचने लगा – घोड़ों के हिनहिनाने का लोगों के चिल्लाने का उनके जिरहबख्तरों के आपस में टकराने का। और यह शोर इतना ज़्यादा था कि पहले की तरह से यह फिर से जंगल तक पहुँच गया।

और जब यह सब यहाँ हो रहा था तो नौजवान राजकुमार अपने बैल चरा रहा था जो उसका काम था। पर जब उसने शोर सुना तो वह फिर एक पत्थर पर बैठ गया अपना गाल अपने हाथ पर रख लिया और रोने लगा।

उस समय वह राजा की बेटी के बारे में सोच रहा था। उसको लगा कि वह कितना चाहता था कि वह भी उस मुकाबले में हिस्सा

ले। तभी उसको किसी के पैरों की आहट सुनायी दी। आहट सुन कर उसने ऊपर जो देखा तो उसने देखा कि वही जंगली आदमी वहाँ खड़ा है।

वह आदमी बोला — "गुड डे। तुम यहाँ इतने अकेले उदास क्यों बैठे हो?"

इस पर राजकुमार ने जवाब दिया — "मेरे पास दुखी और नाखुश होने के सिवा और कोई चारा ही नहीं है। क्योंकि तुम्हारी वजह से मैं अपने राज्य से निकाल दिया गया हूँ और अब मेरे पास न तो कोई घोड़ा है और ना ही कोई जिरहबख्तर है जिससे मैं राजकुमारी के लिये मुकाबले में हिस्सा ले सकूँ।"

जंगली आदमी बोला — "ओह अगर तुम यही चाहते हो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। तुमने एक बार मेरी सहायता की थी उसके बदले में अब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

कह कर उसने राजकुमार का हाथ पकड़ कर उठाया और उसको धरती के नीचे बनी अपनी गुफा में ले गया। वहाँ असली चाँदी का बना एक जिरहबख्तर टँगा हुआ था। वह इतना चमकदार था कि उसकी चमक दूर दूर तक जा रही थी।

उसके पास ही एक बरफ जैसा सफेद घोड़ा खड़ा था जिसके ऊपर जीन कसी हुई थी। वह अपने चाँदी के खुरों से जमीन खुरच रहा था और मुँह से सफेद झाग गिरा रहा था।

जंगली आदमी बोला — "लो जल्दी से अपना यह जिरहबख्तर पहन लो इस घोड़े पर चढ़ जाओ और जा कर अपनी किस्मत आजमाओ। इस बीच तुम्हारे बैल मैं चरा दूँगा।"

राजकुमार ने उसके दूसरी बार कहने का इन्तजार नहीं किया। उसने तुरन्त ही अपना जिरहबख्तर पहना अपनी कमर से तलवार लटकायी घोड़े पर सवार हुआ उसकी गर्दन में लगाम डाली उसे एड़ लगायी और शीशे के पहाड़ की तरफ हवा में चिड़िया की तरह उड़ गया।

राजकुमारी के लिये जो उम्मीदवार वहाँ इकट्ठे हुए थे वे सब नाउम्मीद हो कर जाने वाले ही थे और यह सोच ही रहे थे कि शायद अगली बार उनकी किस्मत चमक जाये कि तभी उन्होंने जंगल की तरफ से एक नौजवान घुड़सवार आता देखा।

वह सिर से पैर तक चाँदी से ढका हुआ था। उसके सिर पर हैल्मैट था बाँह पर ढाल थी और वह घोड़े पर एक नाइट की शान से बैठा था। उनको लगा कि शायद उन्होंने उससे ज़्यादा बहादुर नाइट पहले कभी कोई नहीं देखा।

तुरन्त ही सबकी आँखें उसकी तरफ घूम गयीं। लोगों ने देखा कि यह तो वही नाइट था जो पिछली बार आया था। मगर राजकुमार ने उनको आश्चर्य करने के लिये बहुत समय तक नहीं छोड़ा क्योंकि जैसे ही वह मैदान में आया वह तुरन्त ही पहाड़ पर चढ़ गया।

हालॉकि वह बिल्कुल ऊपर तक तो नहीं पहुँच सका पर जैसे ही वह चोटी के पास तक पहुँचा उसने राजकुमारी को बड़ी इज़्ज़त से सिर झुकाया और नीचे उतर आया। नीचे उतरने में उसके घोड़े के खुरों से चिनगारियॉ निकल रही थीं। उसके बाद वह जंगल की तरफ जा कर तूफान की तरह वहीं गायब हो गया। इस बार लोग पहले से भी ज़्यादा खुश थे।

कोई भी ऐसा नहीं था जो उसके इस हिम्मत के काम से उसकी तारीफ न कर रहा हो। सब इस बात पर एक राय थे कि ऐसा शानदार घोड़ा और ऐसा सुन्दर नौजवान उन्होंने पहले कभी कहीं नहीं देखा।

फिर कुछ दिन बीत गये। राजकुमारी के उम्मीदवारों ने सोचा कि वे फिर से उस पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करें। सो राजा की बेटी एक बार फिर से अपने शानदार कीमती कपड़ों में पहाड़ की चोटी पर आ कर बैठी। उसके सिर पर सोने का ताज था और हाथ में सोने का सेब था। पहाड़ी के नीचे सब उम्मीदवार अपने चमकदार जिरहबख्तरों में सुन्दर घोड़ों पर सवार जमा थे।

जब सब तैयार हो गये तब दौड़ शुरू करने के लिये बिगुल बजाया गया और सब सवार एक के बाद एक उस पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पर सब पहले की ही तरह से हुआ। पहाड़ी ऊॅची थी बर्फ जैसी फिसलनी थी और बहुत ढालू थी। कोई भी आदमी अपने घोड़े

को उस पर थोड़ी दूर से ज़्यादा ऊपर तक नहीं चढ़ पाया कि लुढ़क गया।

इस बीच पहले की तरह से फिर से वहाँ शोर सुनायी देने लगा – घोड़ों के हिनहिनाने का लोगों के चिल्लाने का उनके जिरहबख्तरों के आपस में टकराने का। और यह शोर इतना ज़्यादा था कि पहले की तरह से यह फिर से जंगल तक पहुँच गया।

और जब यह सब यहाँ हो रहा था तो नौजवान राजकुमार अपने बैल चरा रहा था जो उसका काम था। पर जब उसने शोर सुना तो वह फिर एक पत्थर पर बैठ गया अपना गाल अपने हाथ पर रख लिया और रोने लगा।

उस समय वह राजा की बेटी के बारे में सोच रहा था। उसको लगा कि वह कितना चाहता था कि वह उस मुकाबले में हिस्सा ले। तभी उसको किसी के पैरों की आहट सुनायी दी। आहट सुन कर उसने ऊपर जो देखा तो उसने देखा कि वही जंगली आदमी वहाँ खड़ा है।

वह आदमी बोला — "गुड डे। तुम यहाँ इतने अकेले उदास क्यों बैठे हो?"

इस पर राजकुमार ने जवाब दिया — "मेरे पास दुखी और नाखुश होने के सिवा और कोई चारा ही नहीं है। क्योंकि तुम्हारी वजह से मैं अपने राज्य से निकाल दिया गया हूँ और अब मेरे पास

न तो कोई घोड़ा है और ना ही कोई जिरहबख्तर है जिससे मैं राजकुमारी के लिये मुकाबले में हिस्सा ले सकूँ।"

जंगली आदमी बोला — "ओह अगर तुम यही चाहते हो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। तुमने एक बार मेरी सहायता की थी उसके बदले में अब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

कह कर वह उसको हाथ पकड़ कर जमीन के अन्दर बनी अपने गुफा में ले गया। वहाँ उसके पास एक बहुत सुन्दर खालिस सोने का बना हुआ जिरहबख्तर था जो इतना चमक रहा था कि उसकी चमक की रोशनी बहुत दूर दूर तक जा रही थी।

उसके बराबर में ही एक शानदार घोड़ा खड़ा था जिस पर जीन कसी हुई थी। वह अपने सोने के खुरों से जमीन खुरच रहा था और मुँह चला रहा था और झाग उगल रहा था।

जंगली आदमी बोला — "लो तुम तुरन्त ही इस जिरहबख्तर को पहन लो घोड़े पर सवार हो जाओ और जा कर अपनी किस्मत आजमाओ। इस बीच तुम्हारे बैल मैं चरा देता हूँ।"

अब सच कहो तो राजकुमार इतना भी सुस्त नहीं था। उसने तुरन्त ही जिरहबख्तर पहना अपना हैल्मैट लगाया सोने के बक्सुए[49] लगाये कमर में तलवार लटकायी और चिड़िया की तरह से उड़ कर पहाड़ की तरफ चल दिया।

[49] Translated for the word "Buckles"

राजकुमारी के लिये जो उम्मीदवार वहॉ इकट्ठे हुए थे वे सब नाउम्मीद हो कर जाने वाले ही थे क्योंकि अभी तक किसी ने भी इनाम नहीं जीता था। और यह सोच ही रहे थे कि अगर इस बार न सही शायद अगली बार उनकी किस्मत चमक जाये कि तभी उन्होंने जंगल की तरफ से एक नौजवान घुड़सवार आता देखा।

सबका ध्यान उधर चला गया। वह सिर से पैर तक सोने से ढका हुआ था। उसके सिर पर हैल्मैट था बॉह पर ढाल थी और वह एक बहुत ही शानदार घोड़े पर एक नाइट की शान से बैठा था। उनको लगा कि शायद उससे ज़्यादा बहादुर नाइट उन्होंने पहले कभी कोई नहीं देखा।

तुरन्त ही सबकी ऑखें उसकी तरफ घूम गयीं। लोगों ने देखा कि यह तो वही नाइट था जो पिछली बार आया था। इस बार वह सारा का सारा सोने से ढका हुआ था – ऊपर से ले कर नीचे तक।

उसका सोने का हैल्मैट था सोने का जिरहबख्तर था उसकी बॉह पर सोने की ढाल थी और उसकी कमर से सोने की तलवार लटक रही थी। वह इतनी शान से घोड़े पर बैठा था जैसा कि दुनियॉ भर में कोई और नहीं बैठ सकता था।

मगर राजकुमार ने उनको आश्चर्य करने के लिये बहुत समय तक नहीं छोड़ा क्योंकि जैसे ही वह मैदान में आया वह तुरन्त ही बिजली की सी तेज़ी के साथ पहाड़ पर चढ़ गया और सीधा पहाड़ की चोटी पर पहुॅच गया।

उसने राजकुमारी को बहुत ही नम्रता से सिर झुकाया और उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया। राजकुमारी से उसने सोने का सेब लिया और अपने घोड़े पर बैठ कर नीचे उतर आया।

जब वह पहाड़ी से नीचे उतर रहा था तो उसके घोड़े के सोने के खुरों से आग की चिनगारियॉ निकल रही थीं। इस तरह की चमकीली धारी छोड़ता हुआ वह वहॉ से जंगल की तरफ चला गया। वहॉ जा कर वह एक तारे की तरह गायब हो गया।

अब तो पहाड़ के पास क्या हल्ला गुल्ला मचा। लोगों ने क्या खुशी से तालियॉ बजायीं। बिगुल बजने लगे। घोड़े हिनहिनाने लगे। ये आवाजें बहुत दूर तक सुनायी पड़ रही थीं। राजा ने सब जगह मुनादी पिटवा दी कि एक अनजान सुनहरे नाइट ने इनाम जीत लिया है।

अब तो बस यही बचा था कि उस सुनहरे अनजान नाइट के बारे में कुछ बातें जानी जायें क्योंकि उसको तो कोई जानता ही नहीं था। सारे लोगों को यही आशा थी कि वह अब किले में आयेगा पर वह तो आया ही नहीं।

यह देख कर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। राजकुमारी पीली पड़ गयी और बीमार हो गयी। राजा भी उदास हो गया। लोग कुछ कुछ गलत बोलने लगे। कुछ समय बाद उनकी वे बातें भी खत्म हो गयीं।

एक दिन राजा ने अपने किले में एक बहुत बड़ी मीटिंग की। इस मीटिंग में सबको आना था चाहे कोई छोटा हो या बड़ा ताकि राजकुमारी उनमें से अपने आप ही किसी को चुन सके।

सारे लोग बहुत खुश थे क्योंकि उनको राजकुमारी के सामने आने का मौका मिल रहा था। इसके अलावा यह एक शाही हुक्म था सो अनगिनत लोग वहाँ इकट्ठे हुए थे।

जब वहाँ सब इकट्ठे हो गये तो बड़ी शानो शौकत के साथ राजकुमारी अपने महल से बाहर आयी। उसके साथ उसकी दासियाँ भी थीं। वह सारे लोगों के बीच से हो कर गयी पर वह कितना भी अपने चारों तरफ ढूँढती उसको वह कहीं नहीं मिला जिसको वह ढूँढ रही थी।

जब वह आखिरी लाइन में पहुँची तब उसने एक आदमी को देखा जो भीड़ से छिप कर बैठा हुआ था। वह एक टोपी पहने बैठा था जो थोड़ी सी आगे को निकली हुई थी और एक भूरे रंग का शाल[50] पहना हुआ था जैसी गड़रिये लोग पहनते हैं। उससे उसका चेहरा कुछ छिपा हुआ था।

उसको देखते ही राजकुमारी उसकी तरफ दौड़ पड़ी। उसने उसकी टोपी ऊपर उठायी और उसके गले से लिपट गयी चिल्ला कर बोली — "वह यहाँ है। वह यहाँ है।"

[50] Translated for the word "Mantle" – see its picture above.

यह देख कर सारे लोग हॅस पड़े क्योंकि उन्होंने देखा कि वह तो राजा का गड़रिया है। इसको देख कर तो राजा भी चिल्ला पड़ा — "हे भगवान मुझे हिम्मत देना क्योंकि मेरा दामाद अब मेरा हिस्सा बनने जा रहा है।"

पर इस बात से उस आदमी को ज़रा सी भी शर्म नहीं आयी। बल्कि वह बोला — "ओह उसके लिये आपको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। जैसे आप राजा हैं वैसे ही मैं भी राजा का बेटा हूॅ।"

कह कर उसने अपना शाल उतार दिया।

अब उस पर कोई नहीं हॅस रहा था क्योंकि अब वहॉ भूरे गड़रिये की बजाय एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था जो अपने हाथ में राजकुमारी का दिया हुआ सोने का सेब लिये ऊपर से ले कर नीचे तक सोने से ढका हुआ था।

लोगों ने देखा कि वह तो वही नौजवान था जो शीशे के पहाड़ पर चढ़ा था।

बस उसके बाद तो शादी की दावत की तैयारी शुरू हो गयीं जैसी कि पहले कभी नहीं देखी गयी थीं। राजकुमार की शादी राजकुमारी से हो गयी और उसको राजा का आधा राज्य भी मिल गया।

शादी के बाद वे अपने राज्य में खुशी खुशी रहे। अगर वे मर नहीं गये होंगे तो वे अभी भी वहॉ रह रहे होंगे। पर उसके बाद उस

जंगली आदमी के बारे में कुछ नहीं सुना गया। बस यही इस कहानी का अन्त है।

12 पहेलियों वाली राजकुमारी[51]

शादी शर्तों पर की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बहुत सुन्दर राजकुमारी थी जिसका नाम था मारिया[52]। वह इतनी होशियार थी कि कोई भी पहेली बूझ सकती थी। मारिया एक बहुत ही होशियार लड़की थी जो सुन्दर तो थी ही साथ में अक्लमन्द भी बहुत थी।

ऐसी लड़की के लिये अब यह तो साफ ही था कि वह शाही दरबार की एक सी ज़िन्दगी से कितनी बोर हो गयी थी। राजकुमारी मारिया की किसी भी तरह की पहेली को बूझने की असाधारण योग्यता सत्रह साल पहले सामने आयी जब वह बहुत छोटी सी बच्ची थी।

उन दिनों दरबार के हॅसोड़िये[53] अक्सर लोगों से पहेलियॉ पूछा करते थे जिनको वे शहर के सरकस की यात्रा में सीखा करते थे। एक हॅसोड़ ऐसी ही एक यात्रा से बस अभी अभी दरबार में लौटा था और उसके पास उसकी यात्रा की कई दिल बहलाने वाली कहानियॉ थीं।

---

[51] The Princess of Riddles – a folktale from Portugal, Europe. By Laura Silva.
Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/342/preview

[52] Maria – name of the princess

[53] Translated for the word “Jester”

सो उस दिन उसने बड़े गर्व से कहा — "आज मेरे पास तुम्हारे लिये सबसे ज़्यादा मुश्किल पहेलियाँ हैं। उन पहेलियों को मेरे अलावा और कोई भी हल नहीं कर सका। मैं उनको तुम्हारे लिये समुद्र पार के एक छोटे से टापू से ले कर आ रहा हूँ।

वहाँ उस टापू पर एक भिखारी रहता है जो जो भी उससे मिलता है हर एक से यही कहता है कि मुझे तुमसे कोई पैसा नहीं चाहिये बस तुम मेरी पहेली का जवाब दे दो तो तुम अपने रास्ते पर बहुत जल्दी पहुँच जाओगे। पर अगर मेरी पहेली का जवाब नहीं दे पाओ तो मेरी झोली में पैसा डालते जाओ।"

हॅसोड़िये ने मुस्कुराते हुए उस भिखारी की आवाज की नकल बनायी और दरबार में बैठे लोगों से एक पहेली पूछी —

मैं एक किले जितना बड़ा हूँ फिर भी हवा से हलका हूँ
सौ आदमी और उनके घोड़े भी मुझे नहीं हिला सकते
बताओ मैं क्या हूँ

यह सुन कर सारे दरबार में कानफूसी होने लगी फिर सब लोग अपनी अपनी ठोड़ियों पर हाथ रख कर सोचने के पोज़ में बैठ गये।

आज तक यह पहेली जहाँ भी कही जाती वहीं लोग इसको सुन कर ऐसे ही बैठ जाते हैं। उस टापू पर जहाँ वह भिखारी रहता था वहाँ भी जो कोई भी इसको सुनता था इतना परेशान हो जाता था कि इसका जवाब नहीं बता पाता था कि ऐसी चीज़ क्या हो सकती थी।

हर बार जब भी यह पहेली कही जाती तो इसे कोई हल नहीं कर पाता। वह अपनी जेब से एक सिक्का निकालता भिखारी को देता और चला जाता।

यह इतने सारे दिनों तक चलता रहा कि उस भिखारी ने इससे बहुत सारे पैसे कमा लिये और उस टापू का सबसे अमीर आदमी बन गया।

बहुत सारे लोग उसके बारे में यह सोचते थे कि वह कोई धोखा देने वाला आदमी है। उसने यह पहेली बिना किसी हल के लिख ली है ताकि वह टापू पर रहने वालों को बेवकूफ बना सके।

पर हॅसोड़िये ने कहा कि ऐसा नहीं है कि यह भिखारी कोई धोखा देने वाला है। यह पहेली ठीक है और उसने यह पहेली बूझ ली है। और वही एक है जिसने यह पहेली बूझी है।

फिर उसने दरबार से कहा इस पहेली को हल करने का तरीका यह है कि इसके ऊपर बहुत सोच विचार न किया जाये।

जब हॅसोड़िये को यह पक्का हो गया कि अब दरबार में कोई भी लौर्ड इस पहेली को हल नहीं कर सकता तो उसने अपना सीना फुलाया और बोला — "इसका जवाब है... ।"

तभी नौजवान राजकुमारी ने बीच में ही बात काटी और बोली — "किले की परछाईं।"

उस समय जो लोग दरबार में इकट्ठा थे उन सबने राजकुमारी की तरफ घूम कर देखा और उसकी होशियारी पर आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दबा ली।

छोटी मारिया अपने गुड़ियों के घर से खेलती रही। उसको तो पता भी नहीं था कि उसने लोगों में कितना आश्चर्य पैदा कर दिया था। सारा दरबार ताली बजा कर हँस पड़ा और हँसोड़ के तो आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा कि एक बच्ची ने उसकी पहेली बूझ दी थी।

उसका रंग तो राजकुमारी की पोशाक के गुलाबी रंग से बस थोड़ा ही ज़्यादा गुलाबी पड़ गया था। और वह दरबार से जल्दी से हाँफता हुआ सा भाग गया।

अब यह तो कहने की जरूरत ही नहीं है कि उस दिन के बाद से वह हँसोड़ राजकुमारी का कोई बहुत बड़ा बड़ाई करने वाला तो रह नहीं गया था।

उसको लगा कि राजकुमारी ने उसकी बातों पर जो लोग पहले तालियाँ बजाते थे उससे उसकी वे तालियाँ चुरा ली हैं और अब वे लोग उसको सारे दरबार के सामने बेवकूफ समझते हैं। राजकुमारी की होशियारी की चर्चा उसके अपने राज्य से ले कर दूर दूर तक के देशों में फैल गयी।

जल्दी ही वह बीस साल की हो गयी। अब राजा को उसके लिये दुलहा खोजने की चिन्ता हुई। पर उसके लिये तो कई उम्मीदवार थे। वह किससे उसकी शादी करे।

मारिया की परेशानी यह थी कि ज़्यादातर ड्यूक लौर्ड और कुलीन लोग उसको कुछ बेवकूफ से लगते थे। अक्सर वह उनको देख कर बता सकती थी कि वे कैसे बर्ताव करेंगे।

एक दिन मारिया ने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं एक ऐसे लड़के से शादी करना चाहती हूँ जिसको मैं सचमुच में प्यार करूँ। मैं केवल उसी से शादी करूँगी जिसकी पहेली मैं न बूझ सकूँ।"

मारिया ने अपने पिता को समझाया कि कोई ऐसा आदमी ही उनकी दुनियॉ को रोशन रख सकेगा जो इतना होशियार होगा क्योंकि ऐसे ही आदमी से ज़िन्दगी में हमेशा आश्चर्य और एक प्रकार की खुशी बनी रहेगी। वह अपने तेज़ दिमाग और आश्चर्य भरे स्वभाव से सचमुच में मेरा दिल जीत लेगा।

राजा राजी हो गया और मुकाबला रखा गया। अब किसी भी उम्मीदवार के लिये मुकाबला यह था कि वह उम्मीदवार राजकुमारी से कोई पहेली पूछेगा और जिस उम्मीदवार की पहेली का राजकुमारी जवाब दे देगी उस उम्मीदवार को किले के तहखाने में बन्द कर दिया जायेगा। और जिस उम्मीदवार की पहेली का राजकुमारी जवाब नहीं दे पायेगी उसी से उसकी शादी होगी।

इस मुकाबले के लिये राजा का तर्क यह था कि यह मुकाबला सबसे अच्छे उम्मीदवार लोगों के लिये था।

समय के साथ यह खबर दूर और पास सब देशों में फैल गयी। यहॉ तक कि यह खबर एक कोने के देश में भी पहुँच गयी जहॉ मैनुअल[54] नाम का एक किसान का बेटा रहता था।

अब इस नौजवान किसान को मुकाबले बहुत अच्छे लगते थे और वह हमेशा से ही राजकुमारी के बारे में उत्सुक रहता था सो वह उस किले की तरफ अपनी पहेली रखने के लिये और राजकुमारी का दिल जीतने के लिये चल दिया।

मैनुअल के गॉव वालों ने सोचा कि वह पागल हो गया है। सब जानते थे कि राजकुमारी राजा का तहखाना ऐसे अक्लमन्द आदमियों से भर रही थी जिनकी पहेलियों का जवाब देना राजकुमारी के लिये कोई मुश्किल न हो।

वे सब किसान के बेटे की हिम्मत की बड़ाई तो कर रहे थे पर फिर भी उनको यह भी यकीन था कि वह नौजवान किसान भी उसी तरह से उस राजकुमारी के तहखाने में जायेगा जैसे पहले और लोग जा चुके हैं।

मैनुअल ने गॉव वालों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह सुन्दर राजकुमारी से मिलने के लिये बहुत उत्सुक था

[54] Manuel – name of the peasant boy

इसके अलावा वह उसकी बोरियत में भी उत्सुक था क्योंकि वह यही नहीं समझ पा रहा था कि कोई भी आदमी इतना रूखा कैसे हो सकता है जबकि दुनियॉ में इतनी सुन्दरता फैली पड़ी है।

उस नौजवान किसान को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि उसके पास राजकुमारी से पूछने के लिये कोई पहेली नहीं थी लेकिन बस वह तो अपनी यात्रा पर चल पड़ा था क्योंकि उसको विश्वास था कि वह अपनी यात्रा में ही कोई पहेली निकाल लेगा।

मैनुअल इतनी देर तक चला कि समय के खोने का उसके लिये कोई मतलब ही नहीं था। हालॉकि यात्रा इतनी मुश्किल थी कि कोई मजबूत से मजबूत आदमी भी उस यात्रा से टूट सकता था पर मैनुअल तो हर कदम पर प्रकृति की सुन्दरता को देखते हुए अपने आनन्द में चलता ही जा रहा था।

उसको बड़ी बड़ी नदियों के बहने का संगीत बहुत अच्छा लग रहा था। उसको जंगल के प्राणियों की आवाजें बहुत अच्छी लग रही थीं। उसको पेड़ों में बहती हवा की सरसराहट बहुत अच्छी लग रही थी।

वह उन जानवरों के रास्तों पर ऑखमिचौली खेलता जा रहा था जो उसका रास्ता काट रहे थे। और वह हमेशा यह देखने के लिये भी रुक जाता कि उस दिन का सूरज का डूबना पिछले दिन के सूरज के डूबने से कितना अलग था।

मैनुअल राजकुमारी के किले के जितना पास आता जाता उतना ही वह उसको कम समझता जाता। क्योंकि उसको उस आदमी के लिये अफसोस होता जो इस दुनियॉ पर आश्चर्य नहीं करता जिसके अन्दर इतनी सुन्दरता और इतना आश्चर्य भरा पड़ा था। उसको यह लगता ही नहीं था कि इतनी सुन्दर आश्चर्य भरी दुनियॉ में कोई कैसे बोर हो सकता है।

मैनुअल को अब किला दिखायी देने लगा था पर अभी तक उसके दिमाग में राजकुमारी के लिये कोई पहेली नहीं थी।

पर उस शाम एक अजीब सी घटना घटी। जब नौजवान किसान एक जंगली सूअर से अपना शाम का खाना बनाने बैठा तो उसने उसका पेट काटा। उसने देखा कि उसके पेट में तो एक मेंढक था। मैनुअल ने सोचा कि सूअर तो मेंढक नहीं खाते फिर यह मेंढक इस सूअर के पेट में कहॉ से आया।

और जैसे ही यह विचार उसके दिमाग में आया कि मेंढक तो उसके पेट में से कूद कर जंगल में भाग गया। मैनुअल को यह सब देखने में बहुत मजेदार लगा और वह इस बात पर अपने आप ही बहुत देर तक हॅसता रहा।

उसका यह हॅसना तब तक नहीं रुका जब तक उसके दिमाग में यह नहीं आया कि इस अजीब घटना को तो वह राजकुमारी के लिये पहेली बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकता है।

अगले दिन वह किले में आ गया तो उसको बढ़िया खाने पीने को और आराम से ठहराने की जगह दी गयी। उसको पहनने के लिये बहुत बढ़िया कपड़े दिये गये और फिर उसका परिचय कराने के लिये उसको राजकुमारी के महल में ले जाया गया।

उसने देखा कि राजकुमारी तो उससे भी बहुत ज़्यादा सुन्दर थी जितना उसने उसके बारे में उसने सुन रखा था। और जब उसने मैनुअल को नमस्ते की तब तो उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला।

यह सब देख कर तो नौजवान किसान ने अपने सारे देवताओं से प्रार्थना की कि भगवान करे राजकुमारी उसकी पहेली का जवाब न दे सके क्योंकि वह उसके साथ जितना सम्भव हो सकता था उतना समय बिताना चाहता था। हो सकता है कि वह उससे शादी भी करना चाहता हो।

मैनुअल अपनी पूरी हिम्मत बटोर कर आगे बढ़ा और राजकुमारी से अपनी पहेली पूछी —

मैंने तुम्हारी भूख तो शान्त की पर अपनी भूख शान्त नहीं कर सका
खाना कूद कर दौड़ में भाग गया पेट को भी आह भरने में देर हो गयी
अगर ऐसी बात है तो मैं क्या हूँ

यह पहेली सुन कर मारिया तो चुप रह गयी। वह तो यह सोच भी नहीं पायी कि मैनुअल उस मेंढक के बारे में कुछ कह रहा था जो उसने पिछली रात देखा था।

उसका दिमाग उस पहेली को सुलझाने के लिये इधर उधर दौड़ने लगा पर उसके दिमाग में ही कुछ नहीं आया।

ऐसा पहली बार हो रहा था कि मारिया किसी पहेली का जवाब उसी समय नहीं दे पा रही थी। फिर भी उसने इस बहादुर सीधे सादे नौजवान से बेवकूफ बनने से इनकार कर दिया। और इससे शादी करने की तो वह सोच भी नहीं सकती थी।

राजकुमारी ने मैनुअल से कहा — "आपकी पहेली के लिये धन्यवाद जनाब। आप हमारे महल में तीन चॉद तक ठहरें ताकि मैं आपकी इस पहेली पर विचार कर सकूँ।"

मैनुअल को शाही मेजबान के महल की आराम की ज़िन्दगी बिताने में भला क्या ऐतराज हो सकता था। वह तुरन्त ही मान गया।

उसको पूरा विश्वास था कि कुछ भी हो जाये और राजकुमारी कितना भी समय ले ले पर वह यह कभी नहीं जान पायेगी कि उसकी यात्रा में उस शाम जंगल में उसके साथ क्या हुआ था।

उधर राजकुमारी भी तुरन्त ही जान गयी थी कि वह इस पहेली का जवाब किसी तरह भी नहीं दे पायेगी सो उसने सोचा कि इतने समय में वह उसको हराने का कोई और प्लान निकालेगी।

ऐसा प्लान निकालने में मारिया को कोई बहुत ज़्यादा समय नहीं लगा क्योंकि वह तो एक बहुत ही हाजिरजवाब राजकुमारी थी।

और इस प्लान के अनुसार मारिया ने अपनी एक सबसे सुन्दर दासी को मैनुअल के कमरे में भेजा। इस दासी का नाम लिडिया[55] था। और इसका काम यह था कि वह मैनुअल को अपनी सुन्दरता के जाल में फॉस कर अपने से प्रेम करने पर मजबूर कर ले और फिर चालाकी से उसकी पहेली का जवाब उससे पूछ ले।

इस बात में राजकुमारी मारिया का तर्क यह था कि इससे केवल ऐसा ही नहीं लगेगा कि यह पहेली मैंने तीन चॉद में बूझी है पर बाद में मैनुअल भी शायद मुझसे शादी करना न चाहे क्योंकि शायद वह लिडिया को चाहने लगे।

पर मारिया की मैनुअल को लिडिया की तरफ आकर्षित करने के लिये अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद मैनुअल लिडिया की तरफ आकर्षित नहीं हुआ। उसको लिडिया का साथ तो अच्छा लगा उसकी दी हुई शराब भी अच्छी लगी पर राजकुमारी मारिया उसके दिमाग से नहीं निकली।

वह वहॉ समय गुजारने के लिये बहुत उत्सुक नहीं था क्योंकि उसको पूरा यकीन था कि इन दिनों में वह और राजकुमारी एक दूसरे से बहुत कुछ सीख लेंगे। असल में मैनुअल को पक्का यकीन था कि उनकी जोड़ी बहुत अच्छी रहेगी।

जब लिडिया मैनुअल से पहेली का जवाब बिना जाने ही लौट गयी तो राजकुमारी मारिया बहुत दुखी हुई।

[55] Lidia – name of the first lady-in-waiting

सो अगली सुबह उसने एक और दासी मैनुअल के पास भेजी जिसका नाम कारमैन[56] था। इस बार उसने उसके हाथ एक और शराब भेजी जो पहले दिन की शराब से भी ज़्यादा तेज़ थी। पर कारमैन भी उससे बिना जवाब जाने ही लौट आयी।

तीसरी रात राजकुमारी ने अपनी आखिरी दासी भेजी जिसका नाम रोज़ा[57] था। पर इससे पहले कि रोज़ा मैनुअल के कमरे में पहुँचती बड़ा हॅसोड़िया वहाँ आया और उस नौजवान किसान से बोला — "ओ लड़के, क्या तुम वाकई इतने सीधे हो कि तुमको यह दिखायी नहीं पड़ रहा कि तुम्हारे साथ यह चाल खेली जा रही है?

हालाँकि यह नियमों के खिलाफ है कि तुम्हारे पास इस तरह से दासियाँ भेजी जायें पर फिर भी राजकुमारी तुम्हारे पास दासियाँ भेज रही है ताकि वह तुम्हारी पहेली का जवाब पा सके। याद रखना कि राजकुमारी बजाय अक्लमन्द के चालाक ज़्यादा है।"

हालाँकि भोला भाला मैनुअल यह सब सुन कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ फिर भी उसने अपने बर्ताव के तरीके नहीं बदले। उस शाम उसने अपने तीसरे मेहमान का बड़े अच्छे से स्वागत किया।

रोज़ा जब मैनुअल के पास आयी तो एक कविता की किताब और एक बहुत ही तेज़ शराब का जग ले कर आयी। मैनुअल ने

[56] Carmen – name of the second lady-in-waiting
[57] Rosa – name of the third lady-in-waiting

उसकी कविताऐं सुनीं और थोड़ी सी शराब पी पर उसका बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता था।

उस रात रोज़ा के जाने पर मैनुअल ने रोज़ा को अपनी पहेली का एक गलत जवाब दे दिया। और राजकुमारी की भेजी हुई कविता की किताब उसको धोखा देने के सबूत में अपने पास रख ली।

मैनुअल ने सोचा कि — "अगर राजकुमारी इसी तरह से बर्ताव करना चाहती है तो मैं राजकुमारी को उसके खेल में उसी को मात दे दूँगा।"

अगले दिन आखिरी सुबह सारा दरबार यह देखने के लिये जुड़ा हुआ था कि आज एक और नौजवान ज़िन्दगी भर के लिये राजकुमारी के तहखाने में जायेगा। मैनुअल शाही दरबार के बीच अकेला खड़ा था और राजकुमारी के आने का इन्तजार कर रहा था।

राजकुमारी आयी और अपनी सबसे कोमल आवाज में बोली — "मैं तुम्हारे सवाल पर तीन दिन विचार करती रही। और इस सबके लिये मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ पर मुझे बहुत अफसोस है कि तुम्हारी पहेली का जवाब यह है...

कि प्रकृति में अक्सर अजीब अजीब बातें हुआ करती हैं। जब तुम यहाँ आ रहे थे तो तुम्हारे सामने एक बड़ा खरगोश आया जिसने

एक टिड्डे को खा लिया। इसलिये तुम्हारी पहेली का जवाब यह है कि "मैं एक टिड्डा हूँ।"

यह सुन कर मैनुअल हँसा — "राजकुमारी जी आपकी कोशिश तो बहुत अच्छी है।" कह कर उसने अपनी जेब से रोज़ा की दी हुई कविता की किताब निकाली और बोला — "पर मुझे पूरा विश्वास है कि आपको इस पहेली का जवाब किसी ने गलत बताया है।"

यह सुन कर राजकुमारी की भौंहें तो आसमान पर चढ़ गयीं और रोज़ा तो शर्म के मारे बेहोश ही हो गयी। उसके बाद कारमैन और लिडिया भी बेहोश हो गयी।

सारा दरबार शोर से गूँज गया और सब दरबारियों को लगा कि बेचारे मैनुअल के खिलाफ कोई चाल खेली गयी है।

भीड़ में से एक इलजाम लगाने वाली सी आवाज आयी — "क्या राजकुमारी जी ने इस नौजवान को धोखा देने की कोशिश की है? क्या आप अपनी दासियों को इसके पास भेजती रही हैं ताकि आपको पहेली का जवाब पता चल जाये?"

पर दयालु मैनुअल ने उन सबको शान्त कर दिया और एक बार फिर राजकुमारी से कहा — "आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये राजकुमारी जी। मैं आपसे बिल्कुल शादी की इच्छा नहीं रखता जब तक कि आप मुझसे शादी करना नहीं चाहेंगी।

उस पहेली को छोड़िये मैं अब आपके सामने एक और नयी पहेली रखता हूँ। अगर आप उस पहेली का सही सही जवाब दे

देंगी तो फिर हम इस बात पर राजी हो जाते हैं कि मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा और फिर आपको कभी तंग नहीं करूँगा।

पर अगर आप मेरी दूसरी पहेली का जवाब नहीं दे पायीं तो आप उन सबको आजाद कर देंगी जिनको आपने अपने तहखाने में डाल रखा है।"

यह सुन कर तो मारिया गुस्से से लाल पीली हो गयी क्योंकि उस नौजवान ने तो उसको सारे दरबार के सामने पहले ही बेवकूफ बना दिया था कि वह एक धोखा देने वाली है।

अब तो उसकी बस एक ही इच्छा रह गयी थी कि वह उसको अपने पहरेदारों से पकड़वा कर बाहर निकलवा दे पर वह यह भी नहीं कर सकती थी। क्योंकि इसके बाद अब उसके पास कोई और चारा नहीं था कि वह उसकी बात मान ले।

पर उसी समय उसके दिल में एक और नया अजीब विचार उठ रहा था जिसे उस नौजवान के लिये उसकी बड़ाई कहा जा सकता था या फिर उसको पाने की इच्छा।

तभी वह नौजवान मैनुअल बोला — "वह क्या चीज़ है जो निगली भी जा सकती है और जो निगल भी सकती है।"

राजकुमारी मारिया इस पहेली का जवाब तभी की तभी बता सकती थी। इसका जवाब था "घमंड"। और यह घमंड ही था जो राजकुमारी अब निगलने को तैयार थी।

इस कहानी का अन्त इस कहानी में नहीं दिया हुआ है पर वह साफ नजर आता है कि राजकुमारी ने मैनुअल की दूसरी पहेली का भी जवाब नहीं दिया और घमंड निगल कर हारने का बहाना किया। फिर अपने वायदे के मुताबिक उसने मैनुअल से शादी कर ली और जिनको उसने अपने तहखाने में बन्द कर रखा था उन सबको छोड़ दिया।

13 होशियार राजकुमारी[58]

शादी शर्तों पर की लोक कथाओं में यह कथा यूरोप महाद्वीप के ऐस्टोनिया देश की है। यह बात वहॉ के राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को मालूम थी कि राजा की बेटी बहुत सुन्दर थी।

और राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को यह भी मालूम था कि राजकुमारी हाजिर जवाब और बोलने में बहुत ही चतुर थी। वह अपनी बातों से किसी को भी नहीं बल्कि राजा को भी चुप कर सकती थी।

यह सब देखते हुए यह जाहिर था कि राजा को उससे बहुत परेशानी थी। और वह परेशानी यह थी कि उसकी बेटी से कोई शादी नहीं कर सकता था जब तक कि उसकी बेटी की ज़बान काबू में न हो।

सो राजा ने वह सब कुछ किया जो वह उन हालात में कर सकता था। इस सिलसिले में उसने एक ऐलान कर दिया कि वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा जो उसको बहस में हरायेगा।

यह सब आसान तो नहीं था पर फिर भी बहुत से राजकुमार वहॉ अपनी अपनी किस्मत आजमाने आये। और इतने सारे राजकुमार वहॉ आये कि लोग देख कर दंग रह गये।

---

[58] The Clever Princess – a folktale from Estonia, Europe. Translated from the Web Site : http://www.themuralman.com/estonia/estonia_folk_tale.html Collected and retold by Phillip Martin

जैसे ही एक उम्मीदवार हार कर महल छोड़ कर जाता था दो और आ जाते थे।

जब इतने सारे राजकुमार राजकुमारी का हाथ मॉगने आ रहे थे तो राजकुमारी की दासी को जैसे वह पहले बनाया करती थी राजकुमारी के बालों को वैसे ही बाल बनाने का समय ही नहीं मिल पा रहा था।

राजा की इस घोषणा से पहले राजकुमारी के बाल बहुत सुन्दर थे। पर अब समय न मिलने की वजह से उनकी खूबसूरती कम होती जा रही थी

और जब से यह बातचीत शुरू हुई तब से, क्योंकि राजकुमार बहुत सारे थे इसलिये यह बातचीत दिन के साथ रात में भी चलती थी, तो राजकुमारी को पूरा आराम भी नहीं मिल पाता था इसलिये उसकी ऑखों के नीचे गहरे गड्ढे भी पड़ गये थे।

बातचीत में हर एक के साथ वह जीत जाती इसलिये हर राजकुमार को महल छोड़ कर जाना ही पड़ जाता। इस चक्कर में महल के रोजाना के काम काज में रुकावट आने लगी क्योंकि महल में रोज बहुत सारे आदमी आते।

हालत इतनी खराब हो गयी कि राजा को एक और ऐलान करवाना पड़ा — "कोई भी नौजवान जो राजकुमारी से शादी की इच्छा से महल में आता है वह अगर राजकुमारी से बहस में हार गया तो उसको कड़ी से कड़ी सज़ा दी जायेगी।"

राजा की इस नयी घोषणा से आने वाले नौजवानों की गिनती में एकदम से बहुत उतार आ गया। पहली बार राजकुमारी बहुत दिनों के बाद मुस्कुरायी। बहुत दिनों के बाद उसने अपने बाल बनवाये।

पर राजा के चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं थी।

वह सोचने लगा — "अगर मेरी बेटी को कोई नहीं हरा सका तो मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह जायेगी।"

उसी समय कुछ ऐसा हुआ कि एक नौजवान भिखारी ने राजा का यह ऐलान सुना तो उसने सोचा — "मैं राजकुमारी से बहस में अच्छा क्यों नहीं हो सकता। अगर मैं जीत गया तो मुझे महल में रहने को मिल जायेगा और अगर मैं हार गया तो देखता हूँ कि राजा मुझे क्या सजा देता है।"

यह सोच कर वह भिखारी राजा के महल की तरफ चल दिया। जब वह जा रहा था तो रास्ते में उसने एक मरा हुआ कौआ देखा। उसने उसको देख कर मजा लेते हुए सोचा "क्या पता यह किस काम आ जाये।" और उसने वह कौआ अपनी जेब में रख लिया।

वह फिर महल की तरफ चल दिया। आगे जा कर उसको बीच सड़क पर पड़ा एक पुराना टब मिला।

उसको देख कर उसे याद आयी कि उसकी माँ ने कहा था कि कोई भी चीज़ बर्बाद नहीं करनी चाहिये। चाहे वह टूटा हुआ टब ही क्यों न हो, क्या पता यह कब काम आ जाये। यही सोच कर

उसने वह टब उठा कर अपनी पोटली में रख लिया और फिर आगे चल दिया।

महल जाते समय उसको कई और चीज़ें भी मिलीं सो उसने वे सब चीज़ें अपनी पोटली में उठा कर रख लीं और महल की तरफ चलता रहा।

फिर उसको एक डंडा मिला, एक हूप[59] मिला और एक बूढ़े बकरे का सींग मिला। हर चीज़ को उठाते हुए उसने यही सोचा कि पता नहीं कौन सी चीज़ कब काम आ जाये इसलिये उसने वे सब चीज़ें उठा कर रख लीं।

सो जब तक वह महल पहुँचा उसकी पोटली कई चीजों से भर गयी थी। जब वह महल के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ खड़े दरबान ने उससे पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "मैं यहाँ राजकुमारी जी से मिलने और उनसे शादी करने आया हूँ। क्या तुम अभी भी मुझसे बदतमीजी से बात करोगे जबकि मैं तुम्हारा होने वाला राजकुमार हूँ?"

यह सुन कर तो वह नौकर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "हमारी इतनी सुन्दर राजकुमारी तुमसे शादी क्यों करने लगी? इससे पहले कि राजा के सिपाही तुमको देख लें तुम यहाँ से भाग जाओ।"

[59] Hoop – a large ring which is normally used to put on waist and turn it around it fast.

पर वह नौजवान भिखारी तो वहाँ उस नौकर की ना सुनने के लिये नहीं आया था। सो उसने उससे प्रार्थना की कि वह कम से कम राजकुमारी को यह तो बता दे कि कोई उससे शादी करने की इच्छा से खड़ा है।

काफी मिन्नतों के बाद वह नौकर उसको अन्दर ले जाने के लिये राजी हो गया। राजकुमारी को भी कई हफ्ते बीत गये थे किसी से बहस किये सो उसने उस नौजवान की प्रार्थना मान ली और उसको अन्दर बुला भेजा।

जैसे ही उस नौजवान ने राजकुमारी को देखा तो बोला — "सलाम, ओ मेरी राजकुमारी जिसके हाथ और दिल दोनों बर्फ के हैं।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उसको काटा — "मेरे दिल के साथ कोई गड़बड़ नहीं है। और जहाँ तक मेरे हाथों का सवाल है वे इतने गर्म हैं कि किसी कौए को भी भून सकते हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि उसकी यह बात उस नौजवान को चुप कर देगी पर उसको तो यह पता ही नहीं था कि वह नौजवान कितना होशियार है या फिर उसकी पोटली के अन्दर क्या है।

उस नौजवान ने आश्चर्य से पूछा — "क्या कहा? एक कौए को भूनने के लिये काफी गर्म हैं? यह तो अच्छा है एक कौआ मेरे पास भी है। देखते हैं कि आपके हाथ इस कौए को भून सकते हैं या नहीं।"

राजकुमारी भी इतनी बेवकूफ नहीं थी। उसको आश्चर्य तो बहुत हुआ कि उसके पास कौआ कहाँ से आया पर उसने उसको अपने चेहरे पर झलकने नहीं दिया। वह हार मानने वाली भी नहीं थी।

वह बोली — "हम उसको अभी और यहीं भूनेंगें अगर हमारे पास कोई टब हो जिसमें हम उस चिड़िया को रख कर भून सकें।"

नौजवान भिखारी ने पूछा — "तो आपको टब चाहिये? इत्तफाक की बात है कि मेरे पास टब भी है। अरे वह यहीं तो था।" कह कर वह अपनी पोटली में टब ढूँढने लगा।

जब वह भिखारी अपनी पोटली में टब ढूँढ रहा था तब भी वह राजकुमारी शान्त बैठी थी।

जब भिखारी ने वह टब निकाला तो राजकुमारी ने उसमें एक दरार देख ली तो वह हँस कर बोली — "तुम क्या सोचते हो कि किसी टूटे बर्तन में चिड़िया पकेगी? यह तो शाह की बेइज़्ज़ती है।"

वह नौजवान मुस्कुराया और बोला — "ओ मेरी राजकुमारी, इस दरार को बन्द करने के लिये मेरे पास एक हूप और एक डंडा है।"

यह सुन कर राजकुमारी की बाँयी आँख फड़कने लगी और फिर तो वह फड़कनी रुकी ही नहीं।

राजकुमारी के पेट में हलचल सी होने लगी। उसने सोचा इस भिखारी के पास तो सब चीज़ों का जवाब है पर वह इस बात को अभी भी मानना नहीं चाहती थी।

वह बोली — "ओ भिखारी, तुम तो बड़े चिकने हो। तुम मेरे शब्दों को टेढ़ा कर देते हो और तुम किसी भी तरह फॉसे नहीं जाते।"

भिखारी मुस्कुराया — "चिकना और साथ में टेढ़ा भी। ओ राजकुमारी शायद ऐसा कुछ मेरी पोटली में भी है। हॉ यह है न वह। देखिये बकरे का यह टूटा हुआ सींग चिकना भी है फिर भी यह कितनी सुन्दरता से मुड़ा हुआ है। है न राजकुमारी जी?"

भिखारी अपने सवाल के जवाब का इन्तजार कर रहा था पर वहॉ तो कोई जवाब नहीं था। राजकुमारी इसके आगे कुछ नहीं कह सकी।

राजा के साथ सारे लोग आश्चर्य में पड़ गये। राजा ने अपने ऐलान के मुताबिक अपनी बेटी की शादी उस भिखारी से कर दी। सब उस शाही शादी में शामिल हुए।

और फिर उसके बाद तो किसी को कुछ याद ही नहीं रहा। शादी के बाद जब मेहमान जाने लगे तो राजा ने एक और ऐलान किया —

"मेरे मेहमानों, अपने दामाद से मैंने एक सबक सीखा है कि कभी यह मत कहो कि तुम अपना उद्देश्य हासिल नहीं कर सकते

और अपने सपने पूरे नहीं कर सकते। अगर तुम अपनी अक्लमन्दी इस्तेमाल करो तो तुम सब कुछ हासिल कर सकते हो।"

14 जादुई मुर्गी[60]

एक बार की बात है कि थ्राइस नाइन[61] जमीन के उस पार थ्राइस दसवीं जमीन पर, हमारे देश में नहीं कहीं और, एक बूढ़ा और एक बुढ़िया बहुत गरीबी में रहते थे।

उनके दो बेटे थे जो बहुत ही छोटे थे। इतने छोटे कि वे अभी खेतों में काम करने के लायक नहीं थे। सो उस बूढ़े को अकेले ही खेतों में काम करना पड़ता था। वह खुद ही बाहर जाता था। खुद ही सारे मजदूरों की देखभाल करता था। और इन सबके बदले में उसको क्या मिलता केवल कुछ पैन्स[62]।

एक बार वह घर से जा रहा था कि उसको रास्ते में एक दुखी पियक्कड़ मिल गया। उसके हाथ में एक मुर्गी थी। उसने बूढ़े से पूछा — "ओ बूढ़े क्या तुम मुझसे यह मुर्गी खरीदोगे?"

बूढ़े ने पूछा — "तुमको इसका कितना दाम चाहिये?"

पियक्कड़ बोला — "पचास कोपेक[63]।"

---

[60] The Miraculous Hen – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book :
"Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. This story is taken from the Web Site :
https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales
Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[61] Translated for the words "Beyond thrice nine lands" – maybe 27 lands far

[62] Pence is the currency of Britain – Pound, Shilling and Pence.

[63] One Kopeck or Copeck is the 1/100th part of Rouble – the Russian currency. 1 Rouble = 100 Kopecks

बूढ़ा बोला — "इस दाम में तो यह बहुत मॅहगी है। लो ये कुछ पैन्स ले लो और इसे मुझे दे दो। इतने पैन्स तुम्हारे लिये काफी होंगे। इससे तुम एक लिटर शराब खरीद सकते हो। उसे तुम घर जाते हुए पीते जाना और फिर जा कर सो जाना।"

सो पियक्कड़ ने उससे पैन्स लिये मुर्गी उसको दी और अपने रास्ते चला गया। बूढ़ा भी मुर्गी ले कर घर आ गया। पर उसके परिवार वाले बहुत भूखे थे। उनके पास रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं था।

सो जैसे ही वह घर में घुसा तो वह बोला — "लो देखो मैं यह मुर्गी तुम्हारे लिये खरीद कर लाया हूँ।"

पर उसकी पत्नी ने उसकी तरफ गुस्से से देखा और उसे डॉट लगायी — "तुम कितने पुराने बेवकूफ हो। लगता है कि तुम बिल्कुल पागल हो गये हो। हमारे घर में हमारे बच्चे बिना रोटी के भूखे बैठे हैं और तुम यह एक मुर्गी और खरीद लाये हो खिलाने के लिये।"

यह सुन कर बूढ़े को भी गुस्सा आ गया। वह गुस्से में भर कर बोला — "जबान सॅभाल कर बात कर ओ बेवकूफ स्त्री। क्या मुर्गी इतना सारा खाती है? यह हमको एक अंडा रोज का देगी और फिर बहुत सारे चूज़े देगी। हम उसके बच्चों को बेच कर उसके आये पैसे से रोटी खरीद लेंगे।"

कह कर बूढ़े ने उसके रहने के लिये एक छोटा सा घर बनाया और उसको अपने छोटे से स्टोव के नीचे रख दिया। सुबह सवेरे वह उसको देखने गया तो उसने देखा कि मुर्गी ने तो एक बहुत ही सुन्दर रंग वाला रत्न[64] दिया है।

यह देख कर वह अपनी पत्नी पास भागा गया और उससे कहा — "ओ बुढ़िया देखा तूने? दूसरे लोगों की मुर्गियॉ तो अंडे देती हैं मगर हमारी मुर्गी ने तो रत्न दिया है। अब हम क्या करें।"

बुढ़िया बोली — "इसको शहर ले जाओ शायद वहॉ इसका कोई खरीदार मिल जाये।"

सो बूढ़ा उस रत्न को ले कर शहर चला गया और वहॉ की कई सरायों में उसको बेचने के इरादे से दिखाया। उसको खरीदने के इरादे से वहॉ बहुत सारे सौदागर इकट्ठे हो गये। उन सबको उसका दाम ऑकने में काफी समय लग गया। फिर उसका दाम पॉच सौ रूबल[65] ऑका गया।

उस दिन से बूढ़े ने उन जवाहरातों का सौदा करना शुरू कर दिया जो उसकी मुर्गी देती थी। वह बहुत जल्दी ही बहुत अमीर हो गया। उसने अपना नाम भी सौदागरों की लिस्ट में लिखवा लिया। एक दूकान खोल ली। कुछ नौकर रख लिये। कुछ जहाज़ भी ले लिये जिससे वह अपनी चीज़ें बाहर भी भेजने लगा।

[64] Translated for the word "Jewel"

[65] Rouble is the currency of Russia

एक बार वह विदेश जा रहा था तो जाते समय उसने अपनी पत्नी से कहा कि उसके पीछे वह उस मुर्गी का खास ख्याल रखे। उसने कहा — "इसकी अपनी ऑखों से भी ज़्यादा देखभाल करना। अगर तुमसे यह खो गयी तो समझ लो कि इसके लिये तुमको अपना सिर देना पड़ेगा।"

जैसे ही बूढ़ा उसे छोड़ कर वहॉ से गया वह बुढ़िया बहुत बुरा बुरा सोचने लगी क्योंकि उसको एक नौजवान नौकर से प्यार हो गया था। एक दिन नौकर ने उससे पूछा — "ये इतने कीमती जवाहरात तुम लाती कहॉ से हो।"

वह बोली — "ओह वह तो हमारी मुर्गी देती है।"

सो उस नौकर ने वह मुर्गी उठा ली और उसको बहुत देर तक देखता रहा। देखते देखते उसने उसके दॉये पंख के नीचे सोने से लिखा देखा "जो इस मुर्गी का सिर खायेगा वह राजा बन जायेगा। और जो इसका जिगर खायेगा उसके मुॅह से सोना निकलने लगेगा।"

उसने बुढ़िया से कहा कि वह उस मुर्गी को उसके खाने के लिये पका दे। बुढ़िया बोली — "यह मैं कैसे कर सकती हूॅ। मेरे पति जब वापस आयेंगे तो बहुत सख्त सजा देंगे।"

पर नौकर उसकी कोई सफाई सुनने वाला नहीं था। उसने कहा — "तुम इसको पका दो बस मुझे और कुछ नहीं सुनना।"

अगले दिन बुढ़िया खाना बनाने बैठी और वह खाने के लिये मुर्गी की गर्दन मरोड़ने ही वाली थी ताकि वह उसको उसके सिर और गर्दन के साथ उसे पका सके कि रसोइये ने उसकी गर्दन मरोड़ कर मारा और उसे ओवन में रख दिया और खुद बाहर चला गया।

तभी घर के बच्चे स्कूल से लौट कर घर आये। वे भूखे थे सो उन्होंने कुछ खाना ढूँढने के लिये ओवन में झाँका तो उनको वहाँ मुर्गी रखी दिखायी दे गयी। बड़े भाई ने उसका सिर खा लिया और छोटे भाई ने उसका जिगर।

जब खाने का समय हुआ तो खाना मेज पर लगाया गया। पकी हुई मुर्गी भी रखी गयी पर जब नौकर ने देखा कि मुर्गी का सिर और जिगर उसमें नहीं है तो वह बुढ़िया से बहुत नाराज हुआ और उससे खूब झगड़ा कर के अपने घर चला गया।

बुढ़िया उसके पीछे भागी और उसको मनाने की कोशिश भी की पर वह यही कहता रहा — "तुम अपने बच्चों को लाओ और उनका दिमाग और जिगर मुझे खाने को दो नहीं तो मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं।"

सो बुढ़िया ने अपने बच्चों को सुलाया रसोइये को बुलाया और उससे जब तक वे सो रहे हों उन बच्चों को जंगल ले जाने के लिये कहा। और कहा कि वहाँ वह उनके दिमाग और जिगर निकाल कर उन्हें खाने के लिये पकाने के लिये कहा।

रसोइया उनको एक घने जंगल में ले गया। वहाँ जा कर वह अपना चाकू तेज़ करने लगा। इतने में बच्चे जाग गये और उन्होंने पूछा — "तुम यह चाकू क्यों तेज़ कर रहे हो?"

वह बोला — "क्योंकि तुम्हारी माँ ने मुझसे कहा है कि मैं तुम लोगों का दिमाग और जिगर निकाल कर ले जाऊँ और खाने में पका दूँ।"

यह सुन कर बच्चे रो पड़े और बोले — "बाबा हमको मारो नहीं। हम तुम्हें जितना भी सोना तुम चाहोगे उतना सोना दे देंगे। बस हमारे ऊपर दया करो और हमें जाने दो।"

सो छोटे लड़के ने उसकी झोली सोने से भर दी। रसोइया सन्तुष्ट हो गया और उसने दोनों बच्चों को छोड़ दिया। बच्चे जंगल में आगे चले गये और रसोइया घर लौट आया।

रसोइये की खुशकिस्मती से रास्ते में उसको एक कुतिया मिली जो अपने दो बच्चों के साथ जा रही थी। उसने उसके दोनों बच्चे लिये उनके दिमाग और जिगर निकाले और उन्हें खाने में पका दिया।

नौकर वह सब खा कर बहुत खुश था। वह सब सटक गया और उसके बाद न तो वह राजा बना न राजा का बेटा बल्कि एक बेवकूफ बन गया।

बच्चे चलते चलते जंगल से बाहर एक चौड़ी सड़क पर निकल आये और जहाँ उनका मन हुआ उधर ही चलते रहे।

वे या तो दूर गये या फिर पास ही गये पर जल्दी ही वे एक ऐसी जगह आ गये जहॉ से वह सड़क दो तरफ जाती थी। वहॉ एक खम्भा खड़ा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था —

जो इस खम्भे की दॉयी तरफ जायेगा उसे राज्य मिलेगा
और जो इसके बॉयी तरफ जायेगा उसे दुख मिलेगा
पर वह एक सुन्दर राजकुमारी से शादी करेगा

दोनों भाइयों ने यह पढ़ा और निश्चय किया कि वे दोनों अलग अलग सड़कों पर जायेंगे। बड़े वाले ने दॉयी तरफ जाने वाली सड़क ली और छोटे वाले ने बॉयी तरफ जाने वाली।

बड़ा भाई चलते चलते एक बड़े से शहर में आ पहुॅचा। वहॉ उसने एक जगह बहुत सारे आदमी इकट्ठा देखे। उसने देखा कि वे सब दुखी थे। उसने एक गरीब बुढ़िया के घर में रहने की शरण मॉगी। उसने कहा — "मॅ जी क्या आप मुझे इस अॅधेरी रात में सिर छिपाने की जगह देंगी?"

बुढ़िया बोली — "बेटा मैं तुमको अपने पास रख कर बहुत खुश होती पर अफसोस मैं तुम्हें अपने घर में नहीं ठहरा सकती क्योंकि मेरे घर में बिल्कुल जगह नहीं है।"

बड़ा भाई बोला — "मेहरबानी कर के मॉ जी मुझे ठहरा लीजिये। मैं बहुत ही सीधा सादा नौजवान हूॅ। जहॉ आप रहेंगी मैं भी वहीं रह जाऊॅगा। बस एक कोना रात भर के लिये।"

सो बुढ़िया ने उसको अपने घर में बुला लिया।

अब दोनों बात करने लगे। नौजवान ने पूछा — "क्या मॉ जी। आज शहर में इतनी भीड़ क्यों है। कमरे इतने मॅहगे क्यों हैं। और सारे लोग इतनी दुखी और उदास क्यों घूम रहे हैं।"

बुढ़िया बोली — "क्या बताऊॅ बेटा। हमारा राजा अभी अभी मर गया है और कुलीन लोगों ने मुनादी पीटने वालों को भेज दिया है कि वे शहर में हर जगह जा कर बूढ़े बच्चों आदि सबको यह बतायें कि उनको एक एक मोमबत्ती ले कर एक जगह इकट्ठा होना है। उन मोमबत्तियों को ले कर वे सब लोग चर्च जायेंगे और जिसकी मोमबत्ती वहॉ पहुॅच कर अपने आप जल जायेगी वही इस देश का राजा बनेगा।"

अगली सुबह लड़का उठा, नहाया धोया, भगवान की प्रार्थना की, रोटी नमक और मुलायम बिस्तर के लिये भगवान को धन्यवाद दिया जो उसकी मेजबान ने उसको दिया था और चर्च चला गया।

जब वह वहॉ पहुॅचा तो वहॉ इतने सारे लोग थे कि अगर तुम तीन साल तक भी उनको गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते। जैसे ही उसने वहॉ से मोमबत्ती उठायी तो वह अपने आप जल उठी।

वे सब उसके ऊपर कूद पड़े और उसकी मोमबत्ती बुझाने की कोशिश करने लगे। उसके ऊपर पानी भी छिड़का पर उसकी मोमबत्ती की लौ की चमक तो और बढ़ती ही रही।

कोई उसको बुझा नहीं सका। सो उन सबने उसको अपना राजा स्वीकार कर लिया। उन्होंने उसको सुनहरे कपड़े पहनाये उसको महल ले गये और वहॉ ले जा कर उसको सिंहासन पर बिठा दिया।

इधर छोटे भाई ने जो बॉयी सड़क ले कर चला था सुना कि एक राज्य में एक बहुत सुन्दर लड़की थी पर वह बहुत नखरे वाली थी। उसने आसपास के सारे देशों में यह कहलवा रखा था कि वह उसी से शादी करेगी जो उसकी सेना को तीन साल तक खाना खिलायेगा और रखेगा। काम मुश्किल था पर सबको कोशिश तो करनी ही थी।

यह लड़का भी वहॉ गया। वह अपने रास्ते गया। चलते चलते वह एक चौड़ी सी सड़क पर आ गया। उसने अपने थैले में तब तक थूका जब तक वह थैला सोने से पूरा नहीं भर गया।

वह देर तक चला या फिर जल्दी ही पहुँच गया वह दूर तक चला या फिर पास तक ही चला। वह एक सुन्दर राजकुमारी के पास पहुँच गया। वहॉ जा कर उसने कहा कि वह उससे शादी करना चाहता है और उसके लिये उसकी शर्त पूरी करने के लिये आया है।

उसको सोना देने के लिये कहने की जरूरत ही नहीं पड़ी। बस वह तो जहॉ थूकता था वहीं सोना आ जाता था। तीन साल तक उसने राजकुमारी की सेना को खाना खिलाया और उनको कपड़े दिये।

अब इसके बाद वह दिन भी आ गया जब शादी की दावत होनी थी पर राजकुमारी अभी भी इस चक्कर में थी कि वह लड़के को और तंग करे। उसने सोचा तो उसने यह प्लान बनाया कि वह लड़के से यह पूछे कि भगवान ने उसे इतनी सारी दौलत कब दी।

सो उसने उसको अपने महल में बुलाया और उसका मेहमान की तरह से स्वागत किया। पर वहॉ जा कर नौजवान बीमार पड़ गया। यहॉ तक कि उसने मुर्गी का जिगर भी उगल दिया।

ज़ारेवना[66] ने उसे उठा कर निगल लिया। उस दिन के बाद से अब ज़ारेवना के मुॅह से सोना गिरने लगा। अब वह उस लड़के को अपना पति नहीं बनायेगी। उसने अपने सलाहकारों से पूछा उसने अपने सेनापतियों से पूछा कि वह अब इस बेवकूफ का क्या करे।

उसने उनसे कहा कि "यह लड़का तो यही बेवकूफी का विचार ले कर यहॉ आया था कि वह मुझसे शादी करेगा।"

कुलीन लोगों ने कहा कि उसको फॉसी पर चढ़वा देना चाहिये। सेनापतियों ने कहा कि उसको गोली मार देनी चाहिये। पर राजकुमारी के पास एक और अच्छा विचार था – इसको नरक भेज देना चाहिये।

लड़के को किसी तरह से इस बात का पता चल गया तो वह वहॉ से बच कर भाग निकला और एक बार फिर अपनी सड़क पर

[66] Tzarevna means Princess. Tsar, or Tzar is the title of King in Russia and Tzarevna means the daughter of Tzar.

आगे चल दिया। अब उसके दिमाग में बस एक ही बात थी कि उसको अपने आपको अक्लमन्द बनना है और उस ज़ारेवना से उसके इस बेरहम मजाक का बदला लेना है।

वह चलता गया चलता गया और सपनों के जंगल में आ गया। वहॉ उसने देखा कि तीन आदमी आपस में घूँसों से लड़ रहे हैं।

उसने उनसे पूछा — "तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो।"

वे बोले — "हमें सड़क पर तीन चीज़ें पड़ी मिलीं हैं पर हम उन्हें आपस में बॉट नहीं सकते। हर आदमी उनको अपने लिये लेना चाहता है।"

लड़के ने पूछा — "तुम लोगों को क्या मिला है और तुम लोग किन चीज़ों पर लड़ रहे हो?"

वे बोले — "देखो यह एक बैरल है। तुमको इसे बस पैर से मारना है कि इसके मुँह में से एक सिपाही बाहर आयेगा। यह एक कालीन है जो उड़ सकता है। जहॉ तुम चाहोगे यह तुम्हें वहीं ले जायेगा।

और यह एक कोड़ा है। इससे किसी लड़की को मारो और उससे कहो "तुम अब तक लड़की थीं अब तुम घोड़ी बन जाओ।" तो वह तुरन्त ही एक घोड़ी बन जायेगी।"

लड़का बोला — "ये सब तो सचमुच ही बहुत कीमती चीज़ें हैं और बॉटी नहीं जा सकतीं। पर इसका एक रास्ता है। मैं अपना यह तीर इस दिशा में फेंकता हूँ। तुम सब उस तीर के पीछे भागो।

जो उसके पास तक सबसे पहले पहुँचेगा उसको बैरल मिलेगा। दूसरे को उड़ने वाला कालीन मिलेगा। और तीसरे को कोड़ा मिलेगा।"

तीनों इस बात पर राजी हो गये और बोले — "ठीक ही छोड़ो अपना तीर।"

यह सुन कर उसने अपना तीर बहुत दूर के लिये छोड़ दिया। तीनों उस तीर के पीछे भाग लिये। उन्होंने ऊपर देखा भी नहीं। उस नौजवान ने कोड़ा और बैरल उठाया और उड़ने वाले कालीन पर बैठ कर वहाँ से उड़ कर चल दिया।

वह बादलों से नीचे उड़ रहा था और अब वह उड़ कर वहीं जा सकता था जहाँ वह जाना चाहता। वह वहाँ से सुन्दर राजकुमारी के देश पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने बैरल को पीटना शुरू कर दिया तो उसमें से तो बहुत बड़ी सेना निकल आयी। उसकी ताकतवर मेजबान तो यह देख कर परेशान हो गयी।

नौजवान ने फिर एक घोड़ा माँगा। घोड़ा मिलने पर वह उस पर चढ़ा और अपनी सेना के पास जा कर उसको हुक्म दिया। ढोल बजने लगे बिगुल बजने लगे और उसकी सेना धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी।

ज़ारेवना ने जब यह सब अपने कमरों में से देखा तो वह तो बहुत डर गयी। उसने तुरन्त ही अपने कुलीन लोगों और सेनापतियों को उसके साथ शान्ति का सन्देश ले कर भेजा।

नौजवान ने उसके इन दूतों को बन्दी बना लिया और उनको बहुत ही बेरहमी और जंगलीपने से सजा दे कर फिर उनको ज़ारेवना के पास वापस भेज दिया।

ज़ारेवना को फिर शान्ति के लिये खुद ही उसके पास आना पड़ा। ज़ारेवना के पास कोई सहायता नहीं थी सो उसको खुद ही गाड़ी से उतर कर उसके पास आना पड़ा। जब उसने उसको देखा तो वह तो उसको देखते ही बेहोश हो गयी।

लड़के ने अपना कोड़ा निकाला उसकी पीठ पर मार कर कहा "अब तक तो तुम लड़की थीं अब तुम घोड़ी बन जाओ।" बस इतना कहना था कि ज़ारेवना एक घोड़ी में बदल गयी।

उसने उसके ऊपर साज सजाया और उस पर बैठ गया। उस पर चढ़ कर वह अपने बड़े भाई के राज्य गया। वह अपनी पूरी गति से भागा जा रहा था।

छोटे भाई ने अपनी एड़ी में पहनने वाली दोनों कीलें तो उस घोड़ी की पीठ पर रख दीं और उनकी बजाय वह अब एक तीन कीलों वाली चीज़ इस्तेमाल कर रहा था। उसकी सेना उसके पीछे पीछे आ रही थी।

वह ज़्यादा दूर चला या फिर कम दूर चला पर फिर अपने भाई के राज्य की हद तक आ गया। वहाँ आ कर वह रुक गया। उसने अपनी सेना को तो बैरल में भेज दिया और वह खुद वहाँ की राजधानी में चल दिया।

वह सीधा शाही महल में गया। राजा ने पहले सवार को देखा फिर घोड़ी की तरफ देखा तो उसको आश्चर्य हुआ कि यह इतना बड़ा हीरो कौन है जो यहाँ ऐसे चला आ हा है। मैंने इतनी सुन्दर घोड़ी पहले अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखी।

सो उसने उस घोड़ी को खरीदने के लिये अपने सेनापतियों को उसके पास भेजा तो नौजवान ने कहा — "यह तुम्हारा राजा भी कितना जलता है। अगर यह ऐसा है तो तुम्हारे राज्य में किसी का सुन्दर पत्नी को ले कर आना तो बिल्कुल ही नामुमकिन है। अगर तुम लोग घोड़ी के इतने लालची हो तो मेरी पत्नी को तो तुम बिल्कुल ही ले लोगे।"

फिर वह महल की तरफ चला गया और जा कर बोला — "हलो भाई।"

बड़े भाई ने अपने सिंहासन से उठा कर अपने छोटे भाई को गले लगा लिया और बोला "अरे मुझे नहीं पता था कि यह तुम हो।"

वह आगे बोला — "और यह तुम्हारे पास बैरल कैसा है?"

"यह पीने के लिये है नहीं तो मैं अपने रास्ते पर आगे कैसे बढ़ता।"

"और यह कालीन?"

"तुम इस पर बैठो तो तुम्हें पता चल जायेगा।"

सो दोनों उस उड़ने वाले कालीन पर बैठ गये। छोटे भाई ने उसका एक कोना पकड़ कर हिलाया तो वे दोनों ऊपर उड़ने लगे – जंगलों से ऊपर और बादलों से नीचे।

उड़ कर वे अपने देश आ गये। वहॉ उन्होंने अपने पिता के पास एक कमरा लिया और उसमें ठहर गये। उन्होंने अपने माता पिता को यह नहीं बताया कि वे कौन थे।

वहॉ रहते हुए उन्होंने सोचा कि वे सारे ईसाइयों को खाना खिलायेंगे। बहुत सारे अनगिनत लोग वहॉ आ कर इकट्ठे हो गये। तीन दिन तक उन लोगों ने वहॉ बिना पैसे दिये खूब पेट भर कर खाया पिया।

बाद में हर एक ने कहना शुरू किया कि क्या किसी के पास कोई आश्चर्यजनक कहानी है सुनाने के लिये तो वह अपनी कहानी शुरू करे। पर किसी ने कोई कहानी नहीं सुनायी।

तो छोटे भाई ने कहा — "मैं तुम लोगों को एक कहानी सुनाता हूँ पर मेरी कहानी के बीच में नहीं बोलना। जो कोई तीन बार बीच में बोलेगा उसको बहुत कड़ी सजा दी जायेगी।" इस बात पर सब राजी हो गये।

फिर उसने बताना शुरू किया कि किस तरह से दो बूढ़े और बुढ़िया रहते थे। कैसे उनके पास एक मुर्गी थी जो जवाहरात दिया करती थी। कैसे बुढ़िया ने अपने नौकर से अपना रिश्ता जोड़ा।

मॉ बीच में बोली "यह झूठ है।"

पर छोटे बेटे ने अपनी कहानी सुनानी जारी रखी। फिर कैसे उन दोनों ने मुर्गी की गर्दन मरोड़ दी। मॉ फिर बीच में बोली — "यह सच नहीं है।"

आखिर यह कहानी वहॉ तक पहुँची जहॉ बुढ़िया ने अपने बच्चों को मारने के लिये उनको जंगल भेज दिया। बुढ़िया फिर रुक नहीं सकी और फिर कुछ बीच में बोली।

उसने कहा — "यह सच नहीं है। ऐसा कैसे हो सकता है। क्या कोई मॉ अपने बच्चों को इस तरीके से मरवा सकती है।"

छोटा बेटा बोला — "यह तो बिल्कुल साफ है। हमारी तरफ देखो मॉ हम आपके बच्चे हैं।"

अब सारी कहानी समझ में आ गयी थी। उनके पिता ने उनकी मॉ को काट डालने का हुक्म दे दिया। उसने अपने उस नौकर को घोड़ों के पूँछ से बॅधवा दिया और घोड़े खोल दिये। घोड़े खुलते ही चारों तरफ को भाग लिये और इस भागने में उसकी सारी हड्डियॉ तितर बितर हो गयीं।

बूढ़ा बोला — "इस कुत्ते को कुत्ते की ही मौत मरने दो।"

इसके बाद उसने अपना सारा पैसा गरीबों में बॉट दिया और अपने बड़े बेटे के राज्य में चला गया।

छोटे बेटे ने अपनी घोड़ी को अपने हाथ के पिछवाड़े से उसकी पीठ पर मारा और बोला — "तू अब तक घोड़ी थी अब तू लड़की बन जा।" यह कहते ही उसकी घोड़ी ज़ारेवना में बदल गयी।

उन्होंने आपस में दोस्ती कर ली और फिर शादी कर ली। दोनों की शादी बहुत शानदार ढंग से हुई।

मैं भी उस शादी में था। मैंने बहुत सारी शराब पी। उससे मेरी सारी दाढ़ी तो भीग गयी पर मेरे मुँह में एक बूँद भी नहीं गयी।

15 चूमने पर राजकुमारी की शादी[67]

हम लोग आज भी कहते हैं कि हम होशियार हैं पर हमारे बड़े लोग कहते हैं "जिस उम्र में आज तुम हो उतनी उम्र में हमारे अन्दर तुमसे ज़्यादा समझ थी।"

पर यह कहानी बताती है कि हालॉकि हमारे पुरखों ने अपना पाठ नहीं पढ़ा था और हमारे पुरखे तब तक पैदा भी नहीं हुए थे कि एक बार की बात है कि एक राज्य में एक बूढ़ा रहा करता था जिसने अपने तीन बेटों को लिखना और पढ़ना सिखाया।

एक दिन वह उनसे बोला — "मेरे प्यारे बच्चों मैं तो अब कभी मर जाऊँगा। तुम लोग मेरी कब्र पर आ कर प्रार्थना जरूर करना।"

उसके तीनों बेटों ने जवाब दिया — "ठीक है बाबा।"

उसके दो बड़े लड़के सचमुच ही बहुत अच्छे बच्चे थे और बड़े हो कर भी वे बहुत अच्छे ही रहे – खूब मजबूत। सिवाय वान्युष्का[68] के। वान्युष्का थोड़ा सा छोटा रह गया था जैसे कोई भूखी बतख होती है – चौरस छाती वाला।

बूढ़ा मर गया था।

---

[67] The Princess To Be Kissed At a Charge – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales . Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[68] Vanyushka – name of the third and the youngest brother

करीब करीब उसी समय ज़ार ने एक घोषणा जारी की कि उसकी बेटी ऐलीना ज़ारेवना[69] ने अपने लिये एक मन्दिर बनाने का सोचा है जिसमें बारह खम्भे होंगे और जिसमें बारह पुष्पांजलियॉ[70] होंगी। वह इस मन्दिर में एक सिंहासन पर बैठेगी और अपने दुलहे का इन्तजार करेगी।

जो कोई बहादुर शानदार नौजवान अपने उड़ते हुए घोड़े पर बैठ कर वहॉ आयेगा और एक ही कूद में उसके होठों को चूम लेगा वह उसी से शादी करेगी।

यह सुन कर सारे नौजवानों में हलचल मच गयी। वे सब नहाने धोने चल दिये। बालों में कंघी की। और सोचने लगे कि कौन खुशकिस्मत राजकुमारी का पति बनेगा।

वान्युष्का अपने भाइयों से बोला — "भाइयों अब हमारे पिता तो रहे नहीं तो हममें से उनकी कब्र पर प्रार्थना करने कौन जायेगा?"

भाई बोले "जो जाना चाहे वह जा सकता है।"

सो सबसे छोटा बेटा वान्यूष्का वहॉ से चला गया। पर दोनों बड़े भाइयों ने अपने बालों को घुँघराला बनाया अपने बालों को रंगा और अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर अपने साथियों के साथ तैयार हो गये।

---

[69] Elena Tzarevna – Elena was the name of the princess and Tzarevna means the daughter of Tzar means the Princess. Tzar was the title of King before 1917.

[70] Translated for the word "Wreath" – flowers, grass, leaves and fruits arrange in the shape of a ring.

अगले दिन दूसरी रात आयी तो वान्या बोला — "भाइयो पिछली रात मैंने यहाँ बैठ कर प्रार्थना की थी। अबकी बार तुम्हारी बारी है। कौन जायेगा वहाँ प्रार्थना करने।"

वे पिछली बार की तरह से बोले — "कोई जाये पर तुम हमें परेशान न करो।"

कह कर उन्होंने अपने अपने टोपों को थोड़ा सा टेढ़ा किया हिलाया डुलाया और अपने घोड़ों को भगा कर ले चले। एक बार फिर वान्या को अपने पिता की कब्र पर प्रार्थना करनी पड़ी। ऐसा ही तीसरी रात को भी हुआ।

अगले दिन राज्य की सुन्दरी को खुश करने के लिये वे वहाँ से चल दिये। एक भाई ने पूछा कि "हमारे सबसे छोटे भाई का क्या होगा।"

तो दूसरा बोला — "उसकी बात छोड़ो। वह तो हमारे लिये और बदनामी लायेगा। हमको लोगों के हँसने का मसाला बनायेगा। इसलिये हमको अपने आप ही जाना चाहिये।"

पर वान्या की वहाँ जाने की बहुत इच्छा थी। वह सुन्दर ऐलीना को करीब से देखना चाहता था। भाइयों की बात सुन कर वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा। वह अपने पिता की कब्र पर गया और रो रो कर उसको अपना हाल बताया।

उसके पिता ने अपने अन्तिम घर में बैठे हुए अपने बेटे की बात सुनी और उसके पास आया। उसने अपने माथे से मिट्टी हटायी और

बोला — "बेटे वान्युष्का दुखी मत हो। मैं तुम्हारे दुख में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

उसके बाद बूढ़ा उठ कर खड़ा हो गया सीटी बजायी और एक नौजवान की सी आवाज में आवाज लगायी तो धरती कॉपी और कहीं से एक घोड़ा वहॉ आ कर प्रगट हो गया। उसकी नाक और कानों से आग की लपटें निकल रही थीं। उसकी सॉसों से धुँआ निकल रहा था।

वह आ कर उस बूढ़े के सामने खड़ा हो गया जैसे वह जमीन से चिपका हुआ हो और बूढ़े से पूछा — "आपको क्या चाहिये?"

वान्या उसके एक कान से उसके ऊपर चढ़ गया और दूसरे से नीचे उतर गया तो वह तो एक बहुत ही सुन्दर नौजवान में बदल गया। उसकी सुन्दरता को न तो कोई बता सकता था और न लिख सकता था।

वह घोड़े पर बैठा और वहॉ से चील की तरह से उड़ गया। वह सीधा ऐलीना के महल की तरफ चल दिया। उसने बहुत कोशिश की पर वह वहॉ उसके दो हिस्सों तक भी नहीं पहुँच सका। उसने फिर कोशिश की तो अबकी बार एक पुष्पांजलि रह गयी।

उसने फिर एक बार मेहनत की तो वह ऐलीना के होठों तक पहुँच गया। उसने उसके होठ चूमे और फिर वहॉ से भाग लिया। फिर वह अपने पिता की कब्र पर गया और अपने घोड़े को पास की जमीन में खुला छोड़ दिया।

उसने फिर धरती को सिर झुकाया और अपने पिता से सलाह मॉगी। बूढ़े ने उसको सलाह दी। वहॉ से वान्या अपने घर ऐसे चला गया जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसके भाइयों ने उसे बताया कि वे कहॉ गये थे। वहॉ उन्होंने क्या किया और क्या देखा। वान्या ने भी उनकी सब बातें इतनी ध्यान से सुनी जैसे पहले कभी देखी सुनी न हों।

अगले दिन ऐलीना की शादी होने वाली थी। वहॉ बहुत सारे बोयर आये हुए थे। बहुत सारे लौर्ड[71] आये हुए थे।

बड़े भाई भी अपने घर से चले और सबसे छोटा भाई भी छिप कर और चुपचाप वहॉ चला जैसे उसने ज़ारेवना को पहले कभी चूमा ही नहीं था। वह वहॉ जा कर दूर एक कोने में खड़ा हो गया।

ऐलीना ज़ारेवना अपने दुलहे को ढूँढ रही थी। वह अपने दुलहे को दुनियॉ भर को दिखाना चाह रही थी। अपना आधा राज्य देना चाह रही थी पर वहॉ तो उसका दुलहा कहीं नजर ही नहीं आ रहा था। सब लोग उसे बोयरों के बीच में जनरलों के बीच में ढूँढ रहे थे पर उनको तो वह वहॉ कहीं मिला ही नहीं।

पर वान्या ने देखा और हॅसा और वहीं उसका इन्तजार किया जब तक कि ऐलीना खुद वहॉ नहीं आ गयी। क्योंकि उसने कहा कि "मैंने उसको एक नाइट की तरह जीता है पर अब उसको मुझे मेरे काफ्तान में प्यार करना पड़ेगा।"

[71] Boyar, Lord Earl etc are the higher status people in European Administration.

सो वह उठ कर खड़ी हो गयी और उसने खुली हुई खिड़कियों में से बाहर झॉका तब उसको अपना दुलहा दिखायी दे गया। वह उसको अपने पास ले आयी और फिर शादी की तैयारियॉ बड़े ज़ोर शोर से होने लगीं।

कितना सुन्दर लग रहा था वह। कितना समझदार कितना बहादुर कितना शानदार। जब वह अपनी टोपी उतार कर अपने उड़ने वाले घोड़े पर बैठता था तो बिल्कुल राजा लगता था।

तुम उसको देखते तो देखते ही रह जाते। तुम तो सोच ही नहीं सकते थे कि वह पुराना वाला गरीब वान्युष्का होगा।

16 सीधा इवानुष्का[72]

हमारे देश से कहीं बहुत दूर एक राज्य में एक शहर था जहाँ ज़ार मटर अपनी ज़ारिट्ज़ा गाजर[73] के साथ रहता था। उसके दरबार में बहुत सारे अक्लमन्द दरबारी लोग थे और अमीर राजकुमार थे। उसके पास बहुत सारे ताकतवर योद्धा थे सौ हजार से एक कम सादे सिपाही थे।

उसके शहर में भी बहुत सारी तरीके के लोग रहते थे – ईमानदार लोग, लम्बी दाढ़ी वाले लोग, हर चीज़ के बारे में जानने की इच्छा रखने वाले गधे, जर्मन सौदागर, सुन्दर लड़कियाँ, रूसी शराबी आदि आदि।

उस शहर में बाहर की तरफ किसान खेत जोतते थे उनमें गेहूँ उगाते थे आटा पीसते थे फिर उसको बाजार में बेचते थे और उससे जो पैसा आता था उससे शराब पीते थे।

ऐसे ही बाहर की जगह में एक बहुत गरीब बूढ़ा किसान अपने तीन बेटों के साथ रहता था – थोमस, पाखोम और इवान।[74] यह

---

[72] Ivanoushka the Simpleton – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap04.htm#page_77
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales. Hindi trans

[73] Tsar or Tzar Pea lived with his Tsaritza Carrot.

[74] Thomas, Pakhom and Ivan were the names of the farmer's three sons

बूढ़ा किसान न केवल बहुत चतुर था बल्कि बहुत अक्लमन्द भी था। एक बार उसने शैतान से भी बातें की थीं।

बूढ़े ने उसको एक गिलास शराब का दिया और उससे बातें कीं। उसने उससे इस शराब के बदले में उसके बहुत सारे भेद जान लिये। इस घटना के बाद तो उस किसान ने इतने आश्चर्यजनक काम करने शुरू कर दिये कि उसके पड़ोसी तो उसको टोना करने वाला[75], जादूगर या फिर शैतान का रिश्तेदार ही कहने लगे।

यह बिल्कुल सच है कि उस किसान ने बहुत आश्चर्यजनक काम किये। अगर तुमको प्यार चाहिये तो उस बूढ़े के पास जाओ उसको सिर झुकाओ वह तुमको कोई अजीब सी जड़ दे देगा और तुम्हारा प्यार तुम्हारे पास आ जायेगा।

अगर किसी के घर में चोरी हो गयी है तो उस बूढ़े के पास जाओ उसको सिर झुकाओ अपनी कहानी बताओ तो वह पानी के ऊपर किसी आत्मा को बुलायेगा एक औफीसर को पकड़ कर चोर के पास ले जायेगा और बस तुम्हारी खोयी हुई चीज़ तुम्हें मिल जायेगी। बस तुम्हें यह देखना है कि कहीं औफीसर ही उसको न चुरा ले।

वह बूढ़ा सचमुच अक्लमन्द भी बहुत था पर उसके बच्चे उसके बराबर के अक्लमन्द नहीं थे। हॉ उनमें से उसके दो बेटे करीब

[75] Translated for the word “Sorcerer”

करीब उसके जैसे अक्लमन्द थे। वे शादीशुदा थे उनके बच्चे थे। पर उसका सबसे छोटा बेटा इवान अभी कुँआरा था।

कोई उसकी ज़्यादा परवाह भी नहीं करता था क्योंकि वह कुछ बेवकूफ सा ज़्यादा था। वह एक दो तीन भी ठीक से नहीं गिन पाता था। बस वह खाता था पीता था सोता था और इधर उधर लेटा रहता था। ऐसे आदमी की कोई परवाह क्यों करता।

हर एक जानता था कि कुछ लोगों की ज़िन्दगी उससे ज़्यादा अच्छी थी। पर इवान अच्छे दिल वाला था और शान्त स्वभाव का था।

उससे एक बैल्ट[76] माँगो तो वह अपना काफ्तान देने को भी तैयार रहता था। उससे उसके दस्ताने लो तो वह तुमको अपनी टोपी भी दे देगा। और इसी लिये सब उसको प्यार करते थे।

उसको लोग सीधा इवानुष्का कह कर बुलाते थे। हालाँकि इस नाम का मतलब था बेवकूफ फिर भी इसका मतलब था कि वह बहुत ही दयालु था।

हमारा यह बूढ़ा अपने बच्चों के साथ रहता रहा जब तक वह ज़िन्दा रहा। जब उसके मरने का समय आया तो उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे प्यारे बच्चों अब मेरे मरने का समय आ गया है। तुम लोगों को मेरी इच्छा पूरी करने चाहिये।

[76] Belt is which is tied on the waist to hold something at the place.

जब मैं मर जाऊँ तो तुम तीनों को मेरी कब्र पर आना चाहिये और वहाँ एक रात गुजारनी चाहिये। थोमस तुम पहली रात को आओगे पाखोम तुम दूसरी रात को आओगे और यह सीधा इवानुष्का तीसरी रात को आयेगा।"

बड़े दोनों बेटों ने होशियार बेटों की तरह से अपने पिता से वायदा किया कि वे उसकी कब्र पर जरूर आयेंगे पर सीधे इवान ने ऐसा कोई वायदा नहीं किया उसने बस अपना सिर खुजलाया।

उसके बाद वह बूढ़ा मर गया और उसको दफ़ना दिया गया। उसके मरने की खुशी में लोगों ने बहुत सारे पैनकेक[77] खाये और बहुत सारी व्हिस्की पी।

अब अगर तुम्हें याद हो तो पहली रात को थोमस को अपने पिता की कब्र पर जाना था पर वह बहुत आलसी था या फिर डरपोक भी हो सकता है सो उसने इवान से कहा — "मुझे कल सुबह सवेरे जल्दी उठना है और उठ कर गेहूँ से भूसा निकालना है सो तुम मेरी जगह आज पिता जी की कब्र पर चले जाओ।"

सीधे इवानुष्का ने कहा "ठीक है।" उसने काली राई[78] की डबल रोटी का एक टुकड़ा लिया और पिता की कब्र पर चल

[77] Pancake is flat kind of bread which is made of white flour is eaten with honey or syrup or butter – see its picture above.

[78] Rye is a kind of grain use to make bread and other things. There are two kinds of rye – black and white.

दिया। वहाँ जा कर वह लेट गया और जल्दी ही खर्राटे मारने लगा।

चर्च की घड़ी ने रात के बारह बजे का घंटा बजाया तो हवा ज़ोर से बह निकली, पेड़ पर उल्लू बोलने लगे, बूढ़े की कब्र खुल गयी बूढ़े ने पूछा "यहाँ कौन है?"

इवान बोला "मैं इवानुष्का पिता जी।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे। मैं तुझको तेरे इस कहना मानने पर जरूर इनाम दूँगा।"

लो इतने में मुर्गे बोलने लगे और वह बूढ़ा कब्र में गिर पड़ा। सीधा इवान घर आ गया और अँगीठी के पास उसकी गर्मी लेने चला गया।

उसके भाइयों ने पूछा "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मैं तो वहाँ सारी रात सोता रहा। मुझे तो अब बहुत भूख लगी है।"

अब दूसरी रात आयी। इस रात अपने पिता की कब्र पर जाने की पाखोम की बारी थी। वह भी कुछ देर सोचता रहा फिर इवान से बोला — "कल तो मेरे लिये बहुत काम है इवान। मेहरबानी कर के तुम आज मेरी जगह पिता जी की कब्र पर चले जाओ।"

इवानुष्का बोला "ठीक है।" उस दिन उसने मछली की एक पाई ली और अपने पिता की कब्र पर चला गया। वहाँ जा कर वह

पिछले दिन की तरह से लेट गया और लेटते ही सो गया और जल्दी ही खर्राटे भी मारने लगा।

आधी रात हुई तो पहली रात की तरह से फिर हवा ज़ोर से बह निकली, पेड़ पर उल्लू बोलने लगे, बूढ़े की कब्र खुल गयी। बूढ़े ने बाहर निकल कर पूछा "यहाँ कौन है?"

इवान बोला "मैं इवानुष्का पिता जी।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे। मैं तेरे इस कहना मानने को कभी नहीं भूलूँगा।"

लो इतने में मुर्गे बोलने लगे और वह बूढ़ा कब्र में गिर पड़ा। सीधा इवान घर आ गया और अँगीठी के पास उसकी गर्मी लेने चला गया।

उसके भाइयों ने पूछा "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मैं तो वहाँ सारी रात सोता रहा। मुझे तो अब बहुत भूख लगी है।"

अब तीसरी रात आयी तो भाइयों ने इवानुष्का से कहा — "आज तो तुम्हारी ही बारी है पिता जी की कब्र पर जाने की सो तुम वहाँ जाओ। पिताजी की इच्छा तो पूरी करनी ही चाहिये न।"

इवान बोला "ठीक है।" इस बार उसने कुछ बिस्किट लिये अपनी भेड़ की खाल ओढ़ी और कब्र पर आ पहुँचा। आधी रात को उसका पिता कब्र में से बाहर निकला और पूछा "यहाँ कौन है?"

"पिता जी मैं हूँ इवानुष्का।"

"ठीक है मेरे प्यारे बेटे, तुमको तुम्हारा इनाम मिलेगा।" कह कर बूढ़ा अपनी सबसे तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

और लो इवानुष्का ने एक भागता हुआ घोड़ा देखा। उसके खुरों के नीचे जमीन हिल रही थी। उसकी ऑखें तारों की तरह चमक रही थीं। उसके मुँह और कानों से धुँआ बादलों की तरह से निकल रहा था।

घोड़ा आ कर बूढ़े के पास खड़ा हो गया। उसने आदमी की आवाज में पूछा — "बता तेरी क्या इच्छा है।"

बूढ़ा उसके बॉये कान में घुस गया वहॉ वह नहाया धोया तैयार हुआ और एक बहादुर नौजवान के रूप में उसके दॉये कान में से कूद कर बाहर आ गया। इवान ने उस नौजवान को पहले कभी देखा नहीं था।

बाहर आ कर वह बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरे बेटे मैं यह घोड़ा तुम्हें देता हूँ और ओ मेरे वफादार घोड़े और दोस्त तू मेरे बेटे की भी वैसे ही सेवा करना जैसे तूने मेरी सेवा की है।"

जैसे ही बूढ़े ने यह कहा कि मुर्गा बोला और वह टोना करने वाला अपनी कब्र में गिर पड़ा। हमारा सीधा इवानुष्का घर चला

गया। घर जा कर वह लेट गया और कुछ ही देर में खर्राटे मारने लगा।

उसके भाइयों ने फिर पूछा — "आज क्या हुआ?"

सीधा इवानुष्का कुछ नहीं बोला बस उसने अपना हाथ हिला दिया। तीनों भाई अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी गुजारने लगे – दो अपनी होशियारी से और सबसे छोटा अपनी बेवकूफी से। वे लोग रोज अपने दिन एक ही तरह से गुजारते थे।

पर एक दिन और दूसरे दिनों से अलग दिन आया। उन्होंने सुना कि बड़े बड़े लोग बिगुल बजाने वाले और कई और संगीत के वाद्य बजाने वालों के साथ सारे देश में घूमने जा रहे थे।

वे लोग सबसे यह कहने जा रहे थे कि "ज़ार की इच्छा यह थी कि ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर के एक अकेली बेटी थी ज़ारेवना बक्त्रियाना[79] जो उनकी राजगद्दी की भी मालिक थी।

उनकी बेटी इतनी सुन्दर थी कि जब वह सूरज की तरफ देखती थी तो सूरज भी उसको देख कर शर्मा जाता था। वह उसकी ऑखों से छिप जाता था। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा को यह निश्चय करने में बहुत मुश्किल पड़ रही थी कि वे किससे अपनी बेटी की शादी करें।

वह आदमी एक ऐसा आदमी होना चाहिये जो किसी अच्छे खासे देश का राजा हो, लड़ाई के मैदान में बहादुर योद्धा हो, दरबार

[79] Tzarevna Baktriana – the daughter of Tzar – Tzar is the title of the King of Russia before 1917. Tzaritza is the wife of Tzar.

में अच्छा न्याय करने वाला हो, ज़ार को ठीक सलाह देने वाला हो और उसकी मौत के बाद उसके राज्य का काबिल वारिस हो।

इसके अलावा वे यह भी चाहते थे कि दुलहा नौजवान हो, बहादुर हो, सुन्दर हो और उनकी ज़ारेवना[80] को बहुत प्यार करे।

यह सब आसान हो सकता था पर परेशानी यह थी कि सुन्दर ज़ारेवना को किसी से प्यार नहीं था। कभी ज़ार उसको यह लड़का बताता तो कभी वह लड़का बताता पर वह हमेशा यही जवाब देती "मैं उससे प्यार नहीं करती।" ज़ारिट्ज़ा ने भी कई बार कोशिश की पर उसका वही जवाब "मुझे वह पसन्द नहीं है।"

एक दिन ऐसा आया जब ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर ने अपनी बेटी से शादी के मामले पर गम्भीरतापूर्वक बात की।

"हमारी प्यारी बच्ची, हमारी सुन्दर ज़ारेवना बक्त्रियाना, अब समय आ गया है जब तुमको अपना पति चुन लेना चाहिये। बहुत तरीके के लोगों ने, राजाओं से ले कर ज़ार राजकुमारों तक ने, हमारे घर की देहरियॉ पार कर कर के घिस दी हैं शराब के कमरे के कमरे खाली कर दिये हैं और तुमको अभी तक कोई तुम्हारी पसन्द का लड़का ही नहीं मिला है।"

ज़ारेवना बोली — "मेरे पिता राजा ज़ार और मेरी प्यारी मॉ ज़ारिट्ज़ा, मुझे आप दोनों के लिये बहुत दुख है पर मेरी इच्छा

[80] Tzarevna means the daughter of Tzar

आपका कहा मानने की है। इसलिये किस्मत को निश्चय करने दो कि मेरा दुलहा कौन बनता है।

मैं चाहती हूँ कि आप मेरे लिये एक बड़ा कमरा बनवायें, एक बहुत ऊँचा कमरा, बत्तीस घेरे का जिसके ऊपर एक खिड़की हो। मैं उस खिड़की में बैठूँगी और आप सब तरह के लोगों को वहाँ बुलायें – ज़ार, राजा, ज़ारोविच, कोरोलेविच, बहादुर योद्धा, सुन्दर नौजवान।

जो कोई भी उन बत्तीस घेरों में से हो कर मेरी खिड़की के पास आयेगा और मुझसे अपनी अँगूठी बदलेगा वही मेरा पति और आपका बेटा और वारिस होगा।"

ज़ार और ज़ारिट्ज़ा दोनों ने अपनी बेटी की बातें ध्यान से सुनी और बोले — "बेटी तुम्हारी इच्छा का पालन किया जायेगा।"

जल्दी ही वैसा ही एक बड़ा कमरा बनवा दिया गया एक बहुत ऊँचा कमरा जिसमें वैनेशियन मखमल[81] के परदे लगे हुए थे जिनमें मोती के फुँदने[82] लगे हुए थे। जिनमें सुनहरे डिजाइन बने हुए थे। खिड़की के दोनों तरफ बत्तीस गोले बने हुए थे।

नौकर लोग सब लोगों के पास जा रहे थे। कबूतर ज़ार मटर और ज़ारिट्ज़ा गाजर के शहर में उनका स्वागत करने लिये उड़ रहे

[81] Venetian velvet

[82] Translated for the word "Tassels". See its picture above

थे। सभी जगह यह घोषित कर दिया गया था कि जो कोई भी उन बत्तीस गोलों में से हो कर ज़ारेवना बक्त्रियाना के पास पहुँच कर उससे अपनी अँगूठी बदलेगा वही उसका पति बनेगा।

इस मुकाबले में उसके ओहदे को ध्यान में नहीं रखा जायेगा। वह ज़ार भी हो सकता है राजा भी और योद्धा भी ज़ारेविच भी कोरोलेविच भी सादा नागरिक भी हो सकता है और किसी भी देश का हो सकता है।

सो वह दिन भी आ पहुँचा। भीड़ मैदान में आ कर जमा होने लगी जहाँ तारे की तरह से चमकता हुआ नया बना कमरा था। ऊँची बनी खिड़की पर जवाहरातों से सजी हुई मखमल और मोती के कपड़े पहने हुए ज़ारेवना बैठी हुई थी।

नीचे लोग समुद्र की तरह से उमड़े पड़ रहे थे। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा अपनी राजगद्दी पर बैठे थे। उनके आसपास बोयर[83], योद्धा और बहुत से लोग थे। सुन्दर बहादुर और गर्व से अपना सीना ताने उम्मीदवार सीटी बजाते हुए अपने अपने घोड़ों पर सवार इधर से उधर घूम रहे थे। पर जब भी वह उस ऊँची खिड़की की तरफ देखते थे तो उनका दिल डूबने लगता था।

उनमें से कई लोग पहले कोशिश भी कर चुके थे। वे बहुत दूर से आते अपने आपको सँभालते, कूदते पर फिर पत्थर की तरह से गिर जाते और देखने वाले हँस पड़ते।

[83] Boyar is a member of the old aristocracy in Russia, next in rank to a prince.

सीधे इवानुष्का के दोनों भाई भी इस मैदान में आने के लिये तैयार हुए तो इवान ने कहा कि अपने साथ मुझे भी ले चलो।

भाइयों ने हॅस कर कहा — "तू तो बेवकूफ है। तू घर पर रह और मुर्गों की देखभाल कर।"

वह बोला "ठीक है।" और मुर्गों के बाड़े की तरफ चला गया और वहॉ जा कर लेट गया।

पर जैसे ही उसके भाई वहॉ से गये वह सीधा इवानुष्का मैदान में बाहर आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहॉ दौड़ता हुआ आ गया। उसकी ऑखों में अॅगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुॅआ बादलों की तरह निकल रहा था।

घोड़े ने आदमी की आवाज में उससे पूछा — "आपकी क्या इच्छा है?"

सीधा इवानुष्का उस घोड़े के बॉये कान में घुस गया अपने आपको बदला और उसके दॉये कान से फिर से प्रगट हो गया। वह इतना सुन्दर हो गया कि किसी भी किताब में उसकी सुन्दरता का वर्णन नहीं मिलेगा क्योंकि कभी किसी ने इतना सुन्दर नौजवान देखा ही नहीं था तो उसका वर्णन कौन करता।

वह तुरन्त घोड़े पर कूद कर चढ़ गया और उसको रेशम के कोड़े से हॉका। घोड़े का धीरज छूट गया वह जमीन से ऊपर कूदा ऊपर और ऊपर अँधेरे जंगलों के ऊपर, तैरते हुए बादलों के नीचे। वह बड़ी बड़ी नदियों के ऊपर से गया छोटी छोटी नदियों को और पहाड़ों को कूद कर पार किया।

घोड़े पर सवार इवानुष्का ज़ारेवना बक्त्रियाना के उस बड़े कमरे वाले मैदान में आ पहुँचा। वह चील की तरह ऊपर उड़ा तीस गोलों में से तो गुजरा पर आखीर के दो गोलों से नहीं गुजर सका और भँवर की तरह से वापस चला गया।

यह देख कर नीचे से लोग चिल्लाये "पकड़ कर रखो पकड़ कर रखो।" ज़ार भी अपनी राजगद्दी से कूद कर खड़ा हो गया। ज़ारिट्ज़ा भी चिल्ला पड़ी। हर आदमी आश्चर्य से चिल्ला रहा था।

इवानुष्का के भाई कोशिश करके घर चले गये थे और बस अब एक ही चीज़ के बारे में बात कर रहे थे कि उन्होंने कितना शानदार आदमी देखा था। तीस गोलों में से हो कर जाने की कितनी बढ़िया शुरूआत थी।

इवानुष्का जो बहुत पहले ही वहॉ आ चुका था बोला — "भाइयो वह शानदार आदमी मैं था।"

उसके भाई बोले — "चुप रहो और हमारा बेवकूफ मत बनाओ।"

अगले दिन दोनों भाई फिर से उसी मैदान में जाने लगे तो इवानुष्का ने फिर कहा "मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

"हम तुझे ले चलें, अरे तेरी तो जगह यही है। घर में शान्ति से बैठ और पुतले की बजाय तू मटर के खेत से चिड़ियों को भगा।"

इवान बोला — "ठीक है।" वह मटर के खेत चला गया और खेत से चिड़ियों को भगाने लगा।

पर जैसे ही उसके भाई घर से गये वह तुरन्त ही बाहर मैदान में आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहाँ दौड़ता हुआ आ गया। उसकी आँखों में अँगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुँआ बादलों की तरह निकल रहा था।

आते ही वह आदमी की आवाज में बोला — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

इवानुष्का उसके बाँये कान में से घुसा अपने आपको बदला और उसके दाँये कान में से प्रगट हो गया। जब वह उसके दाँये कान में से बाहर निकला तो वह तो बस क्या ही लग रहा था। परियों की दुनियाँ में भी कोई ऐसा आदमी नहीं होगा रोजमर्रा की ज़िन्दगी में तो क्या हो सकता था।

इवानुष्का उसकी पीठ पर कूद कर बैठ गया और उसको अपने मजबूत कोड़े से मारा। वह कुलीन घोड़ा गुस्सा हो गया उसने एक कुदान मारी और वह जमीन से ऊपर कूदा, फिर ऊपर और ऊपर, अँधेरे जंगलों के ऊपर, तैरते हुए बादलों के नीचे।

वह एक बार कूद मारता तो एक मील आगे पहुँच जाता। उसने दूसरी कूद मारी तो नदी पीछे छोड़ दी और तीसरी कूद मारी तो वह ज़ारेवना बक्त्रियाना के उस बड़े कमरे वाले मैदान में आ पहुँचा।

फिर वह घोड़ा इवानुष्का को लिये हुए चील की तरह से ऊपर उड़ा, इकत्तीस गोलों में से हो कर गुजरा पर आखीर के गोले से नहीं गुजर सका और भँवर की तरह से वापस चला गया।

लोग फिर चिल्लाये "पकड़ कर रखो पकड़ कर रखो।" ज़ार एक बार फिर से कूद पड़ा। जारिट्ज़ा एक बार फिर चिल्ला पड़ी। बोयर और राजकुमारों के मुँह खुले के खुले रह गये।

सीधे इवानुष्का के भाई घर आ गये थे। वे उस आदमी की बहुत तारीफ कर रहे थे। वाकई वह एक आश्चर्यजनक आदमी था। उससे केवल एक गोला ही छूट गया।

इवानुष्का बोला — "वहाँ वह आदमी मैं था।"

वे गुस्से से बोले — "ओ बेवकूफ अपनी जगह शान्ति से रहो।"

तीसरे दिन इवानुष्का के भाई फिर वहीं ज़ार के यहॉ मजा लेने के लिये जा रहे थे तो इवानुष्का ने उनसे फिर कहा "मुझे भी साथ ले चलो।"

वे हॅसे और बोले — "बेवकूफ अभी तो सूअरों को खाना देना है। अच्छा है कि तुम जा कर उनको खाना दो।"

इवान बोला "ठीक है।" और यह कह कर वह सूअरों को खाना देने चला गया।

पर जैसे ही वे घर से चले गये वह तुरन्त ही बाहर मैदान में आया और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया — "ओ बे घोड़े उठो, हवा की तरह तेज़ भागने वाले घोड़े, मेरी जरूरत के समय मेरे सामने प्रगट हो जैसे घास तूफान में खड़ी होती है वैसे ही खड़े हो।"

उसी समय वह शानदार घोड़ा वहॉ दौड़ता हुआ आ गया। उसके आने से जमीन कॉपने लगी। उसकी ऑखों में ॲगारे चमक रहे थे। उसके नथुनों से धुॅआ बादलों की तरह निकल रहा था।

आते ही वह आदमी की आवाज में बोला — "तुम्हारी क्या इच्छा है?"

इवानुष्का उसके बॉये कान में घुसा अपने आपको बदला और उसके दॉये कान में से प्रगट हो गया। वह तो क्या ही सुन्दर आदमी बन गया था। कोई नौजवान लड़की तो इतना सुन्दर आदमी सोच भी नहीं सकती थी।

इवानुष्का ने घोड़े को एड़ लगायी उसकी लगाम सीधी खींची और लो वह तो हवा में ऊँचा उड़ चला। उसने तो हवा को भी पीछे छोड़ दिया। पंखों वाली चिड़ियों को भी पीछे छोड़ा दिया। अबकी बार तो हमारा सवार आसमान में बादलों की तरह जा रहा था।

उसकी वर्दी में चॉदी की जंजीरें लगी थीं वे सब बज रही थीं। उसके सुन्दर कपड़े हवा में उड़े जा रहे थे।

बह ज़ारेवना के ऊँचे कमरे के पास आ गया था। उसने अपने घोड़े को एक और चाबुक मारा तो घोड़े ने एक ऊँची कूद मारी और वह सारे गोले पार कर के खिड़की के पास पहुँच गया।

इवान ने ज़ारेवना को अपनी मजबूत वॉहों में ले कर उसके होठों का चूमा, अँगूठी बदली और तूफान की तरह नीचे आ गया। इस समय वह अपने रास्ते में आये हर एक को कुचलता चला आ रहा था।

और ज़ारेवना? उसने तो उसको बिल्कुल भी विरोध नहीं किया वल्कि उसके माथे पर हीरे का एक तारा और लगा दिया।

नीचे से लोग चिल्लाये "पकड़ लो इसको पकड़ लो इसको।" पर वह तो वहॉ से पहले ही जा चुका था। उसने तो अपना कोई निशान भी नहीं छोड़ा था।

ज़ार मटर की शाही शान जा चुकी थी। ज़ारिट्ज़ा गाजर तो इस समय पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्ला पड़ी। ज़ार के अक्लमन्द सलाहकार केवल अपने अपने अक्लमन्द सिर हिला कर ही

रह गये। वे सब चुप थे। किसी की आवाज भी नहीं निकल रही थी।

इवानुष्का के भाई इस सब मामले पर बात करते घर आ गये। "वास्तव में। यह तो केवल सोचने वाली बात है। यह आदमी तो कामयाब हो गया और अब हमारी ज़ारेवना को उसका दुलहा मिल गया। पर वह है कौन और है कहॉ।"

इवानुष्का मुस्कुराया फिर बोला — "और वह नौजवान मैं हूॅ और यहॉ हूॅ।"

भाइयों ने उसको फिर चुप करते हुए कहा — "चुप रहो। तुम हर समय मैं मैं करते रहते हो।"

पर इस बार मामला कुछ गम्भीर था। ज़ार और ज़ारिट्ज़ा ने हुक्म जारी कर दिया कि शहर के चारों तरफ हथियारबन्द सिपाही तैनात कर दिये जायें जिनका काम यह हो कि जो कोई अन्दर आना चाहे तो उन सबको अन्दर तो आने दिया जाये पर किसी को बाहर न जाने दिया जाये।

इसके अलावा हर एक को शाही दरबार में पेश होना था और अपना माथा दिखाना था ताकि हीरे के तारे वाला आदमी ढूॅढा जा सके।

सो अगले दिन सुबह से ही महल के पास लोगों की भीड़ इकट्ठी होनी शुरू हो गयी। हर एक का माथा देखा जा रहा था पर किसी माथे पर कोई तारा नहीं था।

शाम के खाने का समय हो रहा था और महल में लोग ओक की मेजों पर सफेद मेजपोश बिछाना ही भूल गये थे।

इवानुष्का के भाई भी अपना माथा दिखाने आने लगे तो अपने सीधे इवानुष्का ने उनसे फिर कहा "मुझे भी साथ ले चलो।"

तो उन्होंने उससे हॅसी में कहा "तेरे लिये तो बस यही जगह ठीक है। पर ज़रा बता तो कि तेरे सिर को क्या हुआ है। जो तूने अपने सिर को कपड़ों से ढका हुआ है। क्या तुझे किसी ने मारा है?"

"ओह नहीं नहीं मुझे किसी ने नहीं मारा। मेरा माथा अपने आप ही दरवाजे से टकरा गया था। दरवाजे को तो कुछ नहीं हुआ पर मेरे माथे पर एक गूमड़ा[84] पड़ गया।"

उसकी इस बात पर उसके भाई हॅस पड़े और महल की तरफ चले गये। उनके जाने के तुरन्त बाद ही इवानुष्का सीधा ज़ारेवना की खिड़की के पास गया। वहॉ ज़ारेवना खिड़की पर झुकी हुई बैठी हुई थी और अपने होने वाले दुलहे का इन्तजार कर रही थी।

जब इवानुष्का वहॉ पहुॅचा तो सारे चौकीदार उसको देखते ही चिल्लाये — "यह रहा हमारा आदमी। अपना माथा दिखाओ। क्या तुम्हारे माथे पर तारा है?" कह कर वे खुद ही हॅस पड़े।

इवानुष्का ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि उनको अपना माथा दिखाने से मना कर दिया।

[84] Goomadaa means a bump caused by some kind of hit.

यह देख कर चौकीदारों ने चिल्लाना शुरू किया तो शोर मचा। शोर मचा तो ज़ारेवना ने यह शोर सुना तो उस आदमी को अपने सामने लाने के लिये कहा।

अब तो कुछ किया नहीं जा सकता था सो उसको अपने सिर से कपड़ा हटाना ही पड़ा। लो उसके माथे के बीचोबीच तो हीरे का एक तारा चमक रहा था।

ज़ारेवना इवानुष्का को हाथ पकड़ कर ज़ार मटर के पास ले गयी और बोली — "पिता जी यह है वह जिसको मेरा पति बनना है और आपका दामाद और वारिस।"

अब तो उसको मना करने का समय ही नहीं था उसके लिये बहुत देर हो चुकी थी। सो ज़ार ने शादी की तैयारियॉ करने का हुक्म दे दिया। और हमारे सीधे इवानुष्का की शादी ज़ारेवना बक्त्रियाना से हो गयी।

ज़ार, ज़ारिट्ज़ा, नयी दुलहिन और दुलहा और इनके मेहमान सबने तीन दिन तक दावत खायी। उन दावतों में बहुत बढ़िया बढ़िया खाने बने थे। पीने को भी बहुत था। बहुत तरीके के आनन्द के साधन भी थे।

इवानुष्का के भाइयों को गवर्नर बना दिया गया और उन दोनों को एक एक गॉव और एक एक घर दे दिया गया।

कहानी कहने में समय नहीं लगता पर ज़िन्दगी जीने में समय भी लगता है और धीरज की भी जरूरत होती है।

जैसा कि हम जानते हैं सीधे इवानुष्का के भाई तो होशियार आदमी थे। जैसे ही वे अमीर आदमी बने हर आदमी यह बात अच्छी तरह समझ गया। इसके अलावा वे खुद भी यह बात जानते थे सो उनमें घमंड आना शुरू हो गया और वे अपनी शान बघारने लगे।

नम्र लोग उनके घर की तरफ देख भी नहीं सकते थे। बोयर लोग भी उनको देख कर अपनी फ़र की टोपी उतार देते थे।

एक बार कई बोयर ज़ार मटर के पास गये और कहा — "ज़ार आपके दामाद के भाई लोग इधर उधर अपनी बहुत शेखी बघार रहे हैं कि वे एक ऐसी जगह को जानते हैं जहॉ एक सेब का पेड़ उगता है जिसकी चॉदी की पत्तियॉ हैं और सोने के सेब हैं। वे यह पेड़ आपके लिये लाना चाहते हैं।"

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही उन दोनों भाइयों को बुलवाया और उनसे तुरन्त ही वह आश्चर्यजनक सेब का पेड़ लाने के लिये कहा जिसकी चॉदी की पत्तियॉ हैं और जिसके ऊपर सोने के सेब लगते हैं।

भाइयों ने बहुत बहाने बनाये पर ज़ार के भी अपने तरीके थे। उसने उनको शाही अस्तबल से बहुत अच्छे घोड़े दिये और उनको वह पेड़ लाने पर मजबूर किया सो वे अपने काम पर चल दिये।

हमारा दोस्त सीधे इवानुष्का को कहीं से कोई लंगड़ा सा घोड़ा मिल गया। वह उसकी पीठ पर उसकी पूँछ की तरफ मुँह कर के बैठ गया और वह भी चल दिया।

उस घोड़े पर सवार हो कर वह एक बड़े से खुले हुए मैदान में आ गया। वहाँ आ कर उसने उस घोड़े की पूँछ पकड़ कर उस घोड़े को घुमा कर फेंकते हुए कहा — "ओ कौओं और मैनाओं आओ देखो तुम्हारे लिये खाना तैयार है।"

इसके बाद उसने अपने घोड़े को बुलाया और हमेशा की तरह से उसके बाँये कान में से अन्दर जा कर उसके दाँये कान में से बाहर निकल आया। और फिर वे चल दिये।

कहाँ? पूर्व की ओर जहाँ यह चाँदी की पत्तियों वाला और सोने के सेब वाला सेब का पेड़ उगता था। यह पेड़ चाँदी के पानी के पास सोने की रेत में उगता था।

जब इवानुष्का उस जगह पहुँचा जहाँ पेड़ लगा था तो उसने वह पेड़ उखाड़ लिया और उसे घर ले चला। उसका रास्ता लम्बा था और वह थक गया था सो घर आने से पहले उसने अपना एक तम्बू लगाया और वहाँ आराम करने के लिये लेट गया।

उसी रास्ते से उसके भाई आ रहे थे। अब वे दोनों घमंडी नहीं रहे थे बल्कि कुछ दुखी हो गये थे क्योंकि वह यह नहीं जानते थे कि वे अब ज़ार को क्या जवाब देंगे।

तभी उन्होंने चॉदी की चोटी वाला एक तम्बू देखा और उसके पास देखा एक सेब का पेड़। वे उसके और पास आये तो वे दोनों चिल्लाये "अरे यह तो अपना सीधा है।" तब उन्होंने इवानुष्का को जगाया और उससे सेब का पेड़ खरीदना चाहा। वे अमीर थे सो उन्होंने उसको तीन गाड़ी भर कर चॉदी देनी चाही।"

पर इवानुष्का बोला — "भाइयो यह आश्चर्यजनक सेब का पेड़ बेचने के लिये नहीं है पर अगर तुम इसको पाना चाहते हो तो पा सकते हो। इसकी कीमत ज़्यादा नहीं है केवल तुम दोनों के दॉये पैर का एक एक अॅगूठा।"

भाइयों ने इस पर विचार किया और आखीर में उसकी मॉगी हुई कीमत देने पर राजी हो गये।

इवानुष्का ने उन दोनों के दॉये पैर के अॅगूठे काट लिये और उनको सेब का पेड़ दे दिया। खुश खुश दोनों भाई उस पेड़ को ज़ार के पास ले कर आये और उन्होंने वहॉ अपनी खूब शान बघारी।

वे बोले — "ओ ताकतवर ज़ार, हम इस पेड़ को लेने के लिये बहुत दूर गये। रास्ते में बहुत मुश्किलें सहीं पर किसी तरह से हम आपकी इच्छा पूरी करने में कामयाब हो गये।"

ज़ार मटर उस सेब के पेड़ को देख कर बहुत खुश हुआ और एक दावत का इन्तजाम किया। संगीत बजाने का हुक्म दिया और ढोल बजाने के लिये भी कहा। इवानुष्का के दोनों भाइयों को इनाम में उसने एक एक शहर दिया और उनकी बहुत तारीफ की।

यह देख कर तो बोयर और योद्धा लोग बहुत गुस्सा हो गये। उन्होंने ज़ार से कहा — "इस सेब के पेड़ में जिसमें चॉदी की पत्तियॉ हैं और सोने के सेब हैं ऐसी कौन सी आश्चर्यजनक बात है।

आपके दामाद के भाई तो शान बघार रहे हैं कि वे आपके लिये एक मादा सूअर ले कर आयेंगे जिसके सुनहरे बाल होंगे और चॉदी के दॉत होंगे। और केवल सूअर ही नहीं बल्कि उसके बारह बच्चे भी ले कर आयेंगे।"

यह सुन कर ज़ार ने उन दोनों भाइयों को बुलाया और उनको वह सुनहरे बाल वाला और चॉदी के दॉत वाला सूअर लाने के लिये कहा।

भाइयों ने बहाने बनाये पर उनके बहाने नहीं सुने गये सो उनको जाना ही पड़ा। एक बार फिर वे एक मुश्किल काम के लिये निकल पड़े – एक ऐसी सूअर को लाने के लिये जिसके सोने के बाल थे चॉदी के दॉत थे और बारह बच्चे थे।

उस समय सीधे इवानुष्का ने कहीं जाने का अपना मन बनाया हुआ था। सो उसने एक गाय पर बैठने की सीट डाली और कूद कर उसकी पूँछ की तरफ मुँह कर के बैठ गया। तुरन्त ही वह शहर छोड़ कर चल दिया।

वह एक खुले हुए मैदान में आया गाय को उसके सींगों से पकड़ कर दूर उछाल दिया और चिल्लाया — "आओ आओ ओ भूरे भेड़ियो और लाल लोमड़ियो तुम्हारा खाना तैयार है।"

फिर उसने अपने वफादार घोड़े को आने का हुक्म दिया। जब वह आ गया तो वह पहले की तरह से उसके बॉये कान में से घुसा और दॉये कान में से बाहर निकल आया।

वह उस घोड़े पर बैठ कर अपने काम पर चल दिया। इस बार वे दक्षिण की तरफ चले। एक दो तीन और वे घने जंगलों में थे। इन्हीं जंगलों में वह मादा सूअर इधर उधर घूम रही थी – सोने के बालों वाली और चॉदी के दॉतों वाली। उस समय वह वहॉ जड़ें खा रही थी। उसके पीछे थे उसके बारह बच्चे।

सीधे इवानुष्का ने उसके ऊपर रेशम की रस्सी का एक फन्दा बना कर फेंका और बारह सूअर के बच्चों को पकड़ कर एक टोकरी में रखा और घर चला गया।

पर इससे पहले कि वह ज़ार मटर के शहर पहुँच पाता उसने बीच रास्ते में सोने की चोटी वाला एक तम्बू गाड़ा और उसमें आराम करने के लिये लेट गया।

उसके तीनों भाई भी उदास चेहरे से उसी रास्ते से आ रहे थे। वे नहीं जानते थे कि ज़ार से क्या कहना था। रास्ते में उन्होंने एक तम्बू देखा और उसके पास देखी वह मादा सूअर जिसको वे ढूँढ रहे थे – सोने के बालों और चॉदी के दॉतों वाली।

वह एक रेशम की रस्सी से बॅधी हुई थी और वहीं पास में एक टोकरी में बारह बच्चे रखे हुए थे।

भाइयों ने तम्बू में झॉका तो अरे यह तो फिर से इवानुष्का था। उन्होंने उसे जगाया और उस सूअर और उसके बारह बच्चों का सौदा किया। उनके लिये वे तीन गाड़ी भर कर कीमती जवाहरात देने को तैयार थे।

इवानुष्का ने फिर वही कहा — "भाइयो मेरे ये सूअर बिकाऊ नहीं हैं। पर अगर तुम इसको इतना ही चाहते हो तो तुम दोनों के दॉये हाथ की एक एक उॅगली इसके लिये काफी है।"

इस बार दोनों ने कुछ ज़्यादा देर तक विचार किया फिर उन्होंने यह सोचा "लोग तो बिना दिमाग के भी खुशी खुशी रहते हैं तो हम बिना उॅगलियों के क्यों नहीं रह सकते।" सो उन्होंने इवानुष्का को अपनी उॅगलियॉ काटने की इजाज़त दे दी।

उॅगलियॉ दे कर उन्होंने उससे सूअर और उसके बच्चे लिये और ज़ार के शहर चल दिये। वहॉ पहुॅच कर उन्होंने ज़ार को सूअर और उसके बच्चे दिये और अपनी खूब डींग हॉकी।

उन्होंने कहा — "ओ राजा ज़ार, हम हर जगह गये। नीले समुद्र के उस पार गये, घने जंगलों के उस पार गये गहरी रेत से हो कर गुजरे। हमने भूख सही प्यास सही पर आखीर में आपकी इच्छा पूरी की।"

ज़ार तो इतने अच्छे वफादार नौकर पा कर बहुत खुश हुआ। उसने फिर से एक दावत दी। सीधे इवानुष्का के भाइयों को इनाम दिया। उसने अबकी बार उनको बोयर का ओहदा दे दिया।

यह देख कर दूसरे बोयर और दरबार के लोगों ने ज़ार से कहा — "इस सूअर में क्या आश्चर्यजनक बात है। उसके सुनहरे बाल और चॉदी के दॉत अच्छे हैं पर सूअर तो हमेशा सूअर ही रहता है।

आपको दामाद के भाई तो इसकी भी शान बघार रहे हैं कि वे आग वाले ड्रैगन के अपने अस्तबल से एक घोड़ी चुरा कर ला देंगे जिसकी गर्दन के बाल सुनहरी हैं और खुर हीरे के हैं।"

यह सुन कर ज़ार ने तुरन्त ही सीधे इवानुष्का के दोनों भाइयों को बुलाया और आग वाले ड्रैगन के अपने अस्तबल से वह वाली घोड़ी चुराने के लिये कहा जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल हैं और जिसके हीरे के खुर हैं।

दोनों भाइयों ने कसम खायी कि उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि वे ऐसी घोड़ी ला कर देंगे पर ज़ार उनकी बात कहॉ सुनने वाला था।

उसने कहा — "चाहे कितना भी सोना ले जाओ चाहे कितने भी योद्धा ले जाओ पर वह सुन्दर घोड़ी ला कर मुझे दो जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल हैं और हीरे के खुर हैं।

अगर तुम उसे मुझे ला कर दे दोगे तो मैं तुम्हें बहुत बड़ा इनाम दूँगा। और अगर नहीं ला कर दोगे तो तुम लोगों को फिर से किसान बना दिया जायेगा।"

दोनों भाई चल दिये दो दुखी हीरो की तरह से। वे बहुत धीरे धीरे जा रहे थे पर कहॉ जा रहे थे यह वे नहीं जानते थे। इवानुष्का

इस बार एक डंडी पर बैठा और कूदता हुआ एक खुले मैदान में पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने फिर से अपने घोड़े को बुलाया। उसके बाँये कान में से घुसा और दाँये कान में से निकल आया। और फिर दोनों एक दूर देश के लिये चल पड़े – एक टापू के लिये एक बहुत बड़े टापू के लिये।

उस टापू पर आग वाला ड्रैगन अपने एक लोहे के अस्तबल में रखे कीमती खजाने की देखभाल कर रहा था – वह घोड़ी जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल थे और हीरे के खुर थे। जो सात भारी लोहे के दरवाजों के पीछे सात तालों में बन्द थी।

हमारा सीधा इवानुष्का चलता रहा चलता रहा, कब तक यह तो पता नहीं पर यकीनन वह तब तक चलता रहा जब तक वह उस टापू पर नहीं पहुँच गया।

वहाँ पर वह उस ड्रैगन से तीन दिन तक लड़ा और चौथे दिन उसे मारा। उसे मार कर उसने ताले खोलने शुरू किये। इसमें उसे तीन दिन और लग गये। ताले खोल कर उसने वह आश्चर्यजनक घोड़ी निकाली जिसकी गर्दन के सुनहरी बाल थे और हीरे के खुर थे और उसको ले कर घर लौट चला।

रास्ता बहुत लम्बा था इससे पहले कि वह अपने शहर पहुँच पाता उसने आराम करने के लिये रास्ते में अपना तम्बू गाड़ा जिसकी

चोटी पर उसने हीरा लगा दिया और आराम करने के लिये लेट गया।

उसके भाई भी उसी रास्ते से आये। वे बहुत उदास और दुखी थे क्योंकि वे सोच रहे थे कि वे शहर लौट कर ज़ार को क्या जवाब देंगे और उसके गुस्से को कैसे सहेंगे।

तभी उन्होंने किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनी जिससे सारी धरती कॉप उठी। उन्होंने देखा कि वह तो वह घोड़ी थी जिसकी गर्दन पर सुनहरी बाल थे। हालॉकि उसकी गर्दन के बाल उस समय शाम के धुँधलके में आग की तरह चमक रहे थे।

वे रुके उन्होंने इवानुष्का को जगाया और उससे उस आश्चर्यजनक घोड़ी का सौदा करना चाहा। इस बार वह दोनों उसको उस घोड़ी के बदले में एक एक बुशैल भर कर जवाहरात देना चाहते थे और साथ में कुछ और भी।

इवानुष्का बोला — "हालॉकि मेरी घोड़ी बिकाऊ नहीं है पर अगर तुम उसे लेना ही चाहते हो तो मैं तुम्हें उसे तुम्हारे दॉये कान के बदले में दे दूँगा।"

इस बार भाइयों ने कुछ सोचा विचारा नहीं कुछ बहस भी नहीं की और इवानुष्का को अपने अपने दॉये कान काटने दिये। कान कटाने के बाद घोड़ी की लगाम पकड़ी और सीधे ज़ार के पास पहुँचे।

उन्होंने ज़ार को गर्दन पर सुनहरी बाल वाली और हीरे के खुर वाली घोड़ी दी और फिर अपनी ऊँची ऊँची शान बघारी। हम समुद्र के उस पार गये हम पहाड़ों के उस पार गये फिर हम आग वाले ड्रैगन से लड़े जिसने हमारे कान और उँगलियाँ काट लीं।

पर हमको इस बात का बिल्कुल डर नहीं था हमको तो बस आपकी सेवा करनी थी। हमने अपना खून भी बहाया और पैसा भी खोया।

ज़ार मटर ने उनको सोने से ढक दिया। उसने उनको अपने बाद का सबसे ऊँचा पद दे दिया और एक ऐसी दावत का इन्तजाम किया कि शाही रसोइये मेहमानों को खाना खिलाने के लिये खाना बनाते बनाते थक गये। शाही शराबखाने भी करीब करीब खाली हो गये।

ज़ार मटर अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। एक भाई उसके दाँयी तरफ बैठा था दूसरा भाई उसकी बाँयी तरफ बैठा था। दावत चल रही थी। सब बहुत खुश थे। सब बहुत पी रहे थे। सब बहुत शोर मचा रहे थे।

इस सबके बीच में हमारा सीधा इवानुष्का वहाँ घुसा। वही सीधा इवानुष्का जो एक बार में ही बत्तीस गोले पार कर सुन्दर ज़ारेविच बक्त्रियाना की खिड़की के पास पहुँच गया था।

जब भाइयों ने उसे देखा तो उनमें से एक जो शराब पी रहा था उसे देख कर उसका गला शराब से रुँध गया। और दूसरा जो मॉस

खा रहा था उसका गला मॉस से रुँध गया। उन्होंने उसे देखा तो उनकी ऑखें खुली की खुली रह गयीं।

सीधे इवानुष्का ने अपने ससुर जी को सिर झुकाया और फिर अपनी कहानी कुछ इस तरह सुनायी —

उसने उनको उस आश्चर्यजनक सेब के पेड़ की कहानी बतायी जिसके पत्ते चॉदी के थे और सेब सोने के थे। उसने उनको उस मादा सूअर की कहानी सुनायी जिसके बाल सोने के थे और दॉत चॉदी के थे और उसके बारह बच्चे थे। उसने उनको उस घोड़ी की कहानी भी सुनायी जिसकी गर्दन के बाल सुनहरी थे और खुर हीरे के थे।

कहानियॉ खत्म करने के बाद उसने अपनी जेब से पैर के अँगूठे हाथ की उँगलियॉ और कान निकाले और ज़ार के सामने रख दिये और कहा कि "ये मैंने इन चीज़ों के बदले में लिये थे।"

यह सब देख कर तो ज़ार बहुत गुस्सा हो गया। उसने दोनों भाइयों को झाड़ू मार कर बाहर निकाल देने का हुक्म दिया। एक को उसने अपने सूअरों को खाना खिलाने के लिये रख लिया और दूसरे को अपनी टर्कियों की देखभाल के लिये रख लिया।

उसके वाद ज़ार ने सीधे इवानुष्का को अपने पास बिठाया और सबसे ऊँचे से भी ऊँचे का ओहदा दिया। इस खुशी में फिर एक दावत का इन्तजाम किया गया जो इतने दिनों तक चली जब तक लोग खाते खाते थक नहीं गये।

इवानुष्का अब ज़ार के राज्य को अक्लमन्दी से सँभालता था। अपने ससुर की मौत के बाद वह ज़ार बन गया। उसकी प्रजा उसको बहुत प्यार करती थी। उसके कई बच्चे हुए और उसकी ज़ारिट्ज़ा बक्त्रियाना हमेशा ही बहुत सुन्दर रही।

List of Stories of "Marriage on Condition"

1. Story of Seeta
2. Story of Draupadee
3. Story of Vidyutama
4. Louse Hide
5. The Louse-skin Coat
6. A Boat for Land and Water
7. A Fool and a Flying Ship
8. The King of Spain and an Engish Milord
9. A Prince and the Apple
10. The Love for the Three Pomegranates
11. The Princess and the Glass Mountain
12. The Princess of Riddles
13. The Clever Princess
14. The Miraculous Hen
15. The Princess to be Kissed at the Charge
16. Ivanoushka, The Simpleton

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, **2016**
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2017, 120** पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2017, 120** पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2019, 160** पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2019, 144** पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, **2020, 176** पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, **2020, 213** पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**